नई दिल्ली । शनिवार, 30 मई, 2026
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी, सिद्धार्थि संवत्सर विक्रम संवत 2083
वर्ष :12, अंक :144/ मूल्य 3.00 रुपए । पृष्ठ 12

दैनिक

विश्व केसरी

सिर्फ पत्रकारिता...

नई दिल्ली संस्करण

vishwakesari.com

@vishwakesariTV
@vishwakesari
vishwa_kesari_official

आर. एन. आई. संख्या डीईएलएच आईएन/2015/61415

@ खेल जेमिमा रोड्रिगेज का खुलासा, वर्ल्ड कप मैच की प्लेइंग...
@ विचार हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष...
@ व्यापार बड़ी गिरावट के साथ बंद हुआ शेयर बाजार...

सक्षिप्त खबर

निकायों में चली 'झाड़ू'

एजेंसी ■ दिल्ली

पंजाब में निकाय चुनाव के परिणामों में आम आदमी पार्टी ने शानदार प्रदर्शन किया। आठ निगमों पठानकोट, बरनाला, मोहाली, मोगा, बठिंडा, बटाला, अबोहर और कपूरथला में चुनाव नतीजे आ गए हैं। पंजाब निकाय चुनाव में आम आदमी पार्टी का झाड़ू चल गया है। आठ निगम, 75 नगर परिषद और 19 नगर पंचायतों के लिए हुए 1977 वार्डों के चुनाव में आप ने स्पष्ट बहुमत लिया है। वहीं भाजपा ने अबोहर निगम में ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। पंजाब में स्थानीय निकाय चुनाव में अक्सर सत्तारूढ़ दल पर ही मतदाताओं का भरोसा कायम रहने की प्रथा इस बार भी कायम रही है। सूबे के सयाने मतदाताओं ने डबल इंजन की सरकार बनाकर अपने वार्डों के विकास को रफ्तार देने का काम कर दिया है। इस बार पंजाब में निकाय चुनाव बैलेट पेपर से हुए थे। विरोधियों ने इस बार खेला होने का दावा किया।

वैभव का चला बल्ला, कई रिकॉर्ड ध्वस्त

सूर्यवंशी एक हजार रन वाले बल्लेबाज बने

एजेंसी ■ नई दिल्ली

गुजरात टाइटंस के खिलाफ आईपीएल 2026 के दूसरे क्वालिफायर मुकाबले में खेलते हुए वैभव सूर्यवंशी शतक से चूक गए हैं। वे 96 रन बनाकर आउट हो गए। इससे पहले सूर्यवंशी ने एलिमिनेटर मुकाबले में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेलते हुए 97 रनों की पारी खेली थी। हालांकि, शतक से चूकने के बावजूद सूर्यवंशी ने इतिहास रच दिया है।

सूर्यवंशी ने इस पारी के दौरान कई रिकॉर्ड्स अपने नाम किए हैं। उन्होंने आंद्र रसेल को रिकॉर्ड को भी ध्वस्त कर दिया है। सूर्यवंशी ने पहले राजस्थान की पारी को संभाला और उन्होंने 31 गेंदों पर अर्धशतक लगाया। ये उनके आईपीएल करियर का सबसे धीमा अर्धशतक है।

उनकी ये पारी इसलिए भी खास रही क्योंकि गुजरात के गेंदबाजों ने राजस्थान पर दबाव बनाया हुआ था लेकिन वैभव ने सूझबूझ के साथ बल्लेबाजी की। उन्होंने इस दौरान एक हजार रन पूरे कर लिए और इसी के साथ इतिहास रच दिया है।

वैभव को इस मुकाबले से पहले आईपीएल करियर में एक हजार रन पूरा करने के लिए 68 रनों की जरूरत थी। उन्होंने 68 रन बनाते ही इतिहास रच दिया। सूर्यवंशी सबसे गेंदें खेलकर एक हजार रने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने 402 गेंदों पर ये कारनामा किया है। इससे पहले ये रिकॉर्ड पूर्व दिग्गज ऑलराउंडर आंद्रे रसेल के नाम पर दर्ज किया था। रसेल ने 545 गेंदों पर ये कारनामा किया था।

गुजरात टाइटंस को फाइनल का टिकट, आरआर को 7 विकेट से हराया

एजेंसी ■ न्यू चंडीगढ़

गुजरात टाइटंस ने शुक्रवार को आईपीएल 2026 के दूसरे क्वालीफायर में राजस्थान रॉयल्स को 7 विकेट से हराया। इस जीत के साथ गुजरात ने फाइनल में जगह बना ली है, जहां उसका सामना रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु से होगा। राजस्थान रॉयल्स ने शुरुआती झटकों से उबरते हुए वैभव सूर्यवंशी के 96, जडेजा 45 और फरेरा के ताबड़तोड़ 38 रन की बदौलत 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 214 रन बनाए। इसके जवाब में गुजरात टाइटंस की टीम ने शुभमन गिल के शतक और साई सुदर्शन और उनके बीच पहले विकेट के लिए हुए शतकीय साझेदारी की बदौलत 10 गेंद शेष रहते मैच अपने नाम किया। गुजरात ने 19 ओवर में 3 विकेट खोकर 213 रन बनाए। गुजरात टाइटंस को 215 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए दमदार शुरुआत मिली। शुभमन गिल और साई सुदर्शन ने पावरप्ले में बिना विकेट गंवाए 69 रन बनाए। गिल और सुदर्शन के बीच पहले विकेट के लिए 167 रन की साझेदारी हुई। साई सुदर्शन 32 गेंद में 58 रन बनाकर आउट हुए। कप्तान शुभमन गिल ने 53 गेंद में 104 रन की दमदार पारी खेली।

निर्माणाधीन पुल का स्लैब गिरा, 6 की मौत

अफसर बोले- आंधी-बारिश के चलते हादसा, 3 मजदूरों को बचाया गया

एजेंसी ■ हमीरपुर

यूपी के हमीरपुर में बेतवा नदी पर बन रहे निर्माणाधीन पुल का स्लैब शुक्रवार देर रात 2 बजे गिर गया। हादसे में 6 मजदूरों की मौत हो गई। स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स ने मलबे में फंसे 3 मजदूरों को निकाला। साढ़े 7 घंटे तक रेस्क्यू ऑपरेशन चला।

उत्तर प्रदेश ब्रिज कॉरपोरेशन के एमडी धर्मवीर सिंह ने दैनिक भास्कर को बताया कि आंधी-बारिश के कारण स्लैब गिरा और नीचे सो रहे मजदूर दब गए। हादसे के बाद सहायक अभियंता गजेंद्र कुमार चौधरी को निलंबित कर दिया गया है। डीपीएम दिलीप कुमार पर विभागीय कार्रवाई शुरू की जा रही है। मौसम विभाग के मुताबिक, हमीरपुर में देर रात 70-80 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी चली थी। हादसा शहर से 25 किमी. दूर ललपुरा इलाके में हुआ। मृतकों में 4 बांदा और 2 हमीरपुर के रहने वाले थे। एसडीआरएफ के अधिकारियों ने बताया कि रात ढाई बजे से शुरू हुआ रेस्क्यू ऑपरेशन पूरा हो चुका है।

पुल पर दो शिफ्ट में काम होता है। जिस वक्त आंधी आई, पहली शिफ्ट के लोग पुल के नीचे थे, जबकि दूसरी शिफ्ट के 7 मजदूर पुल पर काम कर रहे थे। उनमें मैं भी था। आंधी से बचने के लिए हम लोग पुल पर लेट गए। इसी बीच हादसा हो गया। उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम पुल का निर्माण करवा रहा है। इसकी लागत 90 करोड़ रुपए है। 700 मीटर लंबा दो लेन का ब्रिज मोराकांड से कुरारा गांव के बीच बनाया जा रहा है। इसका निर्माण मार्च 2024 में शुरू हुआ था। दिसंबर 2026 तक इसे पूरा किया जाना है।

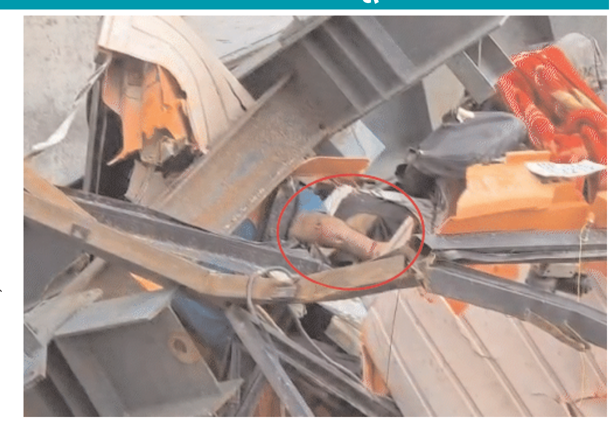

इलाज के साथ परिवार की 'ढीली गांठें' कसेंगे लालू रोहिणी और तेज प्रताप की होगी घर वापसी?

एजेंसी ■ पटना

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद सिंगापुर तो रुटीन चेकअप के लिए गए हैं, लेकिन वहां वे परिवार की ढीली गांठें भी कसेंगे। इसका दो लाभ होगा।

पहला, बिखराव के दौर से गुजर रहा परिवार एकजुट होगा और दूसरा, पार्टी के भीतर उठापटक की आशंकाएं अपेक्षाकृत कम होंगी। लालू का जतन नाराज बेटी रोहिणी आचार्य का मन-मिजाज तेजस्वी यादव के प्रति नरम करने का होगा, जिन्हें वे पार्टी और परिवार का उत्तराधिकारी बना चुके हैं।

रोहिणी के नरम होने पर तेजप्रताप यादव के लिए परिवार का दरवाजा खोलना और सहज हो जाएगा, जिसकी आवश्यकता-अपेक्षा अब लालू के साथ स्वयं तेजप्रताप भी समझने लगे हैं। अपनी किडनी-आंख और अन्य स्वास्थ्य संबंधी रुटीन चेकअप के लिए शुक्रवार अपराह्न लालू सिंगापुर रवाना हुए। उनके साथ राबड़ी देवी भी गई हैं।

रोहिणी के आवास पर रूकेंगे लालू

लालू वहां पुत्री रोहिणी आचार्य के आवास पर रहेंगे, जिसने उन्हें अपनी किडनी दी है। विधानसभा चुनाव में राजद की पराजय पर चर्चा के दौरान रोहिणी ने तेजस्वी के दो विश्वस्तों (संजय यादव और रमीज) पर आक्षेप किया था।

भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर हब बनाने की दिशा में बड़ा कदम

नीति आयोग के फ्रंटियर टेक हब ने जारी किया 10 साल का रोडमैप

एजेंसी ■ दिल्ली

नीति आयोग के फ्रंटियर टेक हब ने भारत के सेमीकंडक्टर उद्योग को मजबूत बनाने के लिए एक बड़ा रोडमैप जारी किया है। 'फ्यूचर ऑफ इंडिया'स सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री' नामक यह 10 वर्षीय रोडमैप भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर वैल्यू चेन में मजबूत स्थिति दिलाने की दिशा में तैयार किया गया है।

शुक्रवार को केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री निर्मला सीतारमण और रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस रोडमैप को लॉन्च किया। इस मौके पर नीति आयोग के उपाध्यक्ष अशोक कुमार लाहिड़ी भी मौजूद रहे। नीति आयोग ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि फ्रंटियर टेक्नोलॉजी में नेतृत्व कुछ वर्षों में हासिल नहीं होता, बल्कि इसके लिए लंबी अवधि की योजना, लगातार क्षमता निर्माण और भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए समय से पहले निवेश करना जरूरी होता है। यही दिशा यह रोडमैप तय करता है।

पोस्ट में आगे कहा गया है कि रोडमैप में भारत के लिए एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा गया है, जिसके तहत 2035 तक देश में 120 से 150 अरब डॉलर का सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम तैयार करने की योजना है। इसमें डिजाइन, एडवांस पैकेजिंग, कंपाउंड सेमीकंडक्टर्स और अन्य उभरते क्षेत्रों में अवसरों की पहचान की गई है। नीति आयोग का कहना है कि भारत अब केवल शुरुआती इकोसिस्टम तैयार करने तक सीमित नहीं है, बल्कि अब वह इस इकोसिस्टम को और गहरा और मजबूत बनाने के चरण में प्रवेश कर चुका है। नीति आयोग के उपाध्यक्ष अशोक कुमार लाहिड़ी ने कहा कि भारत ने सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम तैयार करने में उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से प्रगति की है। हालांकि, विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए तकनीकी आत्मनिर्भरता बेहद महत्वपूर्ण होगी।

उन्होंने कहा कि भारत के सामने सबसे बड़ा रणनीतिक जोखिम 'ब्लैक-बॉक्स टेक्नोलॉजी' पर बढ़ती आयात निर्भरता है। ऐसे में तकनीकी संप्रभुता की शुरुआत इंफ्रास्ट्रक्चर स्तर से होनी चाहिए, जहां सेमीकंडक्टर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रक्षा, मैन्युफैक्चरिंग, मोबिलिटी, ऊर्जा, संचार और डिजिटल सेवाओं जैसी महत्वपूर्ण इंडस्ट्री की रीढ़ बनते हैं।

लाहिड़ी ने आगे कहा कि भारत एक साथ पूरी सेमीकंडक्टर वैल्यू चेन में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता। इसलिए देश को कुछ रणनीतिक क्षेत्रों पर गहराई से काम करना होगा। उन्होंने कहा कि रोडमैप इस बात को स्वीकार करता है कि भारत को डिजाइन, एडवांस पैकेजिंग और कंपाउंड सेमीकंडक्टर जैसे क्षेत्रों में अपनी ताकत विकसित करनी होगी, जहां वह वैश्विक वैल्यू चेन में बड़ी छलांग लगा सकता है। लाहिड़ी ने कहा कि भारत सेमीकंडक्टर मिशन, शुरुआती निवेश और अमेरिका, जापान तथा यूरोप के साथ बढ़ती साझेदारी के जरिए मजबूत गति हासिल कर चुका है। अब अगले 10 साल इस गति को स्थायी राष्ट्रीय क्षमता में बदलने के लिए बेहद अहम होंगे।

जहरीली शराब से 13 की मौत, दर्ज हुई एफआईआर

एजेंसी ■ पुणे

पुणे में जहरीली शराब पीने से हुई मौतों के मामले में पुलिस ने हडपसर पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज कर ली है। इस एफआईआर में आकाश जाधव और एक अज्ञात व्यक्ति को आरोपी बनाया गया है। यह मामला अवैध शराब सेवन से जुड़ा है, जिसमें अब तक कम से कम 13 लोगों की मौत हो चुकी है और कई अन्य लोगों का इलाज जारी है।

यह घटना हडपसर इलाके के पांढरे माला क्षेत्र की है, जहां शराब पीने के बाद लोगों की तबीयत अचानक बिगड़ गई। स्थानीय लोगों के अनुसार, शराब पीने के कुछ ही मिनटों में कई लोगों को उल्टी और पेट दर्द की शिकायत होने लगी। इसके बाद सभी को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन कुछ लोगों की जान नहीं बचाई जा सकी।

स्थानीय निवासी सुनंदा साबले ने बताया कि मरने वाले कई लोग एक ही बस्ती के रहने वाले थे और उनमें से तीन लोग एक ही परिवार के थे।

उन्होंने बताया कि शराब पीने के लगभग 10 मिनट के भीतर ही लोगों की हालत बिगड़ने लगी थी। 28 मई को दो लोगों की मौत हुई थी, जबकि 29 मई को मृतकों की संख्या और बढ़ गई। एक अन्य स्थानीय महिला ने अवैध शराब पर कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि इस तरह की शराब के कारण परिवारों में परेशानी बढ़ रही है और कई लोगों की जान खतरे में पड़ रही है। उन्होंने इस पर पूरी तरह रोक लगाने की मांग की है। गृह विभाग के सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। उन्होंने पुणे और पिंपरी चिंचवाड़ पुलिस आयुक्तों को संयुक्त जांच करने और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने को कहा है।

140 करोड़ जनता बीएसएफ के प्रति आदर का भाव रखती है : शाह

विषम परिस्थितियों में भी बीएसएफ जवान हंसते हुए सीमाओं की सुरक्षा करते हैं

एजेंसी ■ दिल्ली

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को गुजरात के भुज में भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित जी-7 बॉर्डर आउट पोस्ट पर जवानों से संवाद और जी-7 एवं जी-13 बॉर्डर आउट पोस्ट का लोकार्पण किया। इस अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, उप-मुख्यमंत्री हर्ष संघवी, केंद्रीय गृह सचिव, आसूचना ब्यूरो (आईबी) के निदेशक, सीमा प्रबंधन सचिव और बीएसएफ के महानिदेशक सहित कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि बीएसएफ के जवान बहुत विषम जलवायु और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में रहते हैं, लेकिन यहां आकर जब उन्हें हंसते हुए चेहरों के साथ भारत की सीमाओं की सुरक्षा में डटे देखते हैं तो लगता है कि इनकी तुलना में हमारा काम बहुत सरल है। गृह मंत्री ने कहा कि जब बीएसएफ के जवान नहीं थकते हैं तो हमें थकने का बिल्कुल भी अधिकार नहीं है।

अमित शाह ने कहा कि बीएसएफ ने स्थापना से लेकर अब तक बीते 60 साल में देश की दो सबसे कठिन सीमाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी उठाई है। उन्होंने कहा कि इन सीमाओं पर तैनात बीएसएफ जवानों को माइनस 45 डिग्री से लेकर 45 डिग्री से अधिक तापमान तक हर परिस्थिति का सामना करना पड़ता है। कहीं कच्छ का दुर्गम रेगिस्तान है, सरक्रीक और हरामी नाले की दलदली जमीन है तो कहीं राजस्थान के रेत के टीलों के बीच तैनात रह कर बीएसएफ जवानों को काम करना पड़ता है।

उन्होंने कहा कि कश्मीर की बर्फीली चोटियों और सुंदरबन के जंगलों के बीच गंगासागर के किनारे से लेकर मेघालय और असम के पहाड़ी और वन क्षेत्रों तक बीएसएफ ने बीते छह दशकों में फर्स्ट लाइन ऑफ डिफेंस का दायित्व बहुत अच्छे तरीके से निभाया है। बल के 2000 जवानों ने देश के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है। इसी कारण भारत सरकार और देश की 140 करोड़ जनता हमेशा बीएसएफ के प्रति आदर का भाव रखती है और चैन की नींद भी सोती है।

अमित शाह ने कहा कि बनासकांठा में एक केंद्र बनाया गया है, ताकि आम जनता को बीएसएफ जवानों की कठिन ड्यूटी का पता चल सके। उन्होंने कहा कि बीते एक महीने में लगभग 2.5 लाख से ज्यादा लोगों ने इस केंद्र में जाकर बीएसएफ की ड्यूटी के बारे में जाना-समझा है। उन्होंने कहा कि शुरू में फीडबैक फॉर्म के जरिए एक सर्वे करवा कर लोगों से बीएसएफ की ड्यूटी के बारे में उनके विचार पूछे गए थे। उस समय कई महिलाओं ने लिखा था कि अगर उनके बेटे-बेटियां बड़े होकर बीएसएफ में जाएं तो उन्हें गर्व होगा। देश के लिए इतना कठिन जीवन जीना बहुत बड़ी बात है।

त्विषा शर्मा केस : गिरिबाला सिंह की परेशानी बढ़ी

एजेंसी ■ भोपाल

नोएडा से भोपाल में ब्याही गई मॉडल व अभिनेत्री त्विषा शर्मा की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के मामले में सीबीआई ने अपनी जांच का दायरा बढ़ा दिया है। पिछले 24 घंटे से अधिक समय से सीबीआई के सवालों का सामना कर रही पूर्व जज गिरिबाला सिंह और उनका वकील बेटा व त्विषा का पति समर्थ सिंह बेहद सतर्कता से जवाब दे रहे हैं। हालांकि, एजेंसी के एक चुभते सवाल ने आरोपितों की मुश्किलें बढ़ा दी है। जांच से जुड़े सूत्रों के मुताबिक सीबीआई का सबसे ज्यादा फोकस इस बात पर है कि जब त्विषा शर्मा को फंदे पर लटका देखा गया, तो उस फंदे को सबसे पहले किसने और कैसे खोला?' इस सवाल के सामने आते ही समर्थ सिंह खामोश रहा। समर्थ के चुप होते ही एजेंसी ने लगातार सवाल किए। दूसरी तरफ, पूर्व जज गिरिबाला सिंह अपने लंबे कानूनी तजुर्बे के कारण बेहद सोच-समझकर और नपे-तुले जवाब दे रही हैं।

सामूहिक विवाह में शादी करेंगे भाजपा विधायक

कांग्रेस बोली- गरीबों के हक पर डाका, दीपेश बोले- लड़की बीपीएल परिवार से

संवाददाता ■ रायपुर

छत्तीसगढ़ की मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना इस बार राजनीतिक बहस के केंद्र में आ गई है। वजह है बेमेतरा से भाजपा विधायक दीपेश साहू की शादी, जो 31 मई को होने वाले सामूहिक विवाह कार्यक्रम में होने जा रही है। इसी मुद्दे को लेकर कांग्रेस ने सरकार पर सवाल खड़े किए हैं।

पीसीसी चीफ दीपक बैज ने कहा कि गरीबों के हक पर डाका डाला जा रहा है। क्या विधायक इस योजना के लिए पात्र हैं। इसके जवाब में विधायक दीपेश साहू ने मीडिया से कहा कि इस योजना में देखा जाता है कि लड़की बीपीएल (बिलो पॉवर्टी लाइन) परिवार से है या नहीं। उन्होंने कहा कि जिनसे वे शादी करने जा रहे हैं, वे बीपीएल परिवार से हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत मिलने वाली राशि को वे मेधावी छात्राओं को देंगे। वहीं, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने एक्स पर लिखा कि दीपेश साहू का फैसला सादगी, सामाजिक समरसता और जनकल्याणकारी सोच का प्रेरक उदाहरण है। विवाह को आडंबर नहीं, बल्कि संस्कार और सामाजिक सहभागिता से जोड़ने का संदेश है। दरअसल, बेमेतरा में आयोजित मुख्यमंत्री कन्या विवाह कार्यक्रम में 24 जोड़े विवाह बंधन में बंधेंगे। इन्हीं में भाजपा विधायक दीपेश साहू भी शामिल होंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा और अरुण साव समेत कई मंत्री शामिल होने वाले हैं।

बैज बोले- गरीबों के हक पर डाका

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने विधायक की शादी को लेकर सवाल उठाए हैं।

उन्होंने कहा कि गरीबों के हक पर डाका डाला जा रहा है। यह योजना आम लोगों के लिए है, किसी विधायक के लिए नहीं। कांग्रेस इसे योजना के दायरे और पात्रता से जोड़कर सवाल उठा रही है। वहीं भाजपा इसे व्यक्तिगत निर्णय बता रही है।

मुख्यमंत्री साय ने दी शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि विधायक दीपेश साहू का मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत सामूहिक विवाह में शादी करने का निर्णय सादगी और सामाजिक समरसता का प्रेरक उदाहरण है।

बिहार में आकाशीय बिजली का कहर, 4 लोगों की मौत, बारिश-आंधी से जनजीवन प्रभावित

पटना। बिहार में शुक्रवार को मौसम ने अचानक करवट ली। राज्य के कई जिलों में तेज बारिश, आंधी और गरज-चमक के साथ हुई बारिश से लोगों को भीषण गर्मी और उमस से राहत मिली, लेकिन आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं में चार लोगों की जान चली गई।

गया जिले के डुमरिया प्रखंड के भदवर थाना क्षेत्र स्थित किशुनचक गांव में आकाशीय बिजली गिरने से किसान दिनेश यादव की मौत हो गई। ग्रामीणों के अनुसार, दिनेश यादव रोज की तरह शुक्रवार सुबह भैंस चराने के लिए गांव से करीब एक किलोमीटर दूर हरिताल क्षेत्र में गए थे। इसी दौरान मौसम अचानक खराब हो गया और तेज गरज-चमक के बीच उन पर बिजली गिर गई। मौके पर ही उनकी मौत हो गई।

घटना की सूचना मिलते ही ग्रामीण और परिजन मौके पर पहुंचे। शव को देखकर उनकी पत्नी बेसुध हो गई। मृतक अपने पीछे पत्नी, दो बेटे और दो बेटियों को छोड़ गए हैं। उनकी एक बेटी की हाल ही में शादी हुई थी।

भदवर थाना प्रभारी सचिन कुमार ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेज दिया गया है। आपदा राहत योजना के तहत मृतक के परिजनों को सरकारी सहायता प्रदान की जाएगी।

वहीं, गया जिले के ही बाराचट्टी प्रखंड के गुलरवेद गांव में भी आकाशीय बिजली गिरने से 17 वर्षीय मनीषा कुमारी की मौत हो गई, जबकि उनकी मां गौरी देवी गंभीर रूप से झुलस गईं। बताया गया कि बारिश शुरू होने पर मां-बेटी घर से बाहर निकलकर एक महुआ के पेड़ के नीचे शरण लेने गई थीं। इसी दौरान पेड़ पर बिजली गिर गई। मनीषा की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उनकी मां का इलाज चल रहा है।

इसके अलावा सारण जिले में आकाशीय बिजली गिरने से चंद्रमा चौधरी की मौत हो गई। वहीं पटना जिले में भी बिजली गिरने की एक घटना में एक व्यक्ति की जान चली गई। उधर, सीतामढ़ी समेत कई जिलों में शुक्रवार दोपहर बाद मौसम अचानक बदल गया। काले बादलों के बीच तेज बारिश और आंधी चली, जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली। हालांकि तेज हवाओं के कारण कई स्थानों पर पेड़ और बिजली के खंभे क्षतिग्रस्त हो गए। टिन शेड उड़ने और बिजली आपूर्ति बाधित होने की भी खबरें हैं। मौसम विभाग के अनुसार, आने वाले दिनों में भी राज्य के कई हिस्सों में तेज हवाओं के साथ हल्की से मध्यम बारिश की संभावना बनी हुई है।

अजय कोचर नौसेना के नए वाइस चीफ

ऑपरेशन सिंदूर में समुद्री मोर्चे पर थी अहम भूमिका

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना में एक महत्वपूर्ण नेतृत्व परिवर्तन हुआ है। इसके अंतर्गत वाइस एडमिरल अजय कोचर ने शुक्रवार को नौसेना के 48वें वाइस चीफ ऑफ द नेवल स्टाफ (वीसीएनएस) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान उच्च-स्तरीय नौसैनिक अभियानों में उनकी भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी गई। उनका नौसैनिक करियर 37 वर्षों से अधिक लंबा रहा है।

वाइस एडमिरल अजय कोचर ने अपने शानदार करियर में कई युद्धपोतों, रणनीतिक परियोजनाओं और महत्वपूर्ण कमानों का सफल नेतृत्व किया। वह भारतीय नौसैनिक पोत 'नाशक', 'विभूति' व 'किरपाण' की कमान संभाल चुके हैं। इसके अलावा वह नौसेना के फ्रिगेट 'त्रिकंड' के पहले कमीशनिंग कमांडिंग ऑफिसर भी थे। उन्होंने नौसेना के सबसे महत्वपूर्ण युद्धपोतों में शामिल विमानवाहक पोत 'आईएनएस विक्रमादित्य' की कमान भी संभाली। उनके नेतृत्व में इस युद्धपोत के एयर विंग का सफल एकीकरण और परिचालन क्षमता का विस्तार किया गया, जिसे भारतीय नौसेना की बड़ी उपलब्धियों में गिना जाता है।

उन्होंने अपनी नई जिम्मेदारी संभालने से पहले नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर शहीदों को नमन किया। यहां पुष्पचक्र अर्पित कर उन्होंने राष्ट्र की रक्षा में सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। भारतीय नौसेना में वाइस एडमिरल अजय कोचर की नियुक्ति को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। खासतौर पर जब हिंद महासागर क्षेत्र में सामरिक चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं। उनके व्यापक अनुभव, परिचालन नेतृत्व और रणनीतिक दृष्टिकोण से भारतीय नौसेना की युद्धक क्षमता तथा समुद्री सुरक्षा ढांचे को और मजबूती मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

बता दें कि वाइस एडमिरल अजय कोचर भारतीय नौसेना के उन वरिष्ठ अधिकारियों में शामिल हैं जिनका सैन्य जीवन नेतृत्व, रणनीतिक सोच और परिचालन क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में देखा जाता है। वाइस एडमिरल अजय कोचर पुणे स्थित प्रतिष्ठित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के पूर्व छात्र हैं। 01 जुलाई 1988 को उन्हें भारतीय नौसेना में कमीशन प्राप्त हुआ था।

नौसेना के मुताबिक, वह गनरी एवं मिसाइल सिस्टम के विशेषज्ञ अधिकारी हैं। अपने लंबे नौसैनिक करियर के दौरान उन्होंने ऑपरेशनल, प्रशासनिक और रणनीतिक स्तर पर कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभाली हैं। वाइस एडमिरल कोचर ने सैन्य शिक्षा और रणनीतिक अध्ययन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने वेलिंग्टन स्थित डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज, गोवा स्थित नेवल वॉर कॉलेज तथा यूनाइटेड किंगडम के रॉयल कॉलेज ऑफ डिफेंस स्टडीज से उच्च सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया। नौसेना मुख्यालय में भी उन्होंने कई अहम रणनीतिक और नीति-निर्माण संबंधी पदों पर कार्य किया। इनमें जॉइंट डायरेक्टर नेवल प्लान्स, डायरेक्टर स्टाफ रिक्वायरमेंट्स तथा प्रिंसिपल डायरेक्टर डीएसएसडीटी जैसे महत्वपूर्ण पद शामिल रहे। इन भूमिकाओं में उन्होंने नौसेना के आधुनिकीकरण, युद्धक तैयारियों और दीर्घकालिक रणनीतिक योजनाओं को मजबूत करने में योगदान दिया। साल 2018 में फ्लैग रैंक पर पदोन्नति मिलने के बाद उन्होंने एयरक्राफ्ट कैरियर परियोजनाओं तथा युद्धपोत निर्माण एवं अधिग्रहण से जुड़े महत्वपूर्ण दायित्व संभाले। वहीं वर्ष 2021 में उन्हें पश्चिमी बेड़े की कमान सौंपी गई। गौरतलब है कि पश्चिमी बेड़ा भारतीय नौसेना की सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली परिचालन इकाइयों में से एक है। वह राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के कमांडेंट के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। यहां उन्होंने प्रशिक्षण मानकों और आधारभूत संरचना के आधुनिकीकरण पर विशेष ध्यान दिया। उनके कार्यकाल में कैडेट प्रशिक्षण प्रणाली को और अधिक आधुनिक तथा तकनीक आधारित बनाने के प्रयास किए गए। 25 मई 2024 को उन्होंने पश्चिमी नौसेना कमान के चीफ ऑफ स्टाफ का पद संभाला। उस समय पश्चिमी समुद्री क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियां काफी जटिल थीं। उन्होंने पारंपरिक और गैर-पारंपरिक दोनों प्रकार के खतरों से निपटने के लिए नौसेना की तैयारियों को मजबूत किया। उनकी उत्कृष्ट सेवाओं और असाधारण नेतृत्व क्षमता के लिए उन्हें वर्ष 2022 में 'अति विशिष्ट सेवा मेडल' तथा वर्ष 2026 में 'परम विशिष्ट सेवा मेडल' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भारतीय सशस्त्र बलों में अत्यंत प्रतिष्ठित माने जाते हैं। वाइस चीफ ऑफ द नेवल स्टाफ बनने से पहले वह अंडमान एवं निकोबार कमान के कमांडर-इन-चीफ के रूप में कार्यरत थे।

सतीशन सरकार का छात्राओं को मासिक धर्म अवकाश देने का ऐलान

तिरुवनंतपुरम। केरल में कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई यूडीएफ सरकार ने शुक्रवार को महिलाओं और बच्चों के कल्याण को लेकर एक बड़ी घोषणा की, जिसने पूरे राज्य का ध्यान अपनी ओर खींचा। सरकार ने एक महत्वाकांक्षी योजना के तहत स्कूली छात्राओं को हर महीने तीन दिनों तक 'मासिक धर्म अवकाश' देने का प्रस्ताव रखा है।

इसकी घोषणा राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने विधानसभा में अपने पहले नीतिगत संबोधन के दौरान की।

मुख्यमंत्री वी.डी. सतीशन के नेतृत्व वाली सरकार की पहली नीति घोषणा के दौरान यह ऐलान किया गया। यह 'मासिक धर्म गरिमा' नामक एक व्यापक पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य स्कूलों, कॉलेजों और सार्वजनिक स्थानों को लड़कियों और महिलाओं के लिए अधिक संवेदनशील और सुविधाजनक बनाना है।

सरकार के अनुसार, स्कूली छात्राएं हर महीने तीन दिन तक मासिक धर्म अवकाश ले सकेंगी। साथ ही, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी पढ़ाई प्रभावित न हो, सहायता में विशेष 'कैच-अप' कक्षाएं भी आयोजित की जाएंगी। यह प्रस्ताव नई सरकार के पहले विधायी सत्र की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक घोषणाओं में से एक बनकर सामने आया है। सरकार ने यह भी घोषणा की कि केरल को देश का सबसे अधिक महिला-अनुकूल राज्य बनाया जाएगा।

इस संबोधन में कार्यस्थलों पर महिलाओं को समान वेतन देने के उपायों, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं के लिए विशेष कल्याणकारी सुविधाओं और औपचारिक रोजगार व्यवस्था से बाहर काम करने वाली महिला श्रमिकों को छह महीने का मातृत्व अवकाश देने का वादा किया गया।

सरकार ने इसके अलावा प्रमुख शहरों में सार्वजनिक शौचालय की सुविधाएं बढ़ाने और महिलाओं के लिए सैनिटरी नैपकिन, जूते-चप्पल तथा अन्य जरूरी सामान उपलब्ध कराने की योजनाओं की भी घोषणा की।

सरकार ने 'बेसहारा और अनाथ मुक्त केरल' नामक एक महत्वाकांक्षी पहल शुरू करने की घोषणा की। इसका उद्देश्य केरल को भारत का पहला अनाथ-मुक्त राज्य बनाना है।

किशोर न्याय अधिनियम के प्रावधानों से प्रेरित यह कार्यक्रम जरूरतमंद बच्चों के पुनर्वास के लिए संस्थागत देखभाल की बजाय समुदाय आधारित देखभाल पर जोर देता है। इसके तहत बड़े स्तर पर गोद लेने का अभियान चलाने और प्रशिक्षित पालक परिवारों का नेटवर्क तैयार करने का प्रस्ताव रखा गया है।

अति-आत्मविश्वास, घमंड और भ्रष्टाचार के कारण हारी टीएमसी : बिस्वजीत देब

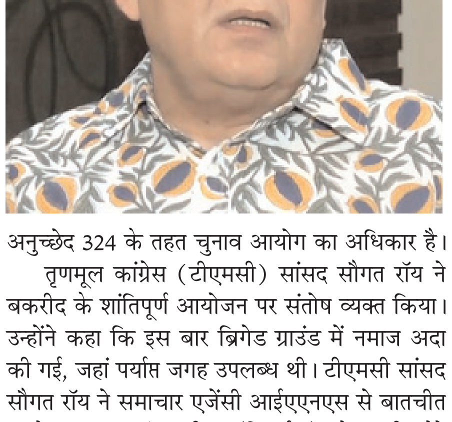

कोलकाता। टीएमसी के वरिष्ठ नेता और मिजोरम के एडवोकेट जनरल बिस्वजीत देब ने पार्टी की हालिया चुनावी हार पर कहा कि टीएमसी की हार अति-आत्मविश्वास और घमंड का नतीजा थी।

बिस्वजीत देब ने समाचार एजेंसी आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, 'हम जमीनी स्तर पर थे और समझ सकते थे कि हालात धीरे-धीरे हाथ से निकल रहे थे। पिछले पांच सालों में भ्रष्टाचार चरम पर था। हर विभाग में भ्रष्टाचार के मामले सामने आए, कई मंत्रियों, सांसदों और विधायकों को गिरफ्तार किया गया। कुछ को फिर से टिकट दे दिया गया, जिससे जनता नाराज हुई। लगभग 26,000 शिक्षकों की नौकरियां चली गईं। आरजी कर मेडिकल कॉलेज कांड ने भी जनता के गुस्से को बढ़ाया।'

उन्होंने अभिषेक बनर्जी पर भी सवाल उठाए। बिस्वजीत देब ने कहा, 'ममता बनर्जी ने अभिषेक बनर्जी पर बहुत ज्यादा भरोसा किया। अभिषेक ने पार्टी को कॉर्पोरेट संस्था बनाने की कोशिश की, जबकि राजनीतिक पार्टी जमीनी स्तर पर काम करती है। जमीनी कार्यकर्ताओं को न पहचान मिली और न सम्मान। कार्यकर्ताओं और नेतृत्व के बीच कोई संवाद नहीं था। सारा संवाद सिर्फ आई-पैक के जरिए होता था। आरोप है कि आई-पैक टिकट दिलाने के बदले पैसे मांगता था।'

बिस्वजीत देब ने कहा कि वे दो दिनों में पार्टी छोड़ने या न छोड़ने का फैसला लेंगे। उन्होंने एसआईआर को भी सही ठहराते हुए कहा कि यह जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 और संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत चुनाव आयोग का अधिकार है।

तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सांसद सौगत रॉय ने बकरीद के शांतिपूर्ण आयोजन पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस बार ब्रिगेड ग्राउंड में नमाज अदा की गई, जहां पर्याप्त जगह उपलब्ध थी। टीएमसी सांसद सौगत रॉय ने समाचार एजेंसी आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, 'बकरीद शांतिपूर्ण ढंग से गुजरी। मेरे इलाके कमरहटी में करीब 10,000 लोगों ने बकरीद की नमाज में हिस्सा लिया। पहले रेड रोड और शहीद मीनार पर नमाज होती थी, लेकिन इस बार ब्रिगेड ग्राउंड में बेहतर व्यवस्था के कारण कार्यक्रम सफल रहा।' कोलकाता के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) द्वारा सुरक्षा इंतजामों की तारीफ किए जाने पर सौगत रॉय ने नाराजगी जताते हुए कहा कि वह अधिकारी सरकार के प्रवक्ता की भूमिका निभा रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर के शोपियां में सीआरपीएफ के एएसआई की मौत

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के शोपियां जिले में शुक्रवार को एक कैंप के अंदर सीआरपीएफ के एक जूनियर अधिकारी की मौत हो गई। वहीं, कुलगाम जिले में एक युवक का शव बरामद किया गया। पुलिस ने बताया कि शोपियां जिले के जैनापोरा इलाके में स्थित हॉर्टिकल्चर कैंप में तैनात एएसआई अचानक गिर पड़े। उन्हें तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) जैनापोरा ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने बताया, 'एएसआई कद्दुआ जिले के राजबाग इलाके का रहने वाला था। मामले का संज्ञान लेकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी गई है।' एक अन्य घटना में कुलगाम जिले के चिम्मर इलाके में 25 वर्षीय युवक अपने घर में मृत पाया गया। वह पेशे से मैकेनिक था। वह घर के अंदर फंदे से लटका हुआ मिला। एक पुलिस अधिकारी ने बताया, 'मेडिको-लीगल औपचारिकताओं और पोस्टमार्टम पूरा होने के बाद शव परिवार को अंतिम संस्कार के लिए सौंप दिया गया।

केंद्रीय राज्यमंत्री आठवले ने मीठी नदी का निरीक्षण किया, बताया- 'सफाई का काम जारी'

मुंबई। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री रामदास आठवले ने मुंबई की जल निकासी व्यवस्था में सुधार की जरूरत को लेकर पत्रकारों से बात की। उन्होंने कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद से सिद्दारमैया के इस्तीफे को लेकर भी प्रतिक्रिया दी।

केंद्रीय राज्यमंत्री रामदास आठवले ने कहा कि कांग्रेस ने सिद्दारमैया को मुख्यमंत्री बनाया था। अब शायद कांग्रेस की किसी और को मुख्यमंत्री बनाने की इच्छा है। जो भी मुख्यमंत्री बनेगा, उसे हमारी ओर से शुभकामना है।

मुंबई में बाढ़ को लेकर उन्होंने कहा कि बहुत ज्यादा बारिश होने पर मीठी नदी में बाढ़ आ जाती है। हर साल इस नदी को महानगरपालिका की ओर से साफ करने का काम किया जाता है। इस वर्ष भी सफाई का काम जारी है। महानगरपालिका के अधिकारियों की ओर से जानकारी दी गई कि साफ-सफाई का काम चल रहा है। मॉनसून आने से पहले काम पूरा हो जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि बाढ़ की वजह से अगल-बगल के बस्ती वालों को तकलीफ नहीं होनी चाहिए। मुंबई में जब बारिश ज्यादा होती है तो हर इलाके में पानी भर जाता है। मेरा मानना है कि पानी निकालने के लिए कुछ न कुछ समाधान करने की आवश्यकता है। मुंबई के ड्रेनेज सिस्टम को सुधारने की जरूरत है। अगर दो बड़े ड्रेनेज सिस्टम लग जाते हैं तो पानी ऊपर नहीं रहेगा। पूरा पानी नीचे जाएगा। इसके लिए भी कोशिश करने की जरूरत है।

बता दें कि एक दिन पहले एसआईआर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर रामदास आठवले ने कहा था कि मुझे लगता है कि विपक्ष जिसे चाहे निशाना बना सकता है, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को यह सुनिश्चित करने का अधिकार दिया है कि मतदाता सूची साफ और सटीक हो।

उन्होंने कहा था कि किसी भी व्यक्ति का नाम दो या तीन बार नहीं आना चाहिए, और मृत व्यक्तियों के नाम इसमें शामिल नहीं होने चाहिए। इन सभी बातों की समीक्षा करने के बाद, सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि चुनाव आयोग जो कर रहा है, वह सही है।

दिल्ली के मुखर्जी नगर में अवैध प्रवासियों पर कार्रवाई, पांच बांग्लादेशी युवक गिरफ्तार

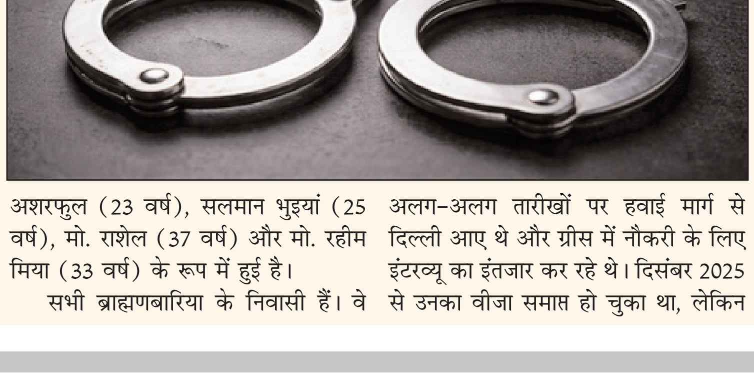

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी की मुखर्जी नगर पुलिस ने अवैध रूप से भारत में रह रहे पांच बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। इन सभी के वीजा की वैधता समाप्त हो चुकी थी। इसके बावजूद, वे लंबे समय से दिल्ली में छिपकर रह रहे थे।

मुखर्जी नगर पुलिस स्टेशन की टीम ने स्थानीय लोगों की सूचना पर दो संदिग्धों को बांग्ला भाषा बोलते हुए देखा। इंस्पेक्टर राजीव शाह (एसएचओ मुखर्जी नगर) के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में पता चला कि दोनों इंदिरा विकास कॉलोनी में तीन अन्य बांग्लादेशी नागरिकों के साथ किराए के मकान में रह रहे थे। पांचों आरोपियों की पहचान रहमत उल्लाह (23 वर्ष), मोहम्मद अशरफुल (23 वर्ष), सलमान भुइयां (25 वर्ष), मो. राशेल (37 वर्ष) और मो. रहीम मिया (33 वर्ष) के रूप में हुई है।

सभी ब्राह्मणबारिया के निवासी हैं। वे अलग-अलग तारीखों पर हवाई मार्ग से दिल्ली आए थे और ग्रीस में नौकरी के लिए इंटरव्यू का इंतजार कर रहे थे। दिसंबर 2025 से उनका वीजा समाप्त हो चुका था, लेकिन वे भारत छोड़कर नहीं गए। जांच में पता चला कि वीजा समाप्त होने के बाद ये सभी पश्चिम बंगाल के मालदा टाउन निवासी गणपति विश्वास की मदद से मुखर्जी नगर के इंदिरा विकास कॉलोनी में शिफ्ट हो गए थे। पुलिस अब गणपति विश्वास को गिरफ्तार करने के प्रयास कर रही है।

एसीपी सुरेश चंदर के समग्र पर्यवेक्षण में हेडकांस्टेबल पुनीत, पंकज, विनीत, कांस्टेबल विवेक और किशोर पाशी की टीम ने यह सफलता हासिल की। पांचों बांग्लादेशी नागरिकों को एफआरआरओ (विदेशियों का क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय) के सामने पेश किया गया। सभी के खिलाफ विदेशी अधिनियम के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है।

तिरुपति के राज पार्क होटल को मिली बम धमकी निकली झूठी

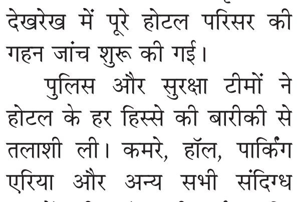

तिरुपति (आंध्र प्रदेश)। आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले के एक होटल में बम की धमकी मिलने से हड़कंप मच गया। यह मामला राज पार्क होटल का है, जहां एक अज्ञात कॉलर ने होटल को बम से उड़ाने की धमकी दी। इस कॉल के बाद होटल स्टाफ और वहां मौजूद मेहमानों में अफरा-तफरी और दहशत का माहौल बन गया।

सूचना मिलते ही पुलिस ने तुरंत मामले को गंभीरता से लिया और सुरक्षा एजेंसियों को अलर्ट कर दिया। मौके पर बम निरोधक दस्ते (बम स्क्वॉड) और डॉग स्क्वॉड की टीमों को तत्काल भेजा गया। इसके साथ ही अलीपिरी पुलिस स्टेशन के निरीक्षक रामकृष्ण की देखरेख में पूरे होटल परिसर की गहन जांच शुरू की गई।

पुलिस और सुरक्षा टीमों ने होटल के हर हिस्से की बारीकी से तलाशी ली। कमरे, हॉल, पार्किंग एरिया और अन्य सभी संदिग्ध स्थानों की जांच की गई, ताकि किसी भी तरह के विस्फोटक या संदिग्ध वस्तु की पुष्टि की जा सके। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था को पूरी तरह कड़ा कर दिया गया और होटल के आसपास लोगों की आवाजाही भी नियंत्रित की गई। करीब कुछ समय तक चले इस सघन तलाशी अभियान के बाद पुलिस ने स्पष्ट किया कि होटल परिसर में कोई भी विस्फोटक सामग्री नहीं मिली है। जांच के बाद यह पुष्टि की गई कि मिली धमकी पूरी तरह झूठी थी और यह एक फर्जी कॉल थी। पुलिस इंस्पेक्टर रामकृष्ण ने जानकारी देते हुए बताया कि शुरुआती जांच में यह मामला अफवाह या शरारतपूर्ण कॉल का प्रतीत होता है। उन्होंने कहा कि कॉल करने वाले व्यक्ति की पहचान करने के प्रयास किए जा रहे हैं और उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

समाज कल्याण योजनाओं से बदल रही बीजापुर की तस्वीर

रायपुर। बीजापुर जिले में समाज कल्याण विभाग और विभिन्न संस्थाओं के संयुक्त प्रयासों से नशामुक्ति, योग, दिव्यांग पुनर्वास और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के जरिए लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है। इन योजनाओं से जिले के हजारों हितग्राहियों को सीधा लाभ मिल रहा है।

नशामुक्ति केंद्र से 112 लोगों को मिली नई जिंदगी

जिले में गुण्डाधुर सेवा संस्थान समिति द्वारा 12 दिसंबर 2024 से नशामुक्ति केंद्र संचालित किया जा रहा है। यहां नशे की लत से पीड़ित लोगों का इलाज विशेषज्ञ डॉक्टरों और काउंसलर्स की देखरेख में किया जा रहा है। योग, ध्यान, थेरेपी, मनोवैज्ञानिक परामर्श और चिकित्सा उपचार के माध्यम से अब तक 112 लोगों को नशे की लत से मुक्ति दिलाई जा चुकी है।

योग से बढ़ रही जागरूकता और स्वस्थ जीवनशैली

छत्तीसगढ़ योग आयोग द्वारा जिले के दूरस्थ और आदिवासी क्षेत्रों में लगातार योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। प्रशिक्षित युवाओं को ग्राम पंचायतों, आश्रम-शालाओं और छात्रावासों में योग प्रशिक्षण की जिम्मेदारी दी गई है।

वन विकास निगम की अनूठी पहल : सार्वजनिक प्याऊ से प्यास भी बुझा रहे, जंगलों को आग से भी बचा रहे

रायपुर। प्रदेश के वन मंत्री केदार कश्यप के मार्गदर्शन में वन विकास निगम जगदलपुर द्वारा भीषण गर्मी के बीच एक सराहनीय और अनूठी पहल शुरू की गई है। इस पहल के तहत प्रमुख मार्गों पर सार्वजनिक प्याऊ स्थापित कर राहगीरों और ग्रामीणों को शीतल पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही इन प्याऊ केंद्रों के माध्यम से ग्रामीणों को जंगलों को आग से सुरक्षित रखने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है।

प्यास बुझाने के साथ वन संरक्षण का संदेश

बस्तर संभाग में पड़ रही भीषण गर्मी और चिलचिलाती धूप को देखते हुए वन विकास निगम ने आमजन की सुविधा के लिए जगह-जगह प्याऊ केंद्र शुरू किए हैं। इन केंद्रों पर तैनात वन कर्मी राहगीरों को ठंडा पानी पिलाने के साथ-साथ जंगलों को दावानल से बचाने का संदेश भी दे रहे हैं।

रेलवे कॉलोनियों में क्लीन एयर ग्रीन स्पेस जागरूकता अभियान

रायपुर। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर मंडल द्वारा 'विश्व पर्यावरण दिवस अभियान-2026' (15 मई से 5 जून 2026) के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं जन-जागरूकता को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

इसी क्रम में दिनांक 27 से 30 मई 2026 तक मंडल के सभी प्रमुख स्टेशनों पर व्यापक जन-जागरूकता एवं निरीक्षण अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान 'पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा दक्षता और संसाधनों के संतुलित उपयोग के साथ भविष्य उन्मुख रेल परिचालन की दिशा में रेलवे के सतत प्रयास किए जा रहे हैं अपने आसपास हरियाली बढ़ाने आउटडोर एक्टिविटी करने। साथ ही यात्रियों एवं कर्मचारियों को एकल-उपयोग प्लास्टिक के प्रयोग से बचने, प्लास्टिक अपशिष्ट के उचित निपटान तथा स्टेशन परिसरों को स्वच्छ एवं पर्यावरण-अनुकूल बनाए रखने हेतु जागरूक एवं प्रेरित किया जा रहा हैं। क्लीन एयर ग्रीन स्पेस जागरूकता अभियान के अंतर्गत डब्ल्यूआरएस एवं खारून रेल विहार रेलवे कॉलोनी में जनजागरूकता अभियान चलाया गया। रेलवे स्कूल बी एम वाय भिलाई में ड्राइंग एवं निबंध प्रतियोगिता कराई गई जिसमें एनवायरमेंट क्लाइमेट चेंज विषय सम्मिलित किए गए।

प्रदेश में 500 तहसीलदार हड़ताल पर, अधिकारी को पीटने पर नाराज

भाजपा विधायक रामकुमार टोप्पो को बतौली में पार्टी कार्यकर्ताओं ने रोक लिया

रायपुर। अंबिकापुर में गिरफ्तारी देने जा रहे भाजपा विधायक रामकुमार टोप्पो को बतौली में पार्टी कार्यकर्ताओं ने रोक लिया। आईजी कार्यालय जाते समय कार्यकर्ता सड़क पर लेट गए। इसके बाद विधायक बतौली के मंगारी से वापस सीतापुर लौट गए। फिलहाल विधायक आज गिरफ्तारी नहीं देंगे।

प्रदेश में 500 से ज्यादा तहसीलदार हड़ताल पर है। सीतापुर से विधायक रामकुमार टोप्पो पर नायब तहसीलदार को पीटने का आरोप है। काम बंद कर अधिकारियों ने विधायक की गिरफ्तारी की मांग की है। विधायक रामकुमार टोप्पो ने कहा कि वे खुद अपनी गिरफ्तारी देंगे। राजस्व कर्मियों को हड़ताल पर जाने की कोई जरूरत नहीं है। विधायक ने समर्थकों से अपील करते हुए कहा कि किसी तरह का जमावड़ा या पैनिक होने की जरूरत नहीं है। विधायक ने कहा कि यह सुशासन की सरकार है, जहां उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने में भी कोई परेशानी नहीं हुई, इसलिए अब वे खुद गिरफ्तारी भी देंगे। साथ ही उन्होंने कहा कि कांग्रेस शासनकाल में ऐसा नहीं होता था।

रायपुर, रायगढ़ और सरगुजा में तहसीलदारों की हड़ताल से राजस्व कामकाज प्रभावित हुआ है। दरअसल, सरगुजा में राजापुर उप तहसील के नायब तहसीलदार तुषार मानिक ने विधायक और उनके समर्थकों पर पीटने का आरोप लगाया है, जिसके बाद विधायक समेत 10 लोगों पर एफआईआर हुई है।

वहीं, विधायक की बहन ने भी नायब तहसीलदार पर आरोप लगाया कि, तुषार मानिक ने फाइल फेंकी और बदसलूकी कर उन्हें ऑफिस से बाहर निकाला, इस बात को लेकर ही विवाद हुआ। थाने में शिकायत के बाद तुषार मानिक पर भी एफआईआर हुई है। दोनों पक्षों ने एक दूसरे के खिलाफ मामला दर्ज कराया है।

जानकारी के अनुसार, मैनपाट की राजापुर उप तहसील में सीतापुर विधायक रामकुमार टोप्पो की चचेरी बहन सीमा धनकी ने जमीन के शाख शोध पत्र बनवाने के लिए 14 मई को फाइल जमा की थी।

आरोप है कि नायब तहसीलदार तुषार मानिक और बाबू कई दिनों से उसे काम के लिए दफ्तर के चक्कर लगवा रहे थे। बुधवार (27 मई) को भी वह अपने काम के सिलसिले में उप तहसील कार्यालय पहुंचीं थीं।

सीमा धनकी ने आरोप लगाया है कि, नायब तहसीलदार तुषार मानिक से उन्होंने फाइल पर साइन करने के लिए कहा तो वे भड़क गए और कहा कि तुम होती कौन हो? हस्ताक्षर करने के लिए कहने वाली। जाकर मैनपाट में हस्ताक्षर करा लो।

इसके बाद उसे तहसील से बाहर करने के लिए भी कहा गया। इसकी जानकारी सीमा धनकी ने विधायक रामकुमार टोप्पो को दी तो विधायक के समर्थक उप तहसील पहुंच गए। आरोप है कि शाम करीब 6 बजे विधायक रामकुमार टोप्पो ने सीतापुर लौट चुके नायब तहसीदार को वापस राजापुर बुलाया। नायब तहसीलदार तुषार मानिक के साथ एसडीएम फागेश सिन्हा भी राजापुर पहुंचे।

नायब तहसीलदार तुषार मानिक से विधायक रामकुमार टोप्पो ने बहन से अभद्र व्यवहार करने को लेकर पूछा। तुषार मानिक ने कहा कि अभद्रता नहीं की गई है, वे तुरंत हस्ताक्षर करने के लिए कह रही थीं, उन्हें कल बुलाया गया है।

तुषार मानिक ने कहा कि इतना कहते ही विधायक के समर्थकों ने उनकी पिटाई शुरू कर दी। विधायक रामकुमार टोप्पो ने उन्हें किनारे बुलाया और मारपीट की। बीच-बचाव में एसडीएम फागेश सिन्हा आए और उन्हें बचाकर बाहर निकाला।

खैरागढ़ में 15 वन्यजीवों और पक्षियों की मौत

रायपुर। प्रदेश में पड़ रही भीषण गर्मी और हीट वेव का असर अब वन्यजीवों पर भी दिखाई देने लगा है। खैरागढ़ वन क्षेत्र के उपवृत्त लछना अंतर्गत दल्लीखोली के वन कक्ष क्रमांक 322 में 15 वन्यजीव और पक्षी मृत अवस्था में पाए गए। घटना की सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और तत्काल जांच शुरू की गई।

प्रारंभिक जांच में हीट वेव की आशंका

वन विभाग और पशु चिकित्सकों की टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। प्राथमिक जांच में माना जा रहा है कि पिछले कई दिनों से क्षेत्र में पड़ रही अत्यधिक गर्मी और हीट वेव के कारण यह घटना हुई हो सकती है। जांच को पुख्ता करने के लिए आसपास के जल स्त्रोतों और मिट्टी के नमूने लेकर प्रयोगशाला भेजे गए हैं।

भीषण गर्मी से वन्यजीवों को राहत देने के लिए वन विभाग ने क्षेत्र में 3 अस्थायी वाटर होल तैयार किए हैं। इनमें नियमित रूप से पेयजल की व्यवस्था की जा रही है। आवश्यकता के अनुसार अन्य स्थानों पर भी वाटर होल बनाए जा रहे हैं, ताकि वन्यजीवों को पानी की कमी का सामना न करना पड़े।

आईआईटी भिलाई की बड़ी उपलब्धि : शोधकर्ताओं ने विकसित की 'स्मार्ट' दवा-वितरण तकनीक

रायपुर। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भिलाई के शोधकर्ताओं ने स्वास्थ्य सामग्री (हेल्थकेयर मैटेरियल्स) के क्षेत्र में एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए एक नई 'स्मार्ट' दवा-वितरण (ड्रग-डिलिवरी) सामग्री विकसित की है। डॉ. संजीब बैनर्जी के नेतृत्व में शोधकर्ता स्वरूप माईती, सुदीप्त पॉल, संदीपन घोष और डॉ. संजय कुमार गुप्ता की टीम द्वारा तैयार की गई यह अनूठी तकनीक दवाओं को पेट के तेज एसिड से सुरक्षित रखते हुए आंत में नियंत्रित तरीके से छोड़ने में पूरी तरह सक्षम है। यह नवाचार भविष्य में मुंह से ली जाने वाली (मौखिक) दवाओं को अधिक सुरक्षित, सटीक और अत्यधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम साबित हो सकता है।

आमतौर पर मुंह से ली जाने वाली कई महत्वपूर्ण दवाएं पेट के अत्यधिक अम्लीय (एसिडिक) वातावरण के कारण आंत तक पहुंचने से पहले ही अपनी प्रभावशीलता खो देती हैं। पेट का एसिड दवा के लक्षित स्थान पर पहुंचने से पहले ही उसके सक्रिय तत्वों को नुकसान पहुंचा देता है, जिससे दवा का असर काफी कम हो जाता है और मरीजों को बीमारी के इलाज के लिए बार-बार या अधिक मात्रा में दवा लेने की आवश्यकता पड़ती है। इस गंभीर चिकित्सा चुनौती का दीर्घकालिक समाधान खोजने के लिए आईआईटी भिलाई की टीम ने एक ऐसा 'स्मार्ट वाहक' (स्मार्ट कैरियर) विकसित किया है, जो दवा के ऊपर एक मजबूत सुरक्षात्मक कवच की तरह काम करता है। यह उन्नत सामग्री पेट के तीव्र अम्लीय वातावरण में पूरी तरह स्थिर रहती है और जैसे ही यह आंत के अनुकूल वातावरण में पहुंचती है, यह अपने-आप सक्रिय होकर दवा को धीरे-धीरे व आवश्यकतानुसार नियंत्रित तरीके से छोड़ती है।

इस अभूतपूर्व शोध की सबसे बड़ी विशेषता इस सामग्री का 'स्मार्ट' और संवेदनशील होना है, जो मानव शरीर के आंतरिक बदलावों व जैविक संकेतों को महसूस कर उसी के अनुरूप सटीक प्रतिक्रिया देती है। इसके अतिरिक्त, इस सामग्री में शोधकर्ताओं द्वारा एक 'इनबिल्ट चमक' (फ्लोरोसेंस) भी शामिल की गई है, जिसकी मदद से वैज्ञानिक शरीर के भीतर दवा की सुरक्षित आवाजाही और उसकी सटीक गतिशीलता को आसानी से ट्रैक (निगरानी) कर सकते हैं।

कस्तूरा शिविर में किसानों को वितरित किए गए किसान किताब और फलदार पौधे

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में जशपुर जिले में सुशासन तिहार 2026 के अंतर्गत जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविरों का प्रभावी संचालन किया जा रहा है। शिविरों के माध्यम से शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीणों तक पहुंचाया जा रहा है तथा पात्र हितग्राहियों को मौके पर ही विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। इसी क्रम में जशपुर जिले के दुलदुला विकासखंड अंतर्गत ग्राम कस्तूरा में आयोजित जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा हितग्राहियों को सामग्री एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए। जिला पंचायत उपाध्यक्ष शौर्य प्रताप सिंह जुदेव ने हितग्राहियों को योजनाओं के तहत सामग्री प्रदान कर शासन की योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

कस्तूरा शिविर में हितग्राहियों को मिला योजनाओं का लाभ

शिविर में कृषि विभाग द्वारा किसानों को किसान किताब वितरित की गई। साथ ही किसानों को आम, लीची एवं अन्य फलदार पौधों का वितरण कर बाड़ी विकास और उद्यानिकी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। अधिकारियों ने किसानों को वैज्ञानिक खेती एवं फलदार पौधों से अतिरिक्त आय अर्जित करने की जानकारी भी दी।

आठवें वेतन आयोग के सामने पेंशनरों की बड़ी मांग : आयकर मुक्त हो पेंशन

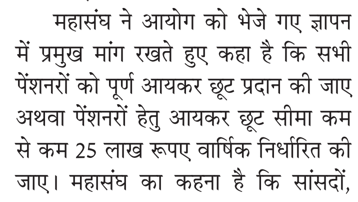

रायपुर। भारतीय राज्य पेंशनर्स महासंघ की छत्तीसगढ़ इकाई ने आठवें केंद्रीय वेतन आयोग को सुझाव भेजा है कि देशभर के पेंशनरों और वरिष्ठ नागरिकों को आयकर से पूर्णत: मुक्त रखा जाए अथवा आयकर छूट सीमा बढ़ाकर न्यूनतम 25 लाख रूपए वार्षिक निर्धारित की जाए । महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री और छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र नामदेव ने आज यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि इस संबंध में महासंघ की ओर से प्रदेश महामंत्री प्रवीण कुमार त्रिवेदी ने आठवें वेतन आयोग के अध्यक्ष को ज्ञापन भेजा है। त्रिवेदी ने ज्ञापन में कहा है कि पेंशन कोई 'अनुग्रह' नहीं, बल्कि कर्मचारियों द्वारा सेवाकाल में अर्जित 'स्थगित वेतन' और संवैधानिक अधिकार है। नामदेव और त्रिवेदी ने कहा है कि वर्तमान समय में पेंशनरों की आर्थिक स्थिति लगातार चुनौतीपूर्ण होती जा रही है। वृद्धावस्था में इलाज का खर्चा बहुत ज़्यादा बढ़ गया है, महंगाई लगातार बढ़ रही है और अधिकांश पेंशनरों की आय का एकमात्र स्त्रोत केवल पेंशन है। ऐसे में आयकर कटौती के कारण उनकी वास्तविक क्रयशक्ति लगातार घट रही है। उन्होंने कहा कि आठवें वेतन आयोग के बाद यदि पेंशन में वृद्धि होती है, तो उसके साथ पेंशनरों पर इन्कम टैक्स का बोझ भी बढ़ जाएगा, जिससे पेंशन वृद्धि का वास्तविक लाभ नहीं मिल पाएगा।

महासंघ ने आयोग को भेजे गए ज्ञापन में प्रमुख मांग रखते हुए कहा है कि सभी पेंशनरों को पूर्ण आयकर छूट प्रदान की जाए अथवा पेंशनरों हेतु आयकर छूट सीमा कम से कम 25 लाख रूपए वार्षिक निर्धारित की जाए। महासंघ का कहना है कि सांसदों, विधायकों और विभिन्न संवैधानिक पदों पर आसीन व्यक्तियों को विशेष सुविधाएं और टैक्स राहत उपलब्ध हैं, इसलिए आजीवन राष्ट्र एवं समाज की सेवा करने वाले कर्मचारियों और पेंशनरों को भी सम्मान और संरक्षण मिलना चाहिए। महासंघ ने आयोग को विशेष सुझाव देते हुए 75 वर्ष से अधिक आयु के सभी पेंशनरों को पूर्ण आयकर छूट देने, पारिवारिक पेंशन पर वर्तमान कर छूट सीमा बढ़ाकर कम से कम एक लाख रूपए वार्षिक करने, गंभीर एवं दीर्घकालिक रोगों के इलाज के लिए अतिरिक्त कर राहत प्रदान करने और पेंशनरों के लिए अलग 'सीनियर पेंशनर टैक्स स्लैब' बनाए जाने की मांग भी की है। भारतीय राज्य पेंशनर्स महासंघ छत्तीसगढ़ प्रदेश इकाई ने आशा व्यक्त की है कि आठवां केंद्रीय वेतन आयोग वरिष्ठ नागरिक पेंशनरों के सम्मान,उनकी सामाजिक सुरक्षा और उनके आर्थिक संरक्षण के लिए इन महत्वपूर्ण सुझावों को अपनी अनुशंसाओं में शामिल करेगा।

पार्षद ने किया ऑपरेटर का मर्डर : पानी को लेकर हुई थी बहस

महासमुंद ले जाकर पीटा, सबूत मिटाने रेत में गाड़ी लाश

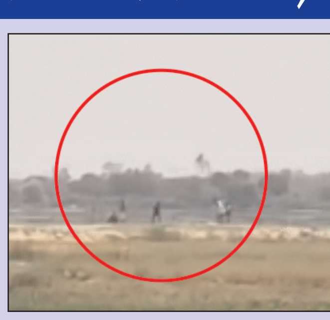
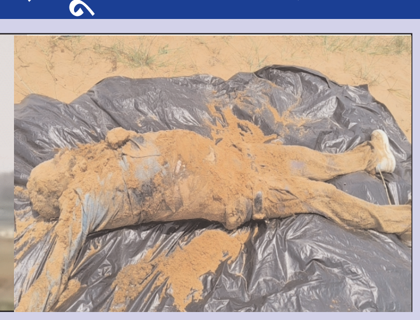

रायपुर। रायपुर के पार्षद ने 2 दोस्तों के साथ मिलकर मोनेट कपंनी के ऑपरेटर की महासमुंद में हत्या कर दी। 22 मई की रात ग्राम नकटा में भुवनेश्वर यादव (31) ने नोहर दास (35) के साथ बैठकर शराब पी थी। नोहर मंदिर हसौद में निर्दलीय पार्षद है।

इस दौरान उनके बीच मोहल्ले में पानी को लेकर विवाद हो गया। नशे में भुवनेश्वर ने नोहर दास को ये कहकर थप्पड़ मारा कि तू पार्षद बन गया है, तो बड़ा आदमी बन गया है। थप्पड़ से नाराज पार्षद ने अपने 2 साथियों संग मिलकर भुवनेश्वर को कार से महासमुंद ले गए। चलती कार में भुवनेश्वर की जमकर पिटाई की, जिससे उसकी मौत हो गई।

आरोपियों ने सबूत मिटाने के लिए उसका शव महानदी किनारे रेत में दफना दिया था। 28 मई को पुलिस ने गड्ढा खोदकर शव निकाला। मामला महासमुंद थाना क्षेत्र का है। पुलिस ने पार्षद समेत 4 लोगों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस के मुताबिक, भुनेश्वर यादव (31) नकटी ग्राम का रहने वाला था। वह मोनेट कंपनी में ऑपरेटर के पद पर काम करता था। 22 मई की शाम से लापता था। परिजनों ने मंदिर हसौद थाने में भुनेश्वर की गुमशुदगी दर्ज कराई थी।

घटना वाले दिन मंदिर हसौद की शराब भट्ठी के पास भुनेश्वर दोस्तों के साथ शराब पी रहा था। इसी दौरान पानी को लेकर उसका झगड़ा हो गया। बहस इतनी बढ़ी कि भुवनेश्वर और निर्दलीय पार्षद नोहर रात्रे के बीच गाली-गलौज हो गई।

गुस्से में पार्षद अपने दोस्तों अमित सिंह राजपूत और हेमचंद बंजारे के साथ मिलकर भुवनेश्वर को कार में बैठाकर महासमुंद के महानदी किनारे ले गया। वहां तीनों ने भुनेश्वर की हाथ-मुक्कों से बुरी तरह पिटाई की।

मारपीट में गंभीर चोट लगने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद आरोपियों ने सबूत मिटाने की साजिश रची।

इसके बाद आरोपियों ने नांदगांव निवासी अपने मामा श्रवण जांगड़े की मदद से शव को ठिकाने लगाया। उन्होंने महानदी किनारे एक टापूनुमा स्थान पर गड्ढा खोदकर भुनेश्वर के शव को दफना दिया था। इधर, पुलिस भुनेश्वर की तलाश में जुटी हुई थी।

पुलिस को जांच में भुनेश्वर का लास्ट लोकेशन का पता चला, जो मंदिर हसौद के आसपास था। इसके बाद पूछताछ में पुलिस को पता चला कि उसे आखिरी बार नोहर दास रात्रे और उसके कुछ साथियों के साथ शराब पीते देखा गया था।

ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन सहित पांच दवाओं के बैच 'अमानक' घोषित

रायपुर। भारत सरकार के ड्रग कंट्रोलर जनरल आफ इंडिया को मिली सूचना के अनुसार, बाज़ार में उपलब्ध औषधि आक्सीटोसिन इंजेक्शन (Oxytocin Injection IP) z IU/ml (Tocin), Batch No. I-7881 को परीक्षण उपरांत 'Grossly Not of Standard Quality' (गंभीर रूप से अवमानक) श्रेणी का घोषित किया गया है।

इसके अतिरिक्त, खाद्य एवं औषधि परीक्षण प्रयोगशाला, कालीबाड़ी, रायपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा कराई गई जाँच में चार और औषधियाँ मिथ्याछाप (Spurious) पाई गई हैं। पहली दवा नाक्पेन-पी (असेक्लोफेनेक एवं पैरासीटामाल टेबलेट्स) है जिसका बैच नंबर MT-250777, अवसान तिथि 04/2027 है और यह Matins Healthcare Pvt. Ltd., Sector-z, IIE SIDCUL, हरिद्वार, उत्तराखंड द्वारा निर्मित बताई जा रही थी। दूसरी दवा फ्लामो स्टार-ऐ पी टेबलेट्स (असेक्लोफेनेक एवं पैरासीटामाल टेबलेट्स) है जिसका बैच नंबर SAI-25029, अवसान तिथि 12/2026 है और यह Anon Pharmaceutical, A-v, RIA, Harsuliya 303005 द्वारा निर्मित बताई जा रही थी।

तीसरी दवा ACHE पी (असेक्लोफेनेक एवं पैरासीटामाल टेबलेट्स) है जिसका बैच नंबर LV25DT-066B, अवसान तिथि 03/2027 है और यह LV Lifesciences, VPO Gurumajra, Baddi, Solan (HP) द्वारा निर्मित बताई जा रही थी। चौथी दवा कोल्डज़िया टेबलेट्स है जिसका बैच नंबर GT-25294A, अवसान तिथि 07/2028 है और यह Go-Ish Remedies Ltd., (Unit-I), Nalagarh, Solan (H.P.) द्वारा निर्मित बताई जा रही थी। ये सभी दवाएं प्रयोगशाला जाँच में अमानक पाई गई हैं। उपरोक्त सूचना प्राप्त होने के पश्चात खाद्य एवं औषधि प्रशासन, छत्तीसगढ़ ने तत्काल कदम उठाते हुए राज्य के समस्त जिला औषधि नियंत्रण अधिकारियों को सतर्कता, निगरानी एवं त्वरित कार्रवाई के निर्देश जारी किए हैं। विभाग ने स्पष्ट किया है कि इन संदिग्ध दवाओं के भंडारण, वितरण एवं विक्रय पर विशेष नजर रखी जाए और यदि उपलब्ध स्टॉक पाया जाए तो तत्काल नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित की जाए।

संपादकीय

माना कि अंधेरा घना है, पर एक दीया जलाना कहाँ मना है!

प्रो. मनोज कुमार

दो सौ साल की पत्रकारिता का स्मरण करते हुए जब हम पंडित युगल किशोर का स्मरण करते हैं, उदंत मार्त्तण्ड का स्मरण करते हैं तो स्वाभाविक रूप से हम अभिमान से भर उठते हैं और दो सौ साल बाद की पत्रकारिता की सीरत देखते हैं तो कम से कम अभिमान तो होता ही नहीं है। दो साल में हिंदी पत्रकारिता के पास बताने के लिए बहुत कुछ था लेकिन हमने बहुत कुछ पाने के लिए उसे खो दिया। हिंदी पत्रकारिता कहाँ दो सौ साल पहले अंग्रेजों से लोहा ले रही थी और आज हम अपने ही लोगों से लोहा ले रहे हैं। अभिव्यक्ति की आजादी की साख को बचाने के लिए पत्रकारिता संघर्ष कर रही है और यह संघर्ष अनवरत चलने वाला है। हर सत्ता के लिए पत्रकारिता खतरे की घंटी हुआ करती थी और आगे भी रहेगी। यह जानकर अच्छा लगता है कि चाहे पत्रकारिता में जितनी गिरावट आ गई हो, हर कोई अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए पत्रकारिता से भयभीत रहता है। दो साल की हिंदी पत्रकारिता की यही साख है और पूँजी भी। हालाँकि इन दो सौ सालों में बहुत कुछ बदला है। पत्रकारिता की तकनीक हाशिये पर है और हम तकनीक की पत्रकारिता करने लग गए हैं। इस बदलाव से हिंदी पत्रकारिता का यह संक्रमण काल है। यह बात पत्रकारिता में रचे-बसे नए और पुराने दोनों पीढियों को मान लेना चाहिए। वर्तमान समय में चारों तरफ इसी बात पर चर्चा हो रही है कि हिंदी पत्रकारिता एआई और चैटजीपीटी से कैसे निपटे? संकट बड़ा है तो इसका समाधान भी हमें ही तलाश करना होगा। हिंदी पत्रकारिता पर यह संकट पहली बार नहीं है और ना ही आखिरी बार है। ऐसे संकट आते-जाते रहेंगे लेकिन यह भी भरोसा है कि समय के साथ इसका समाधान भी हम सब तलाश कर ही लेंगे।

लंबे संघर्ष के बाद भारत ने स्वाधीनता हासिल किया तो इसमें हिंदी पत्रकारिता की अहम भूमिका थी। अनेक संकटों और झंझावतों से गुजरते हुए अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा वाली हिंदी पत्रकारिता पर अब जिम्मेदारी थी नव भारत निर्माण में चौकीदार बनने की। देश में नवाचार हो रहा था लिहाजा उस समय काल और परिस्थिति के अनुरूप बजट भी आ रहा था। पैसों की बंदरबाट की कहानी शायद उसके जन्म से है। कल भी था और आज भी है। खैर, तब हिंदी पत्रकारिता ने जिम्मेदारी के साथ अपनी भूमिका का निर्वाह किया और तब भी अनेक घपले-घोटाले को बेनकाब किया। इस भूमिका के लिए हिंदी पत्रकारिता की पीठ सबने थपथपायी लेकिन भीतर से सत्ता का नाराज होना लाजिमी था। प्रतिपक्ष के लिए तब हिंदी पत्रकारिता की जवाबदारी नैतिक और राष्ट्रहित में होता था लेकिन यही प्रतिपक्ष जब सत्तासीन होता है तो पत्रकारिता उसकी बैरी हो जाती है। सत्ता के साथ पत्रकारिता का रिश्ता वैसा ही है, जैसा की नदी के दो पाट। चलेंगे साथ-साथ लेकिन मिलेंगे कभी नहीं। खरामा-खरामा साल 47 से साल 75 तक पहुँच गए और यही वह साल था जब हिंदी पत्रकारिता का गला घोंटने की साजिश की गई। तानाशाह शासन व्यवस्था ने पत्रकारिता पर पहरे बिठा दिए। शब्द-शब्द सरकार की निगरानी में छपने लगे। तमाम बंदिशों के बाद भी पत्रकारिता कहाँ हार मानने वाली थी। तानाशाह सरकार के खिलाफ हल्ला बोल दिया गया। विरोधस्वरूप संपादकीय पृष्ठ कोरा छोड़ दिया गया। और भी विरोध के अपने तरीके अपनाए गए। पत्रकारिता का यह स्वाभिमान आज भी शेष है। हालाँकि यह भी सच है कि इसी दौर में यह वाक्य चल पड़ा कि- तानाशाह शासन ने कहा कि घुटने के बल चलो तो लोग रेंगने लगे। सौ तो नहीं, अंशभर यह उस समय की सच्चाई है।

असल चेहरा और पत्रकारिता की साख गिरने का समय साल 75 के बीत जाने के बाद दिखने लगा। पत्रकारिता, मीडिया का स्वरूप धारण करने लगा और मीडिया को उद्योग का दर्जा दिए जाने की माँग उठने लगी। मिशन से मीडिया और मीडिया से उद्योग बन चली पत्रकारिता आहिस्ता-आहिस्ता रोजगार का चेहरा बनने लगी। एक तरफ पत्रकारिता मीडिया बन गई तो दूसरी तरफ पेशेवर पत्रकार तैयार करने के लिए उद्योग की तरह ही मीडिया शिक्षा के संस्थान कुकुरमुत्ते की भाँति उठ खड़े हुए। हर की अपनी खासियत, हरेक के अपने दावे। पत्रकारिता को औजार बना दिया गया। मीडिया शिक्षा तब और बढने लगा जब पत्रकारिता की तकनीक हाशिये पर जाने लगी और तकनीक की पत्रकारिता होने लगी। अबके समय में आपकी दक्षता विचारों की नहीं, किसी की पीड़ा को देखकर उसे न्याय दिलाने की नहीं, तकनीक के माध्यम से क्या स्टोरी बनायी जा सकती है और इसमें कौन कितना दक्ष होगा, यह मीडिया शिक्षा तय कर रही है। अपनी 45 सालों की पत्रकारिता में मेरे गुरुजनों ने सिखाया कि पत्रकारिता दिल से होती है लेकिन मेरी बाद की पीढ़ी के लिए पत्रकारिता दिमाग का है। रही-सही कसर आज की एआई और चैटजीपीटी जैसे तकनीक ने पूरा कर दिया है। बरसों पहले मर चुकी संपादक संस्था के नए कारकून मोबाइल पर अपने डिमांड के अनुरूप स्टोरी लिखने को बोलते हैं और चट से 'बोलो मेरे आका' के अंदाज में वह सबकुछ दे देता है, जो आपको चाहिए। तकनीक की पत्रकारिता का यह खतरा हम सबके लिए खतरा बन चुका है। अब एक ही रास्ता है कि हम खुद को इस तकनीकी पत्रकारिता के ढाँचे में ढाल लें या इससे बाहर हो जाएँ। कोई तीन दशक पहले फोटोटाइप सेटर और इसके बाद कम्प्यूटर आया तो जो इसके हमसफर हो गए, वे तो बच गए लेकिन अनेक की पत्रकारिता आले पर रख दी गई। अब ओटले की पत्रकारिता होने लगी। हालात इतने खराब हो चुके हैं कि कभी समाज भरोसे के साथ कहता था कि-पढ़ा नहीं, फलां अखबार में छपा है और आज वही कहते हैं कि एक बार खबर को जाँच लेना। इन सबके बावजूद हमारे पुरखा बालकवि बैरागी जी कि यह पंक्ति बरबस याद आ जाती है- माना कि अंधेरा घना है,पर एक दीया जलाना कहाँ मना है!

(लेखक मीडिया शिक्षा से संबद्ध एवं अनुसंधान की पत्रिका 'समागम' के संपादक हैं)

हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष

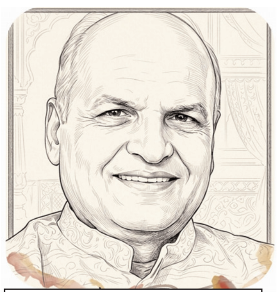

गिरीश पंकज

हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं. यह सूचना निस्संदेह रोमांच पैदा करती है. दो सौ वर्ष यानी दो शताब्दी ! पंडित (जुगल) युगलकिशोर शुक्ला ने जिस वक़्त (30 मई, 1826) कलकत्ता से 'उदंत मार्तण्ड' निकाला था, तो उस समय उन्हें स्वयं इस बात की कल्पना नहीं रही होगी कि वह इतिहास रच रहे हैं. अखबार भले ही लंबा नहीं चला, लेकिन उसका इतिहास काफी लंबा और उनका नाम कालजयी हो गया. आज हम उनके अवदान को याद कर रहे हैं और आत्म-मंथन भी कर रहे हैं कि 'हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी'. जिस लक्ष्य को लेकर पंडित शुक्ल ने समाचार पत्र का प्रकाशन किया था, वह लक्ष्य उनके जीते-जी तो पूरा नहीं हुआ, लेकिन उनकी वैचारिक लड़ाई निरंतर जारी रही. और अंततः परतंत्र राष्ट्र स्वतंत्र हुआ. स्वतंत्रता के संघर्ष में हिंदी पत्रकारिता की बड़ी भूमिका रही है. हिंदी पत्रकारिता के साथ-साथ भारतीय पत्रकारिता ने भी आहुति दी. हिंदी प्रदेश की पत्रकारिता प्राणपण से देश की आजादी का अलख जगाया. पं. माखनलाल चतुर्वेदी जैसे कुछ 'कर्मवीर' संपादक जेल भी जाते रहे. मगर उनकी कलम न कभी रुकी, न कभी झुकी. यही दर्शन पत्रकारिता की अस्मिता है. लेकिन समकालीन परिदृश्य में जब हम इस के भविष्य और इसकी चुनौतियों पर विचार करते हैं, तो दो बातें स्पष्ट रूप से सामने आती हैं. एक तो यह कि आज की पत्रकारिता तकनीकी दृष्टि से काफी समृद्ध हुई है. पत्र-पत्रिकाएँ बहुरंगी छपाई और आकर्षक साज-सज्जा के कारण बेहद दर्शनीय भी हुई हैं. छोटे-छोटे कसबों से भी अब नयनाभिराम पत्रिकाएँ निकल रही हैं. लेकिन नैतिक दृष्टि से उनका पतन स्पष्ट दीखता है. पहले अखबार संपादक के हुआ करते थे. मालिक भी संपादक पर अंकुश नहीं लाद सकता था. सौ बार सोचता था. लेकिन दुर्भाग्य है कि अब अखबार संपादक का नहीं रहा. वह विशुद्ध रूप से प्रकाशक-मालिक और 'सीईओ' नामक नई प्रजाति का होकर रह गया है. संपादक तो केवल कठपुतली है. अब हम ऐसे संपादक भी देख रहे हैं, जिनका लिखने-पढ़ने से कोई वास्ता ही नहीं. उनका काम है अखबार की 'लाइज़िनिंग' करना. अब एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी कृत्रिम मेधा) के दौर में अनेक संपादक या तो उसके सहारे लेखन कर रहे हैं या फिर अधीनस्थ को काम सौंप कर मालिकों की दलाली में लगे हैं. सक्रिय पत्रकारिता में लम्बी पारी खेलने के कारण ऐसे कुछ संपादकों को मैं व्यक्तिगत तौर पर भी जानता हूँ. ये लोग सत्ता की गोद में बैठकर मालिकों के व्यवसाय का संरक्षण और उसके बहाने अपना भरण-पोषण बखूबी कर रहे हैं. ऐसे संपादक अपने अखबार में धारदार बातें तो लिखते हैं मगर पर्दे के पीछे उनका खेल कुछ और होता है. यह चरित्र पत्रकारिता की गंगा को मैला करने का काम करता है. लेकिन इतनी गंभीरता के साथ सोचता कौन है?

शुचिता ही बड़ी चुनौती!

पत्रकारिता के सामने इस समय सर्वाधिक बड़ी चुनौती शुचिता, नैतिकता या मूल्यपरकता को लेकर है. पत्रकारिता का लक्ष्य रहा है ईमानदारी के साथ सत्य का उद्घाटन. लेकिन क्या वर्तमान प्रदेश में सत्य के उद्घाटित करने की स्थितियाँ रह गई हैं? पत्रकारिता को स्वतंत्र सत्ता के रूप में दिखाने की कोशिश तो होती है. कह दिया जाता है कि लोकतंत्र का चौथा पाया है, स्तम्भ है. लेकिन जैसे ही यह लोकसत्ता दूसरी निर्वाचित सत्ता या व्यवस्था पर ऊँगली उठाने लगती है, तो फिर इस सत्ता का दमन किया जाने लगता है. कभी विज्ञापन रोककर, कभी किसी और तरीके से. अगर किसी संपादक ने व्यवस्था-विरोधी लेखन किया, तो उसे 'बाहर' का रास्ता भी मालिक दिखा देता है. क्योंकि उसे अपने बहुत सारे हित साधने होते हैं. जल में रहकर मगर से बैर नहीं किया जा सकता. दुर्भाग्य की बात यही है कि हिंदी पत्रकारिता की मछली मगरमच्छों से घिर चुकी है. उसके सामने अस्तित्व का संकट आन पड़ा है. अगर व्यवस्था से जूझती है तो उसकी लड़ाई लंबी नहीं चल पाती. वह टूट जाती है.परिणाम यही होता है कि उसे 'राग दरबारी' गाना ही पड़ता है. इस समय हिंदी पत्रकारिता में यही 'राग' बड़ा 'लोकप्रिय' है. जो सम्पादक इस कला में माहिर है, वह सुखी है,वैभवशाली है.गरीबों की बात करते हुए अमीरों जैसा वैभवशाली जीवन जी रहा है.

क्या हो उबरने की राह?

सामने चुनौतियाँ तो हैं,लेकिन उसको लेकर रोना-धोना कब तक किया जाए? इससे उबरने का उपाय हमें सोचना चाहिए. और उपाय यही है कि पत्रकारिता

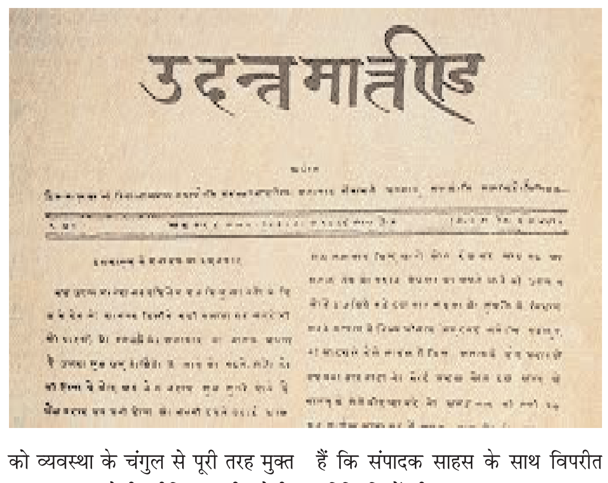
उदन्तमार्तण्ड

को व्यवस्था के चंगुल से पूरी तरह मुक्त करना. एक ऐसी नीति बनानी होगी, जिसके तहत अखबारों को व्यवस्था के विरुद्ध आलोचना का पूरा अधिकार होगा. कोई भी समाचार पत्र किसी भी सरकार के विरुद्ध खुलकर लिखने के लिए स्वतंत्र रहे. (बस ध्यान रहे कि देश विरोधी बातें नहीं होनी चाहिए) इस समय एक प्रवृत्ति में लगातार देख रहा हूँ कि किसी अख़बार ने सरकार को आईना दिखाने की कोशिश की, तो उसके विरुद्ध 'एफआईआर' दर्ज करके उसे परेशान करना शुरू कर दिया जाता है. यह खेल पूरी तरह से बंद होना चाहिए. दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को पाखंड से ऊपर उठना चाहिए. जब वे विपक्ष में होते हैं तब प्रेस स्वतंत्रता की बात करते हैं लेकिन जैसे ही है सत्ता के रथ पर सवार होते हैं, सबसे पहले प्रेस पर अंकुश लगाने की मानसिकता में आ जाते हैं. समाचार पत्र का काम ही है दर्पण दिखाना.लेकिन सत्ता दर्पण को तोड़ने पर आमादा रहती है. यही कारण है कि बहुत से सच सामने नहीं आ पाते. आजादी के दौर में भी उस समय के अखबार अगर जनहित का कोई मुद्दा उठाते थे तो कभी-कभी उनकी बातों को महत्व मिलता था और सुधार हो जाता था. माखनलाल चतुर्वेदी ने एक बार जब सागर के पास कहीं कसाईखाना खुलने की तैयारी पर अखबार में खबर प्रकाशित की तो बाद में वह निर्णय रद्द कर दिया गया. यह उदाहरण भर है, जिससे हम समझ सकते हैं कि संपादक साहस के साथ विपरीत परिस्थिति में भी कलम चलाता था. आज हम देख रहे हैं कि गौ मांस का निर्यात निरंतर बढ़ता जा रहा है.क्या इसके विरुद्ध सभी अखबारों में एक अभियान के तहत नहीं लिखा जाना चाहिए? कभी इस देश में दूध-घी की नदियाँ बहा करती थी. गौ माता हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हुआ करती थी. लेकिन वही अब कट रही है. उसका मांस निर्यात किया जा रहा है. जब तक पत्रकारिता को स्वतंत्र रखने की मानसिकता विकसित नहीं होगी, स्वस्थ पत्रकारिता का मार्ग हमेशा अवरोध रहेगा. संपादक नाम की सत्ता का पुनरोदय होना चाहिए. अब तो महाप्राण संपादक नजर भी नहीं आते. आएँ भी कैसे, ज्यादातर संपादकों में साहित्य के प्रति कोई रुचि ही नहीं. एक दौर था जब हिंदी पत्रकारिता में सक्रिय संपादक और पत्रकार कवि-साहित्यकार भी हुआ करते थे, इसलिए उनकी लेखनी में तेजस्विता नजर आती थी. पर अब तो इधर के संपादक साहित्य का नाम सुनकर बिदकने लगते हैं. वे समझना ही नहीं चाहते कि पत्रकारिता और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. पत्रकारिता अंशकालिक साहित्य है, और साहित्य दीर्घकालिक पत्रकारिता. साहित्य में रमा हुआ संपादक अपनी अलंकारिक भाषा से लोगों का दिल जीत सकता है. जैसा अपने समय के कुछ संपादक करते रहें. माखनलाल चतुर्वेदी, गणेशशंकर विद्यार्थी से होती हुई है परंपरा अज्ञेय, रघुवीर सहाय, राजेंद्र माथुर, कन्हैयालाल नंदन और प्रभाष जोशी तक जारी रही. पत्रकारिता को राग-द्वेष और पक्ष-विपक्ष से परे होकर जनपक्षधरता के साथ खड़ा होना चाहिए. मुझे लगता है कि इन दो सौ सालों की पत्रकारिता को फिर से मूल्यवान बनाने के लिए इन्हीं सब बातों पर गंभीरतापूर्वक विमर्श करना चाहिए कि आने वाले समय में हिंदी पत्रकारिता क्या अपनी अस्मिता को पूरी तरह बचा सकेगी? कहने को तो हमारा देश आजाद हो चुका है और अब तो आज़ाद हुए अस्सी साल भी होने आए हैं, लेकिन आज भी पत्रकारिता के दमन का सिलसिला निरंतर चलता रहता है.और सर्वाधिक दमन चुनी हुई राजसत्ताएं करती हैं.सरकार किसी भी दल की हो, लेकिन अनुभव यही है कि जब कभी किसी अखबार में सत्ता की तरफ उंगली उठाई, तो उंगली को तोड़ने की कोशिश होती है. कभी सीधे-सीधे हमला होता है, तो कभी परोक्ष रूप से. यह पिछले कुछ दशकों से निरंतर जारी है. मुझे नहीं लगता कि आने वाले समय में स्थिति कुछ बेहतर होगी. राजनेताओं की निरंकुश मानसिकता के कारण सच लिखना धीरे-धीरे कठिन होता जा रहा है. आप पर्यावरण की समस्या पर लिख लीजिए, जादू-टोने की समस्या पर लिखिए, कोई दिक्कत नहीं है.खाड़ी युद्ध पर धमाकेदार कलम चलाइए, सब चलेगा-दौड़ेगा, लेकिन जैसे ही आपने किसी दल विशेष की सरकार के खिलाफ लिखना शुरू किया, तो उस अखबार की खटिया खड़ी करने की कोशिश शुरू हो जाती है. सबसे पहले उसका सरकारी विज्ञापन बंद किया जाता है. आजादी का अर्थ तो यह है कि जहाँ कहीं राजनीतिक विसंगति दिखाई दे,अखबार उस पर खुलकर लिखें. हाँ,व्यक्तिगत टिप्पणियों से अखबारों को बचाना चाहिए. जब तक आपके पास प्रमाण न हो, किसी भी राजनेता या किसी भी व्यक्ति के बारे में कोई खबर नहीं लिखी जानी चाहिए.यह सीधे-सीधे मानहानि का मामला बनता है. लेकिन अगर मामले में सच्चाई है तो बेबाकी के साथ खबर लिखी जानी चाहिए.परंतु ऐसी खबरों को भी लोग पचा नहीं पाते. इसमें दो राय नहीं कि धीरे-धीरे पत्रकारिता पर कॉरपोरेट संस्कृति का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है. पत्रिका का कलेवर और सोच भी कॉर्पोरेट जैसा बनता जा रहा है.अब अखबार एक उत्पाद की तरह बेचे जा रहे हैं. पहले अखबार वैचारिक मिशन के रूप में प्रकाशित हुआ करते थे, इसलिए उनमें कुछ मूल्य नजर आया करते थे.

आजादी के आठ दशक हो रहे हैं, उसके बावजूद असंख्य गांव अभी भी बदहाली के शिकार हैं. कह सकते हैं कि जहाँ के तहाँ है. इन गांवों तक पत्रकारिता की दृष्टि पहुंचनी चाहिए, और यह संकल्प भी लेना चाहिए की प्रतिदिन किसी न किसी गांव की समस्याओं पर एक रपट प्रकाशित की जाएगी. ग्रामीण रिपोर्टिंग लगभग खत्म हो रही है. अगर हर अखबार गाँवों की रिपोर्टिंग का संकल्प ले ले, तो मुझे लगता है सन 2047 तक आते-आते गांवों का कायाकल्प हो सकता है. पत्रकारिता की चिंता में अगर गांव आ जाए, तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी. हम सब की चिंता में शहरी विकास अधिक रहता है. गाँव की हम की अनदेखी कर देते हैं.

चुप्पी का चक्रव्यूह और बलिवेदी बनते मंडप

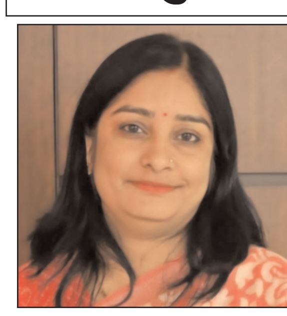

डॉ. भारती यादव मेधा

एक ओर हम अंतरिक्ष फतह करने, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बूते दुनिया बदलने और डिजिटल क्रांति के शिखर को छूने का दावा करते हैं वहीं दूसरी ओर इस तथाकथित आधुनिकता के पीछे से एक क्रूर सच भी देख रहे है। यह सच हमारे सभ्य होने के तमाम दावों का उपहास उड़ाता है। जब भी समाचारों की सुर्खियों में भोपाल का ट्विशा शर्मा मामला या उसके जैसी किसी पढ़ी-लिखी, सक्षम बेटी की प्रताड़ना और संदेहास्पद मौत की खबर आती है तो वह समाज की सामूहिक चेतना पर एक गहरा घाव और कई तीखे सवाल छोड़ जाती है।

आज विवाह जैसा पवित्र और आत्मीय संबंध एक शुद्ध व्यावसायिक सौदे में बदल चुका है। शादियों का पैमाना अब इस बात से तय नहीं होता कि दो दिलों और परिवारों का मिलन कैसा है बल्कि इससे होता है कि मैरिज गार्डन कितना आलीशान है, मैन्यू में कितने सौ व्यंजन हैं और विदाई में कौन सी महँगी गाड़ी दी जा रही है। स्टेटस सिंबल और तड़क-भड़क की इस अंधी दौड़ में मानवीय संवेदनाएं, स्त्री की गरिमा और आपसी सम्मान कहीं बहुत पीछे छूट जाते हैं।

? हैरानी की बात यह है कि यह दमन केवल अशिक्षित या आर्थिक रूप से कमज़ोर तबके तक सीमित नहीं है। आज उच्च शिक्षित और रसूखदार परिवारों में भी बेटियाँ सुरक्षित नहीं हैं। विडंबना ही है जिस देश में महिलाओं को आर्थिक साक्षरता और वित्तीय आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने के बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हों वहां आज भी एक सक्षम और आत्मनिर्भर महिला अपने ही घर की चारदीवारी के भीतर खुद को नितांत असहाय पाती है। ट्विशा जैसी कितनी ही बेटियां आज भी हमारे आस-पास के बंद कमरों में खौफ के साए में जी रही हैं। वे रोज इस उम्मीद में जागती हैं कि शायद आज परिस्थितियां बदलेंगी, शायद आज उनके आत्मसम्मान को ठेस नहीं पहुंचेगी लेकिन वह शायद कभी सच नहीं होता।

सबसे दुखद पहलू यह है कि इस मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना के खेल में लड़की का मायका पक्ष भी अनजाने में अपराधियों का मददगार बन जाता है। समाज और चार लोग क्या कहेंगे के खौफ में बेटियों को आत्मघाती सहनशीलता का पाठ पढ़ाया जाता है। अक्सर जब कोई बेटी ससुराल में हो रही प्रताड़ना की शिकायत अपने माता-पिता से करती है तो उसे ढांढस बंधाने और सुरक्षा देने के बजाय समझौता करने की आत्मघाती सलाह दी जाती है। शुरुआत में ऐसा होता है, समय के साथ सब ठीक हो जाएगा या समाज में हमारी नाक कट जाएगी जैसी खोखली बातों से बेटी को वापस उसी दलदल में धकेल दिया जाता है।

हमें यह समझना होगा कि सामाजिक प्रतिष्ठा किसी बेटी की जान से बढ़कर नहीं हो सकती। जिस दिन माता-पिता समाज के डर को छोड़कर अपनी बेटी के स्वाभिमान के साथ चट्टान की तरह खड़े होना सीख जाएंगे उसी दिन ऐसी क्रूर घटनाओं पर आधा विराम लग जाएगा। इस सामाजिक महामारी में जितना बड़ा अपराध प्रताड़ित करने वालों का है, उतना ही बड़ा अपराध समाज की मूक खामोशी का भी है। पड़ोसी और रिश्तेदार सब कुछ जानते हुए भी पारिवारिक मामला कहकर मुंह फेर लेते हैं। यही चुप्पी दोषियों के हौसले बढ़ाती है।

अब समय आ गया है कि इस चुप्पी के चक्रव्यूह को हर स्तर पर तोड़ा जाए। हमें अपनी बेटियों को त्याग और समझौते की मूरत बनाने के बजाय उन्हें अपनी रक्षा और अधिकारों के लिए मुखर होना सिखाना होगा। बेटियों को सिर्फ विदा करने या किसी दूसरे घर की शोभा बढ़ाने के लिए मत पढ़ाइए ,उन्हें मानसिक और आत्मिक रूप से इतना दृढ़ बनाइए कि वे गलत के सामने झुकने के बजाय सीना तानकर खड़ी हो सकें। इसके साथ ही इस सामाजिक बीमारी का इलाज केवल अदालती फैसलों से नहीं होगा , हर घर की सोच को बदलना होगा इसके लिए हमें अपने बेटों को यह सिखाना होगा कि पत्नी कोई जागीर, दासी या धन वसूलने का जरिया नहीं है। समाज को भी आगे आकर ऐसे परिवारों का सामाजिक बहिष्कार करना होगा जो शादियों को व्यापार बनाते हैं और बहुओं को प्रताड़ित करते हैं।

ट्विशा का मामला हर माता-पिता और इस खोखले समाज के लिए एक कड़वी चेतावनी है। ब्याह कर भेजी गई हर बेटी के मन में यह अटूट विश्वास होना चाहिए कि परिस्थितियां बिगड़ने पर उसके मायके के दरवाजे और उसके माता-पिता की बाहें उसके लिए हमेशा खुली हैं। समाज को यह कड़वी हकीकत स्वीकार करनी ही होगी कि सफेद कफ़न में लिपटी एक खामोश लाश बन जाने से कहीं बेहतर है कि बेटी जीवित रहे, संघर्ष करे, अपने अस्तित्व के लिए लड़े और यदि आवश्यक हो तो तलाकशुदा बनकर समाज के सामने सीना तानकर खड़ी रहे।

कानून अदालतों और थानों में अपना काम करता रहेगा लेकिन जब तक हम अपनी सामाजिक और मानसिक सोच को नहीं बदलेंगे तब तक शादियों के मंडप इसी तरह बेटियों की बलिवेदी बनते रहेंगे। न्याय की शुरुआत पहले हर घर की सोच बदलने से होनी चाहिए।

'सजाकर जिसे विदा किया,
वो लाश बनके न लौट आए,
दहेज के भूखे भेड़ियों के,
आगे वो घुटने न टेक पाए।
समाज के डर और शर्म लाज से,
घुट-घुट के मरना मंजूर नहीं,
सफेद कफ़न से बेहतर है,
सीना तान कर बेटी संघर्ष कर जाए।

बोध कथा

परमात्मा की आवाज

एक व्यक्ति को रास्ते में यमराज मिल गए वो व्यक्ति उन्हें पहचान नहीं सका। यमराज ने पीने के लिए पानी मांगा उस व्यक्ति ने उन्हें पानी पिलाया। पानी पीने के बाद यमराज ने बताया कि वो उसके प्राण लेने आए हैं लेकिन चूँकि तुमने मेरी प्यास बुझाई है इसलिए मैं तुम्हें अपनी किस्मत बदलने का एक मौका देता हूं। यह कहकर यमराज ने उसे एक डायरी देकर कहा तुम्हारे पास 5 मिनट का समय है। इसमें तुम जो भी लिखोगे वही होगा, लेकिन ध्यान रहे केवल 5 मिनट। उस व्यक्ति ने डायरी खोलकर देखा तो पहले पेज पर लिखा था कि उसके पड़ोसी की लॉटरी निकलने वाली है और वह करोड़पति बनने वाला है। उसने वहां लिख दिया कि पड़ोसी की लॉटरी न निकले। अगले पेज पर लिखा था उसका एक दोस्त चुनाव जीतकर मंत्री बनने वाला है उसने लिख दिया कि वह चुनाव हार जाए। इसी तरह वह पेज पलटता रहा और अंत में उसे अपना पेज दिखाई दिया। जैसे ही उसने कुछ लिखने के लिए अपना पैन उठाया यमराज ने उसके हाथों से डायरी ले ली और कहा वत्स! तुम्हारा 5 मिनट का समय पूरा हुआ, अब कुछ नहीं हो सकता। तुमने अपना पूरा समय दूसरों का बुरा करने में निकाल दिया और अपना जीवन खतरे में डाल दिया। अतः तुम्हारा अन्त निश्चित है। यह सुनकर वह व्यक्ति बहुत पछताया लेकिन सुनहरा समय निकल चुका था। अब उसके पास सिवाए पछतावे के अलावा कुछ नहीं था। यही स्थिति आज समाज में ज्यादातर लोगों की है। आज दुख का कारण यही है कि व्यक्ति अपने अवगुणों, बुराइयों, कमी-कमजोरियों को देखने के बजाय दूसरों के अवगुणों को देखने में ही लगा रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता है। इसलिए जितना हो सके अपना समय परमात्मा के ध्यान, परमात्म ज्ञान को जीवन में उतारने और खुद को महान, श्रेष्ठ बनाने में लगाएं।

तीर तेवर — सागर कुमार

व्यंग्य केसरी

एक्सीडेंटल साहित्यकार

विनोद कुमार विक्की

कहने को तो वे स्वघोषित साहित्यकार हैं, किंतु मन, वचन और कर्म से विशुद्ध राजनेता या राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता होते हैं। कलम उनके हाथ में अवश्य रहती है, पर स्याही में विचार कम और विचारधारा अधिक घुली रहती है।

साहित्य जगत में भले ही उन्होंने लेखक, संपादक अथवा आलोचक का साहित्यिक पदभार संभाल रखा है, लेकिन चाल-चरित्र और लक्षण से वे खाँटी पार्टी-कार्यकर्ता ही नजर आते हैं। सामान्य अर्थ में उन्हें 'एक्सीडेंटल राइटर' कहा जा सकता है।

एक्सीडेंटल राइटर की दिनचर्या बड़ी अनुशासित है। सुबह आँख खुलते ही राष्ट्र, समाज और पार्टी— तीनों की चिंता उनके अंगूठे में समा जाती है, जो सीधे मोबाइल स्क्रीन पर प्रकट होती है। रात को नींद की आगोश में जाने तक उनका 'राजनीति प्रेरित साहित्यिक सृजन' फेसबुक, ट्विटर और व्हाट्सऐप पर निरंतर प्रवाहित होता रहता है।

उनके मित्र और अनुयायी हमेशा दुविधा में रहते हैं कि वे किसी साहित्य शिरोमणि को फॉलो कर रहे हैं या किसी दल विशेष के आईटी सेल के समर्पित योद्धा को।

उनकी साहित्यिक रुचि भी बड़ी चयनात्मक है। वे साहित्य या साहित्यकारों के गुणगान से अधिक अपने प्रिय खद्दरधारी नेताओं के यशोगान में व्यस्त रहते हैं। माननीय के प्रत्येक कथन में उन्हें काव्य दिखाई देता है और हर निर्णय में महाकाव्य का बीज नजर आता है। दूसरी पार्टियों की आलोचना उनके लिए व्यंग्य लेखन का सशक्त माध्यम है, जिसमें तर्क से अधिक तंज और तथ्य से अधिक भावनाएँ काम करती हैं।

उनके पोस्ट पर टिप्पणियों का संसार भी कम रोचक नहीं होता। एक्सीडेंटल साहित्यकारों की दूसरी प्रजातियों द्वारा उनके चहेते नेता जी अथवा उनकी पार्टी के विरोध में लिखी गई टिप्पणी उन्हें असाहित्यिक लगती है। विपक्षी विचारधारा वाले मित्र के टिप्पणी करने भर की देर है, तत्काल सोशल मीडिया संग्राम शुरू हो जाता है। यहाँ तीर शब्दों के होते हैं और ढाल इमोजी की। देखते ही देखते बहस का स्तर साहित्य से उतरकर सीधे राजनीतिक अखाड़े में पहुँच जाता है, जहाँ एक पक्ष वाले स्वयं को कृष्ण-अर्जुन और सामने वाले को दुर्योधन-शकुनि समझने लगता है। राजनीतिक पोस्ट पर चलने वाले वाद-विवाद कार्यक्रम का उसी निष्ठा से निर्वाह किया जाता है, जैसा साहित्यिक संगोष्ठी और संवाद का।

यह और बात है कि कभी-कभी विवाद के दौरान गाली-गलौज तक की अमर्यादित और असाहित्यिक शब्दों का भी प्रयोग करना पड़ जाता है।

अब यदि एक्सीडेंटल साहित्यकार के साहित्य सृजन की बात करें, तो जिस प्रकार नेता जी चुनाव के बीच जनता से मिलने का समय निकाल लेते हैं। ठीक वैसे ही राजनीति की व्यस्तताओं के बीच वे साहित्य सृजन का भी समय निकाल लेते हैं। समय-समय पर कोई कविता, कोई लघु लेख या कोई व्यंग्य लिखकर वे अपने साहित्यिक अस्तित्व का 'रिन्यूअल' कर लेते हैं, ताकि दुनिया को यह याद रहे कि वे केवल कार्यकर्ता नहीं, बल्कि साहित्यकार भी हैं।

इतिहास

29 मई को भारतीय और विश्व इतिहास में माउंट एवरेस्ट फतह करने, एवरेस्ट दिवस, अंतरिक्ष अन्वेषण और नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिकों के जन्म से जुड़ी कई प्रमुख घटनाएं दर्ज हैं।29 मई की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएंमाउंट एवरेस्ट विजय (1953): न्यूजीलैंड के एडमंड हिलेरी (Edmund Hillary) और नेपाल के शेरपा तेनजिंग नोर्गे (Tenzing Norgay) ने पहली बार माउंट एवरेस्ट की चोटी पर सफलतापूर्वक कदम रखा। अंतर्राष्ट्रीय एवरेस्ट दिवस (2008): हिलेरी और तेनजिंग की ऐतिहासिक उपलब्धि को सम्मानित करने के लिए हर साल 29 मई को अंतर्राष्ट्रीय एवरेस्ट दिवस मनाया जाता है।अंतरिक्ष की खोज (1990): नासा (NASA) द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गए हबल स्पेस टेलीस्कोप (Hubble Space Telescope) ने पहली बार किसी तारे की स्पष्ट तस्वीर पृथ्वी पर भेजी थी।

संक्षिप्त खबरें

डीएपी के नाम पर किसानों से ठगी की कोशिश नाकाम

जशपुर। किसानों के हितों की सुरक्षा और कृषि आदानों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए जशपुर जिला प्रशासन द्वारा लगातार सघन निगरानी की जा रही है। इसी क्रम में कृषि विभाग पत्थलगांव एवं फरसाबहार की संयुक्त टीम ने विकासखंड फरसाबहार के ग्राम पंचायत खारीबहार में बड़ी छापामार कार्रवाई करते हुए अवैध उर्वरक भंडारण का खुलासा किया है।

डीएपी के नाम पर किसानों से ठगी की कोशिश नाकाम, कृषि विभाग की बड़ी कार्रवाईसंयुक्त टीम द्वारा की गई जांच के दौरान एक मकान में भारी मात्रा में उर्वरक का अवैध भंडारण पाया गया। कार्रवाई के दौरान कुल 342 बोरी, लगभग 17.1 टन भूमि शक्ति ऑर्गेनिक ग्रेन्युलर उर्वरक बरामद किया गया। प्रारंभिक जांच में यह सामने आया कि उक्त उर्वरक को किसानों के बीच डीएपी खाद के नाम पर बेचा जा रहा था, जिससे किसानों को भ्रमित कर आर्थिक नुकसान पहुंचाने की आशंका थी।

नगरीय निकाय का पहला जन समस्या निवारण शिविर पेण्ड्रा में आयोजित

गौरेला/पेंड्रा/मरवाही। सुशासन तिहार के दौरान नगरीय निकाय क्षेत्र में पहला जन समस्या निवारण शिविर आज मल्टी परपज स्कूल पेण्ड्रा के असेम्बली हॉल में आयोजित किया गया। शिविर के माध्यम से नगरीय क्षेत्र में संचालित सभी योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई। साथ ही मांगो एवं शिकायतों से संबंधित आवेदनों का निराकरण किया गया। नगर पालिका परिषद पेण्ड्रा के अध्यक्ष राकेश जलान द्वारा प्रधानमंत्री आवास स्वीकृति के लिए सीएमओ कार्यालय के कर्मचारी द्वारा हितग्राही से राशि मांगने की शिकायत पर कलेक्टर डॉ. संतोष कुमार देवांगन ने मुख्य नगर पालिका अधिकारी को तत्काल जांच कराने और गड़बड़ी पाए जाने पर संबंधित के विरुध्द कार्रवाई करने के निर्देश दिए। श्री जलान ने जन कल्याणकारी योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं जन जागरुकता के लिए सभी वार्डो में कैंप लगाने कहा। उन्होंने आवास हेतु मांग पर विशेष ध्यान केन्द्रीत करते हुए पानी बचाने और अधिक से अधिक पेड़ लगाने नागरिकों से अपील की। शिविर में आवास, बिजली, पशु पालन सहित विभिन्न मांगो के निराकरण के बारे में संबंधित विभागों द्वारा आवेदकों को बताया गया। विभागीय स्टॉलों के माध्यम से स्वास्थ्य परीक्षण, औषधि वितरण, ई-केवाईसी सहित विभिन्न योजनाओं के तहत हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया। महिला एवं बाल विकास विभाग की योजना के तहत दस गर्भवती महिलाओं की गोद भराई एवं आठ नन्हें बच्चों का अन्नप्राशन कराया गया साथ ही नोनी सुरक्षा एवं सुकन्या समृध्दि योजना के तहत 26 बच्चों को लाभान्वित किया गया।

आपत्तिजनक हालत में पकड़े गए एक बच्चे की मां और युवक

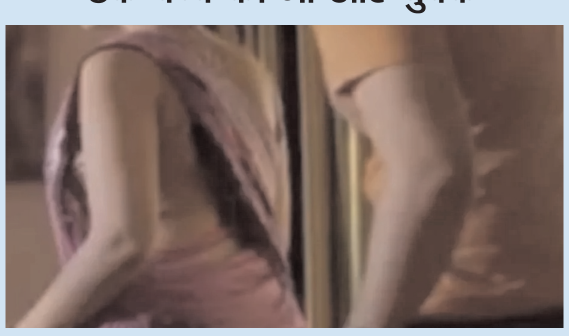

कोरबा। कोरबा के रिसदा बस्ती में गुरुवार को उस समय हंगामा मच गया जब एक महिला और एक युवक को आपत्तिजनक हालत में देखा गया। घटना का वीडियो सामने आने के बाद इलाके में भारी आक्रोश फैल गया। लोगों ने युवक को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह बाइक छोड़कर मौके से फरार हो गया। स्थानीय लोगों का आरोप है कि युवक अक्सर महिला के घर आता था और इसका विरोध करने पर विवाद और मारपीट की स्थिति बन जाती थी। इससे बस्ती का माहौल खराब होने की बात कही जा रही है। मामले में सीएसपी प्रतीक चतुर्वेदी ने बताया कि शिकायत मिल चुकी है और लोगों के बयान दर्ज किए गए हैं। पुलिस ने मौके से युवक की बाइक बरामद कर ली है और उसकी तलाश जारी है।

70 विशेष बच्चों को 30 शिक्षकों ने दिया विशेष प्रशिक्षण

वाणी वाचन केंद्र में विशेष बच्चों के समर कैंप का समापन

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा ने सप्रे स्कूल प्रांगण स्थित छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा दिव्यांग बच्चों के लिए संचालित वाणी वाचन केंद्र (विशेष विद्यालय) में आयोजित समर कैंप के समापन समारोह में शामिल होकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। इस दौरान उन्होंने 70 दिव्यांग बच्चों को प्रशस्ति पत्र वितरित किए और उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. शर्मा ने संस्था में संचालित स्पीच थेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी, रेमेडियल थेरेपी, मनोचिकित्सा एवं फिजियोथेरेपी से जुड़ी विभिन्न मशीनों, सेंसरी रूम और एडीएचडी सेंटर के निर्माण स्थल का अवलोकन किया। उन्होंने बच्चों को दी जा रही विशेष सुविधाओं और प्रशिक्षण व्यवस्थाओं की सराहना की।

इस अवसर पर बाल कल्याण परिषद की ओर से डॉ. वर्णिका शर्मा का सम्मान भी किया गया।

डॉ. शर्मा ने कहा कि दिव्यांग बच्चों के जज्बे और प्रतिभा को नई दिशा देना हम सभी का दायित्व है। जिन क्षेत्रों में बच्चों की विशेष रुचि हो, उन्हें आगे बढ़ाने के लिए परिवार और समाज को सहयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 70 दिव्यांग बच्चों को 30 से अधिक शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित किया जाना सराहनीय पहल है। राजधानी रायपुर में छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा संचालित वाणी वाचन बहु प्रशिक्षण पुनर्वास केंद्र में विशेष थेरेपी ले रहे बच्चों से उन्होंने आत्मीय मुलाकात भी की।

डॉ. शर्मा ने कहा कि जैसे भगवान को विशेष कृपा के लिए विशेष पुष्प अर्पित किए जाते हैं, उसी प्रकार ये विशेष बच्चे भी ईश्वर की विशेष रचना हैं। इनके पालन-पोषण और देखभाल के लिए संवेदनशीलता, धैर्य और समर्पण की आवश्यकता होती है।

उन्होंने दिव्यांग बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए कार्य कर रहे बाल कल्याण परिषद के पदाधिकारियों, सदस्यों और थैरेपिस्टों के प्रयासों की सराहना करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. कमल वर्मा, महासचिव चंद्रेश शाह, कोषाध्यक्ष इंदिरा जैन, संयुक्त सचिव राजेंद्र निगम, कार्यकारिणी सदस्य सुनीता चंसोरिया, अधीक्षक पूजा मिसालवार, प्राचार्य विमला यादव सहित सभी थैरेपिस्ट उपस्थित रहे।

फर्जी सर्कुलर से जीता केस

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट में एक बेहद अनोखा मामला सामने आया है, जहां अदालत को अपना ही फैसला वापस लेना पड़ा। मामला एक महिला चिकित्सक द्वारा नियमितिकरण की मांग को लेकर दायर याचिका से जुड़ा है, जिसमें कथित तौर पर फर्जी सरकारी सर्कुलर के आधार पर अदालत से राहत हासिल कर ली गई थी। बाद में सर्कुलर के फर्जी होने का खुलासा होने पर महिला चिकित्सक ने खुद हाई कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दायर कर अपनी गलती स्वीकार की और माफी मांगी। जानकारी के अनुसार, बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के मोपका प्राथमिक स्वास्थ्य आयुष केंद्र में संविदा आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्यरत डॉ. ममता मिश्रा ने नियमितिकरण की मांग को लेकर हाई कोर्ट में याचिका दायर की थी। याचिका के साथ 28 मई 2010 का एक सरकारी सर्कुलर प्रस्तुत किया गया था, जिसमें संविदा कर्मचारियों के नियमितिकरण पर विचार करने का उल्लेख था।

सोलर पंप की खराबी तत्काल दूर कर बहाल की गई जलापूर्ति

कांकेर। कांकेर जिला प्रशासन ने दुर्गूकोंदल विकासखण्ड के ग्राम महेन्द्रपुर में स्थापित सोलर पंप के खराब होने की खबर मिलते ही मोटर पंप को तत्काल सुधारकर कार्यशील कर दिया है। ग्रामवासियों को निर्बाध पेयजल की आपूर्ति हो रही है।

छत्तीसगढ़ राज्य अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण (क्रेडा) के सहायक अभियंता डी.एस. सिदार ने बताया कि महेन्द्रपुर में वर्ष 2013 में क्रेडा द्वारा सोलर ड्यूल पंप की स्थापना की गई है। इस संयंत्र के अकार्यशील होने की जानकारी मिलने पर क्रेडा के उप अभियंता एवं मैकेनिक द्वारा स्थल का निरीक्षण किया गया, जिसमें मोटर पंप खराब पाया गया। क्रेडा की टीम ने तत्काल मोटर पंप की मरम्मत तथा केबल, रोप वायर एवं पाइप सहित अन्य सहायक सामग्रियों को बदलकर संयंत्र को पुनः कार्यशील किया। अभी सोलर पंप सुचारू रूप से संचालित हो रहा है और ग्रामीणों को नियमित पेयजल मिल रहा है।

तेंदूपत्ता अग्निकांड : डीएफओ को हटाने के बाद उठे सवाल, बाकी दोषियों पर कब होगी कार्रवाई?

बीजापुर। जिला मुख्यालय से लगे ग्राम ईटपाल स्थित तेंदूपता गोदाम में आग लगने से लगभग 25 हजार मानक बोरा यानि 8-10 करोड़ का तेंदूपत्ता जलकर पूरी तरह खाक हो गया था। इससे सरकार को बड़ा नुकसान हुआ। मामले पर गंभीरता दिखाते हुए प्रदेश के वन मंत्री केदार कश्यप ने बीजापुर वनमंडलाधिकारी रमेश जांगड़े को हटा दिया है। वहीं मामले की जांच कर बाकी दोषियों पर भी जल्द कार्रवाई की बात कही है।

वहीं इस मामले में डीएफओ को हटाने के बाद अन्य लापरवाही बरतने वाले जिम्मेदार अधिकारियों और कर्मचारियों पर कार्रवाई में देरी से कई सवाल उठ रहे। जिस वक्त आग की चिंगारी तेंदूपतों में लगी उस वक्त पर विभाग के जिम्मेदार अफसर कहां थे? चूंकि उठाई-ढुलाई का कार्य उक्त स्थान पर चल रहा था। गोदाम में तेंदूपतों बोरों को रखने की तैयारी से पहले विभाग द्वारा आग बुझाने के उपकरणों की पर्याप्त व्यवस्था आखरी क्यों नहीं की गई?

नौकरी बचाने भाजपा नेताओं से मिल रहे अधिकारी-कर्मचारी

सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार घटना में संलिप्त निचले स्तर के अधिकारी और कर्मचारी अपनी साख व नौकरी बचाने के उद्देश्य से अब सरकार के छुटभैय्या नेताओं के घरों व सर्किट हाउस का दौड़ लगाते नजर आ रहे हैं। क्या तेंदूपत्ता अग्निकांड मामले में सरकार के मंत्री द्वारा कार्रवाई के बाद क्या मामले में संलिप्त अन्य निचले अधिकारियों व कर्मचारियों पर आगे कार्रवाई होगी या यह मामला केवल यहीं तक सीमित होकर रह जाएगा? ये तो आने वाले समय पर ही पता चलेगा।

शुक्रवार को छत्तीसगढ़ के लघुवनोपज सहकारी समिति के अध्यक्ष रूपसाय सलाम अचानक बीजापुर पहुंचे और ईटपाल तेंदूपत्ता गोदाम का निरीक्षण किया। इस दौरान सलाम ने कहा, इस मामले पर विभागीय व पुलिस की ओर से जांच की जा रही है। डीएफओ पर कार्रवाई किस प्रकार से हुई है, इसका अंदाजा हमें तो नहीं है पर इसमें जो कोई भी हो चाहे निचले स्तर के अधिकारी हो या बाहरी हो, जो भी दोषी पाया जाएगा उन पर कार्रवाई अवश्य होगी।

घुमका नगर पंचायत चुनाव में कांग्रेस ने झोंकी ताकत

भूपेश बघेल ने कहा - किसानों की दुश्मन बन चुकी है सरकार

राजनांदगांव। घुमका नगर पंचायत चुनाव में प्रचार अब तेज हो गया है। एक जून को होने वाले मतदान से पहले पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कांग्रेस प्रत्याशी फूलमती वर्मा के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित किया, जहां उन्होंने प्रदेश की विष्णुदेव सरकार पर जमकर निशाना साधा।

घुमका में आयोजित चुनावी सभा में पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि प्रदेश की मौजूदा सरकार किसानों की दुश्मन बन चुकी है। उन्होंने खाद संकट, बिजली कटौती और धान खरीदी व्यवस्था को लेकर सरकार पर हमला बोला। बघेल ने कहा कि कांग्रेस सरकार के दौरान गरीब परिवारों को राशन दुकानों से मिलने वाले चावल की मात्रा बढ़ाकर 35 किलो तक किया गया था। कांग्रेस सरकार ने गरीबों और किसानों के हित में लगातार काम किया।

बिजली कटौती को लेकर सरकार पर कसा तंज

सभा के दौरान बिजली व्यवस्था को लेकर भी पूर्व मुख्यमंत्री ने सरकार पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अब तक तीन बार बिजली दर बढ़ाई जा चुकी है, जबकि दूसरी ओर लगातार बिजली कटौती हो रही है। जहां-जहां वे सभा लेने जाते हैं, वहां बिजली गुल हो जाती है। पूर्व मुख्यमंत्री बघेल ने प्रदेश में धान चोरी और खरीदी व्यवस्था में गड़बड़ी का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी फूलमती वर्मा को भारी मतों से विजयी बनाने की अपील करते हुए कहा कि नगर पंचायत में विकास के लिए कांग्रेस को जिताना जरूरी है।

नारायणपुर में टसर रेशम ने बदली आदिवासियों की तकदीर

नारायणपुर। छत्तीसगढ़ के घने जंगलों और शांत वादियों के बीच बसा नारायणपुर जिला आज रेशम उत्पादन के क्षेत्र में एक नई और सुनहरी पहचान गढ़ रहा है। यहाँ के रेशम विभाग द्वारा संचालित टसर रेशम विकास एवं विस्तार कार्यक्रम स्थानीय आदिवासी परिवारों के जीवन में एक मूक लेकिन बेहद असरदार आर्थिक क्रांति का जरिया बन चुका है। पारंपरिक खेती और मजदूरी पर निर्भर रहने वाले जो ग्रामीण कभी स्थानीय स्तर पर रोजगार न होने के कारण पलायन करने को मजबूर थे, वे आज अपने ही घर-आँगन में साल भर में तीन-तीन फसलें लेकर आत्मनिर्भरता की एक नई इबारत लिख रहे हैं।

मात्र 2 रूपए में मिल रहे अंडे, ककून बैंक से बिचौलियों का खेल खत्म

रेशम विभाग ने इस पूरी व्यवस्था को बेहद सुलभ और पारदर्शी बनाया है। विभाग अपने पौधारोपित क्षेत्रों में महिला और पुरुष स्व-सहायता समूहों के माध्यम से टसर कृमिपालन का कार्य करा रहा है। ग्रामीणों पर शुरुआत में कोई आर्थिक बोझ न आए, इसके लिए विभाग मात्र 2 रुपये की मामूली अनुदान दर पर टसर कृमि के अंडे उपलब्ध कराता है। हितग्राही लगभग 45 से 50 दिनों तक पूरी लगन के साथ इन कृमियों का पालन करते हैं, जिसके बाद पेड़ों पर चमकीले कोसाफल (ककून) तैयार हो जाते हैं। ग्रामीणों को अपनी फसल बेचने के लिए बाजारों के चक्कर नहीं काटने पड़ते। विभाग ने खुद ककून बैंक की स्थापना की है, जहाँ शासन द्वारा निर्धारित तय दरों पर कोसाफल की सुरक्षित खरीदी की जाती है।

ग्राम डूमरतराई में वृहत उत्पादन, हर हाथ को मिली बड़ी कमाई

इस योजना की सफलता का सबसे जीवंत और खूबसूरत नजारा नारायणपुर के ग्राम डूमरतराई के टसर केंद्र में देखने को मिला। चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान यहाँ के 15 स्थानीय ग्रामीणों (जिसमें महिला सशक्तिकरण की मिसाल पेश करते हुए 10 महिलाएँ और 5 पुरुष शामिल हैं) ने मिलकर कृमिपालन का जिम्मा उठाया।

सुशासन की गूंज : कचना महा-शिविर में उमड़ा 17 गांवों का हुजूम

165 जनसमस्याओं का स्थल पर ही निराकरण

धमतरी। छत्तीसगढ़ सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों को आम जनता के दरवाजे तक पहुँचाने और उनकी समस्याओं पर सीधा प्रहार करने के लिए शुरू हुआ सुशासन तिहार 2026 अब धरातल पर एक बड़ा विश्वास बन चुका है। इसी कड़ी में धमतरी जिले के कुरूद विकासखंड के ग्राम पंचायत कचना में आयोजित क्लस्टर स्तरीय समाधान शिविर में उम्मीदों और समाधान का एक अनोखा संगम देखने को मिला। शिविर में 165 मामलों का मौके पर ही निपटारा (161 मांग और 4 शिकायतें) कर ग्रामीणों को तत्काल राहत दी गई।

इस महा-शिविर में कचना सहित आस-पास की कुल 17 ग्राम पंचायतों (सिलीडीह, सिलतरा, नवागांव (क), जी जामगांव, अंवरी, गणेशपुर, मडेली, भैंसबोड़, जरवायडीह, कोलियारी, जोरातराई (अ), थूहा, नवागांव (थू), सिर्वे, कुम्हारी और भेण्डसर) के ग्रामीणों का ऐसा सैलाब उमड़ा, जिसने शासन की इस मुहिम को पूरी तरह सफल बना दिया। शविर की भव्यता और जनता के विश्वास का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ कुल 819 आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से 812 आवेदन विभिन्न विकास कार्यों व मांगों से जुड़े थे, तो वहीं 7 आवेदन शिकायतों के रूप में दर्ज किए गए। प्रशासन ने भी मुस्तैदी दिखाते हुए 165 मामलों का मौके पर ही निपटारा (161 मांग और 4 शिकायतें) कर ग्रामीणों को तत्काल राहत की सौगात दी। शेष आवेदनों के लिए समय-सीमा तय कर त्वरित कार्रवाई का भरोसा दिया गया है।

ग्रामीणों का हौसला बढ़ाने और उनकी समस्याओं को सीधे सुनने के लिए क्षेत्र के कई दिग्गज जनप्रतिनिधि इस शिविर का हिस्सा बने। जिला पंचायत के उपाध्यक्ष, सभापति और जनपद पंचायत कुरूद की अध्यक्ष ने विशेष रूप से शिरकत की। इसके साथ ही बडी संख्या में सरपंच, सचिव और पंचगण मौजूद रहे। इस शिविर की सबसे खूबसूरत तस्वीर तब सामने आई जब पात्र हितग्राहियों को उनके अधिकार की सामग्रियां और प्रमाण पत्र सौंपे गए। कई सालों से अटके काम जब चंद मिनटों में पूरे हुए, तो ग्रामीणों के चेहरे खुशी से दमक उठे। राजस्व विभाग ने जमीन और घर का सपना पूरा करते हुए ग्रामीणों को आबादी पट्टा (भू-स्वामित्व) सौंपा। मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा की छांव देते हुए संगठित श्रमिक कार्ड प्रदान किए गए। इसी तरह स्वास्थ्य विभाग ने बुजुर्गों की आंखों को रोशनी देने के लिए निःशुल्क चश्मा और मुफ्त इलाज की गारंटी वाला आयुष्मान कार्ड दिया।

पूर्णता की ओर वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का निर्माण, 27 गांवों तक पहुंचेगा शुद्ध पेयजल

बालोद। जल जीवन मिशन के अंतर्गत 27 गांवों में स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति के लिए तैयार हो रहे कनेरी मल्टी-विलेज जल प्रदाय योजना के वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का काम अब अंतिम चरण में है। बालोद की कलेक्टर दिव्या उमेश मिश्रा ने गुरूर विकासखंड के ग्राम धनोरा में निर्माणाधीन इस वाटर ट्रीटमेंट प्लांट के कार्यों का निरीक्षण कर जल्द काम पूरे करने के निर्देश दिए। उन्होंने कनेरी मल्टी-विलेज जल प्रदाय योजना के सभी सेगमेंटों का काम तेजी से पूर्ण कर जल की आपूर्ति शुरू करने को कहा।

कलेक्टर मिश्रा ने कनेरी समूह जल प्रदाय योजना के तहत निर्माणाधीन अत्याधुनिक वाटर ट्रीटमेंट प्लांट (जल शोधन संयंत्र) का सघन निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने इस दौरान प्लांट के रॉ-वॉटर इनटेक, सेडीमेंटेशन, फिल्ट्रेशन और क्लोरीनेशन यूनिट का अवलोकन किया। उन्होंने मौके पर मौजूद लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारियों से संयंत्र की शोधन क्षमता, तकनीकी बारीकियों और जल गुणवत्ता की जांच की व्यवस्था के संबंध में विस्तृत जानकारी ली।

बड़ी गिरावट के साथ बंद हुआ शेयर बाजार; सेंसेक्स 1,092 अंक लुढ़का, निफ्टी में 1.50 प्रतिशत की गिरावट

मुंबई। पश्चिम एशिया में जारी संघर्षों के बीच वैश्विक बाजारों से मिले-जुले संकेतों के चलते सप्ताह के आखिरी कारोबारी सत्र में भारतीय शेयर बाजार बड़ी गिरावट के साथ बंद हुआ। कारोबारी सत्र की शुरुआत हरे निशान में हुई थी। लेकिन अमेरिका-ईरान समझौते को लेकर बनी अनिश्चितता के बीच सत्र के अधिकांश समय में बेंचमार्क सूचकांक सीमित दायरे में कारोबार करते रहे। हालांकि कारोबार के अंत में बाजारों में अचानक भारी बिकवाली देखने को मिली, जिसमें सेंसेक्स लगभग 1,300 अंक गिर गया और निफ्टी 50 फिसलकर 23,485 पर आ गया।

वहीं बाजार बंद होने के समय 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 1,092.06 अंकों यानी 1.44 प्रतिशत गिरकर 74,775.74 पर पहुंच गया, जबकि एनएसई निफ्टी 50 359.40 अंक यानी 1.50 प्रतिशत गिरकर 23,547.75 पर आ गया।

दिन के दौरान, सेंसेक्स 75,988.51 पर खुलकर 76,220.02 का इंट्रा-डे हाई और 74,589.11 का लो बनाया। वहीं एनएसई निफ्टी 23,902.15 पर खुलकर 24,002.80 का दिन का हाई और 23,484.75 का लो बनाया। व्यापक बाजारों में, निफ्टी मिडकैप इंडेक्स में 1.33 प्रतिशत और निफ्टी स्मॉलकैप इंडेक्स में 0.85 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई।

वहीं सेक्टरवार देखें तो, निफ्टी ऑयल एंड गैस में 2.47 प्रतिशत की गिरावट, निफ्टी मेटल में 2.02 प्रतिशत की गिरावट और निफ्टी फाइनेंशियल सर्विस एक्स-बैंक में 2.02 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। इसके अलावा, निफ्टी ऑटो, निफ्टी एफएमसीजी, निफ्टी फार्मा, निफ्टी प्राइवेट बैंक, निफ्टी हेल्थकेयर और निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल्स में 1 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई। वहीं निफ्टी आईटी इंडेक्स में 0.60 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की गई। निफ्टी50 इंडेक्स में टेक महिंद्रा, एचसीएल टेक, विप्रो, नेस्ले इंडिया और एलएंडटी के शेयरों में 1 प्रतिशत से ज्यादा की तेजी दर्ज की गई, जबकि पावरग्रिड, इंडिगो, ओएनजीसी, मैक्सहेल्थ, आयशर मोटर और टाटा कंज्यूमर के शेयरों में सबसे ज्यादा गिरावट दर्ज की गई।

इस दौरान, एक ही सत्र में निवेशकों को करीब 6 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ, क्योंकि बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) पिछले सत्र के लगभग 471 लाख करोड़ रुपए से गिरकर करीब 465 लाख करोड़ रुपए हो गया। एक मार्केट एक्सपर्ट ने कहा कि आने वाले समय में मध्य पूर्व में तनाव कम होने की उम्मीद है, जिसके चलते अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आई। ब्रेंट क्रूड 1.5 प्रतिशत से ज्यादा टूटकर 88 डॉलर प्रति बैरल के नीचे पहुंच गया, जबकि घरेलू बाजार में कच्चे तेल के वायदा भाव 8,400 रुपए प्रति बैरल से नीचे फिसल गए।

एक्सपर्ट के मुताबिक, बाजार की नजर अभी भी होर्मुज जलडमरूमध्य और उससे जुड़े कूटनीतिक घटनाक्रमों पर बनी हुई है। पूरे महीने में तेल की कीमतों में 17 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई, जिससे यह संकेत मिला कि हाल के महीनों में बना भू-राजनीतिक जोखिम प्रीमियम अब तेजी से कम हो रहा है।

टेस्ला ने भारत में मॉडल वाई प्रीमियम रियर-व्हील ड्राइव को पेश किया

नई दिल्ली। अमेरिकी कार कंपनी टेस्ला ने शुक्रवार को भारत में नया मॉडल वाई प्रीमियम रियर-व्हील ड्राइव (आरडब्ल्यूडी) मॉडल को पेश किया। इसकी शुरुआती एक्स शोरूम कीमत 50.89 लाख रुपए रखी गई है और इसकी डिलीवरी जुलाई 2026 से शुरू हो जाएगी।

इसके जरिए टेस्ला की कोशिश भारतीय बाजारों में पैठ जमाना है। अब तक कंपनी बाजार में कुछ खास मुकाम हासिल नहीं कर पाई है।

टेस्ला के मुताबिक, मॉडल वाई के इस नए वैरिएंट में ऑल-ब्लैक इंटीरियर मिलेगा। साथ ही, इसमें पहली पंक्ति में बेहतर रिस्पॉन्सिवनेस के साथ 16 इंच का बड़ा टचस्क्रीन लगा हुआ और वैकल्पिक जेन ग्रे इंटीरियर थीम मौजूद है। इस मॉडल में 2,138 लीटर तक की स्टोरेज क्षमता उपलब्ध है और अतिरिक्त कार्गो स्पेस के लिए पावर-फोल्डिंग सीटों के साथ इसमें पांच यात्रियों तक को बैठाया जा सकता है। यह गाड़ी 5.9 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकती है और डब्ल्यूएलपीटी मानकों के अनुसार 500 किमी तक की ड्राइविंग रेंज प्रदान करता है। मॉडल वाई प्रीमियम रियर-व्हील ड्राइव और छह सीटों वाली मॉडल वाई एल, दोनों को एनएचटीएसए, आईआईएचएस, यूरो एनकैप, एएनकैप और सी-आईएएसआई सहित कई वैश्विक सुरक्षा संगठनों से सर्वोच्च सुरक्षा रेटिंग प्राप्त हुई है।

पिछले महीने, टेस्ला ने भारत में छह सीटों वाली मॉडल वाई एल को 61.99 लाख रुपए की शुरुआती कीमत पर लॉन्च किया था।

टेस्ला की वरिष्ठ निदेशक, इसाबेल फैन ने कहा, 'टेस्ला का मिशन एक ऐसी दुनिया बनाना है जहां अपार समृद्धि हो। टेस्ला अपनी तकनीक को सुलभ बनाकर और लोगों की जीवनशैली के अनुरूप चार्जिंग समाधान उपलब्ध कराकर इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देती है। इसके अलावा, कंपनी ने नए वेरिएंट के लिए फाइनेंस विकल्प भी पेश किए हैं, जिसमें मासिक ईएमआई 39,990 रुपए से शुरू होती है और डाउन पेमेंट 6 लाख रुपए है।

इससे पहले मई में, एलन मस्क समर्थित कंपनी ने बेंगलुरु के व्हाइटफील्ड इलाके में अपना पहला एक्सपीरियंस सेंटर खोला, जो भारत में इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता की विस्तार योजनाओं में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ओडिशा सरकार ने इंटेल और 3डीजीएस के साथ सेमीकंडक्टर सबस्ट्रेट मैन्युफैक्चरिंग के लिए समझौता किया : अश्विनी वैष्णव

नई दिल्ली। ओडिशा सरकार ने भारत में सबस्ट्रेट निर्माण तकनीक लाने के लिए इंटेल और 3डी ग्लास सॉल्यूशंस (3डीजीएस) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह जानकारी शुक्रवार को केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव की ओर से दी गई।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर वैष्णव ने भारत में सब्सट्रेट निर्माण क्षमताओं को शुरू करने के उद्देश्य से किए गए समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए राज्य सरकार, इंटेल और 3डीजीएस को बधाई दी।

मंत्रालय ने एक पोस्ट में कहा, 'भारत में सबस्ट्रेट निर्माण तकनीक लाने के लिए ओडिशा सरकार, इंटेल और 3डीजीएस द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने पर बधाई। इससे भारत में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को और बढ़ावा मिलेगा।

ओडिशा में हाल ही में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम तेजी से बढ़ा है।

अप्रैल में, 3डी ग्लास सॉल्यूशंस (3डीजीएस) द्वारा शुरू की गई हेटरोजेनियस इंटीग्रेशन पैकेजिंग सॉल्यूशंस प्रोजेक्ट के तहत भुवनेश्वर के इंफो वैली में देश की पहली उन्नत 3डी चिप पैकेजिंग इकाई की आधारशिला रखी गई। सरकार के अनुसार, लगभग 2,000 करोड़ रुपए के निवेश वाली इस परियोजना से प्रतिवर्ष लगभग 70,000 ग्लास पैनलों का उत्पादन, 5 करोड़ असेंबल्ड यूनिट्स और लगभग 13,000 उन्नत 3डी हेटरोजेनियस इंटीग्रेशन (3डीएचआई) मॉड्यूल्स का निर्माण होने की उम्मीद है। उस समय केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का सेमीकंडक्टर क्षेत्र तेजी से विकास कर रहा है, और ओडिशा देश की सेमीकंडक्टर संबंधी महत्वाकांक्षाओं में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसके अलावा, मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी ने कहा था कि ओडिशा देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहां भारत की पहली कंपाउंड सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन यूनिट और पहली 3डी ग्लास सबस्ट्रेट पैकेजिंग सुविधा स्थापित की जा रही है।

यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब केंद्र सरकार सेमीकॉन इंडिया कार्यक्रम के तहत नीतिगत समर्थन और प्रोत्साहन देकर घरेलू सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को मजबूत करना जारी रखे हुए है।

आरबीआई ने ई-रुपया पायलट प्रोजेक्ट का विस्तार किया, टोकनाइज्ड क्रेडिट डिपॉजिट ट्रायल भी शुरू

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को कहा कि उसने अपने सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) पायलट प्रोजेक्ट्स का विस्तार सरकारी सब्सिडी कार्यक्रमों और वित्तीय बाजार उपकरणों तक कर दिया है।

वित्त वर्ष 26 की वार्षिक रिपोर्ट में आरबीआई ने बताया कि उसने यूनिफाइड मार्केट्स इंटरफेस (यूएमआई) प्लेटफॉर्म के माध्यम से टोकनाइज्ड सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट के लिए एक पायलट प्रोजेक्ट भी शुरू किया है।

आरबीआई के मुताबिक, वित्त वर्ष 26 में सीबीडीसी का उपयोग केंद्र और राज्य सरकार के द्वारा चलाई जाने वाली डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) स्कीम में किया गया था।

गुजरात, पुडुचेरी और चंडीगढ़ में, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत लाभार्थियों को प्रोग्रामेबल सीबीडीसी के माध्यम से खाद्य सब्सिडी प्राप्त हुई, जिसे केवल उचित मूल्य की दुकानों और नामित व्यापारियों पर पात्र वस्तुओं के लिए भुनाया जा सकता था।

वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया, 'रिजर्व बैंक ने वित्तीय परिसंपत्तियों के टोकनाइजेशन को सुविधाजनक बनाने के लिए यूनिफाइड मार्केट्स इंटरफेस (यूएमआई) विकसित किया है, जो एक बहुस्तरीय प्लेटफॉर्म है, साथ ही निपटान दक्षता बढ़ाने के लिए थोक सीबीडीसी का लाभ उठाता है।

केंद्रीय बैंक ने कहा कि प्लेटफॉर्म पर टोकनाइज्ड रूप में जमा प्रमाणपत्रों के निर्गमन और व्यापार के लिए एक पायलट परियोजना शुरू हो गई है, जिसका निपटान थोक सीबीडीसी के माध्यम से किया जा रहा है।

इस पायलट पहल का उद्देश्य वित्तीय बाजारों में टोकनाइजेशन और डिस्ट्रीब्यूटेड लेजर टेक्नोलॉजी जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाना है।

सीमा पार पहलों के संबंध में, केंद्रीय बैंक ने कहा कि उसने डिजिटल परिसंपत्ति सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं और सिंगापुर मौद्रिक प्राधिकरण (एमएएस) के साथ चर्चा की है।

इसके अलावा, सीमा पार सीबीडीसी पायलट परियोजना को चालू करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात के केंद्रीय बैंक के साथ विचार-विमर्श किया गया।

आरबीई ने प्रोजेक्ट रियाल्टो और प्रोजेक्ट मंडला के दूसरे चरण में भाग लिया है, दोनों का नेतृत्व बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स इनोवेशन हब कर रहा है और इनका उद्देश्य सीबीडीसी का उपयोग करके सीमा पार भुगतान में सुधार करना है।

वैश्विक अस्थिरता के बीच सोने और चांदी में सीमित दायरे में कारोबार

मुंबई। वैश्विक अस्थिरता के बीच सोने और चांदी ने शुक्रवार को हल्की कमजोरी के साथ शुरुआत की। हालांकि, दोनों कीमती धातुओं में एक सीमित दायरे में कारोबार हो रहा है।

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का 5 अगस्त 2026 का कॉन्ट्रैक्ट पिछली क्लोजिंग 1,60,903 रुपए के मुकाबले 449 रुपए की कमजोरी के साथ 1,60,454 रुपए पर खुला।

सुबह 10:15 बजे यह 0.17 प्रतिशत की मामूली कमजोरी के साथ 1,60,622 रुपए पर था।

अब तक के कारोबार में सोने ने 1,60,197 रुपए का न्यूनतम स्तर और 1,60,962 रुपए का उच्चतम स्तर छुआ।

वहीं, चांदी का 3 जुलाई 2026 का कॉन्ट्रैक्ट पिछली क्लोजिंग 2,69,537 रुपए के मुकाबले 1,169 रुपए की कमजोरी के साथ 2,68,368 रुपए पर खुला। अब तक के कारोबार में चांदी ने 2,68,018 रुपए का न्यूनतम स्तर और 2,69,400 रुपए का उच्चतम स्तर छुआ है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी में हल्की तेजी के साथ कारोबार हो रहा है। कॉमेक्स पर सोना 0.17 प्रतिशत की तेजी के साथ 4,540 डॉलर प्रति औंस और चांदी 0.25 प्रतिशत की तेजी के साथ 76 डॉलर प्रति औंस पर था। अमेरिका-ईरान संघर्ष के कारण वैश्विक स्तर पर अस्थिरता बनी हुई है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, अमेरिका-ईरान 60 दिन के सीजफायर के एमओयू (समझौता ज्ञापन) पर सहमत हो गए हैं। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की अंतिम मंजूरी अभी बाकी है।

रिपोर्ट्स में कहा गया कि इस समझौते का मकसद सीजफायर को बढ़ाने के साथ परमाणु कार्यक्रम पर औपचारिक बातचीत शुरू होना है। साथ ही, इस दौरान होर्मुज स्ट्रेट खोलने को लेकर भी बातचीत होगी।

हाल के दिनों में अमेरिका द्वारा दक्षिण ईरान में कुछ जगहों पर हमला किया गया था। इसके जवाब में ईरान ने भी हमले करने का दावा किया था, जिसके बाद दोनों देशों में तनाव बढ़ गया था।

इस साल डीजल में आइसोब्यूटेनॉल मिश्रण अनिवार्य होने की संभावना: शीर्ष अधिकारी

नई दिल्ली। देश की ऊर्जा सुरक्षा मजबूत करने और सड़क एवं राजमार्ग क्षेत्र को कार्बन मुक्त बनाने के लिए सरकार इस साल ही डीजल में आइसोब्यूटेनॉल ब्लेंडिंग यानी मिश्रण को अनिवार्य बना सकती है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग सचिव वी. उमाशंकर ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

सीआईआई मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्टेशन एंड लॉजिस्टिक्स समिट में बोलते हुए उमाशंकर ने कहा, 'डीजल ब्लेंडिंग को बहुत गंभीरता से देखा जा रहा है। भारत पेट्रोलियम पहले से ही डीजल में आइसोब्यूटेनॉल ब्लेंडिंग पर रणनीतिक रिसर्च कर रही है और इसके नतीजे काफी उत्साहजनक हैं। संभावना है कि इस साल के आखिर तक ब्लेंडिंग अनिवार्यता लागू हो सकती है। भारत में डीजल की खपत पेट्रोल के मुकाबले लगभग दोगुनी है, इसलिए डीजल ब्लेंडिंग का असर ऊर्जा सुरक्षा पर पेट्रोल ब्लेंडिंग से भी ज्यादा होगा।

उन्होंने बताया कि मंत्रालय इलेक्ट्रिक भारी वाणिज्यिक वाहनों के लिए बैटरी स्वैपिंग और बैटरी चार्जिंग का इकोसिस्टम विकसित करने के उद्देश्य से जल्द ही ट्रक-ट्रेलर से जुड़ा ड्राफ्ट नोटिफिकेशन लाने की तैयारी कर रहा है। उमाशंकर ने कहा कि बैटरी स्वैपिंग के लिए देशभर में जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करना होगा। वहीं बैटरी चार्जिंग में अधिक समय लगता है, ऐसे में ट्रकों को लंबे समय तक खड़ा रखना व्यावहारिक नहीं होगा।

उन्होंने कहा, 'हम ट्रैक्टर-ट्रेलर इंटरचेंजिबिलिटी मॉडल पर काम कर रहे हैं। इसमें बैटरी बदलने की जरूरत नहीं होगी, बल्कि ट्रक का पूरा अगला हिस्सा बदला जाएगा। कंटेनर और ट्रेलर अलग किए जा सकेंगे। हाइड्रोजन-आधारित लॉजिस्टिक्स पर चल रहे सरकारी प्रयोगों के बारे में उन्होंने कहा कि इसके नतीजे काफी अच्छे हैं। लॉजिस्टिक्स की लागत अन्य विकल्पों के मुकाबले ज्यादा नहीं है। हालांकि, हाइड्रोजन रिफ्यूलिंग स्टेशन स्थापित करने में अधिक खर्च आता है और फिलहाल सरकार पायलट प्रोजेक्ट्स में इसके लिए सहायता दे रही है।

उन्होंने बताया कि दिल्ली में हाल ही में हाइड्रोजन बसें दिल्ली-फरीदाबाद और दिल्ली-नोएडा रूट पर शुरू की गई हैं, क्योंकि इन क्षेत्रों में हाइड्रोजन रिफ्यूलिंग स्टेशन पहले ही स्थापित किए जा चुके हैं।

उमाशंकर ने कहा, 'एक बार फ्यूल भरने के बाद ये बसें लगभग 450 किलोमीटर तक चल सकती हैं। अगर दिल्ली-मुंबई कॉरिडोर की बात करें, तो नए एक्सप्रेसवे पर केवल तीन रिफ्यूलिंग स्टेशन ही पर्याप्त होंगे।

इसके अलावा उन्होंने बताया कि मल्टी-लेन फ्री फ्लो (एमएलएफएफ) यानी बिना बैरियर वाली टोलिंग प्रणाली को अगले साल देश भर में लागू किया जा सकता है। इस तकनीक में वाहनों को टोल प्लाजा पर रुकने या गति कम करने की जरूरत नहीं होगी।

उन्होंने आगे कहा, 'यह सिस्टम (एमएलएफएफ) दो टोल प्लाजा पर सफलतापूर्वक लागू हो चुका है और तीसरा टोल प्लाजा अगले 8-10 दिनों में शुरू हो जाएगा। हमारी योजना अगले साल के भीतर देश के सभी चार लेन और उससे बड़े टोल प्लाजा पर इसे लागू करने की है।

उन्होंने यह भी बताया कि दिल्ली-एनसीआर के लिए एडवांस ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम को मंजूरी मिल चुकी है और जल्द ही इसके लिए टेंडर प्रक्रिया और परियोजना का कार्य शुरू होगा। उन्होंने कहा कि सड़कों और राजमार्गों पर वाहनों की औसत गति बढ़ाने के लिए मंत्रालय एक्सप्रेसवे और एक्सेस-कंट्रोल हाईवे पर विशेष ध्यान दे रहा है, ताकि धीमी और तेज रफ्तार वाहनों के ट्रैफिक को अलग-अलग किया जा सके।

इंडिगो को चौथी तिमाही में 2,537 करोड़ रुपए का घाटा, पिछले साल हुआ था 3,067 करोड़ रुपए का मुनाफा

मुंबई। इंडिगो की पैरेंट कंपनी इंटरग्लोब एविएशन ने शुक्रवार को वित्त वर्ष 2025-26 की मार्च तिमाही (चौथी तिमाही) के लिए 2,537 करोड़ रुपए का कंसोलिडेटेड नेट लॉस (शुद्ध घाटा) दर्ज किया, जबकि पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में कंपनी को 3,067.5 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ हुआ था।

हालांकि, एक्सचेंज फाइलिंग के मुताबिक, तिमाही के दौरान एयरलाइन की ऑपरेशंस से होने वाली आय में सालाना आधार पर 1 प्रतिशत की मामूली बढ़ोतरी हुई और यह 22,438 करोड़ रुपए रही, जो पिछले साल इसी अवधि में 22,152 करोड़ रुपए थी।

इंडिगो ने कहा कि तिमाही के दौरान कंपनी की लाभप्रदता पर 250 करोड़ रुपए के वन-टाइम चार्ज का भी असर पड़ा।

एयरलाइन का ईबीआईटीडीए तिमाही के दौरान 6,396 करोड़ रुपए रहा, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 5,953 करोड़ रुपए था। हालांकि, ईबीआईटीडीए मार्जिन में तेज गिरावट दर्ज की गई और यह घटकर 3.6 प्रतिशत रह गया, जो एक साल पहले 27.5 प्रतिशत था। वहीं ईबीआईटीडीएआर मार्जिन बढ़कर 28.5 प्रतिशत हो गया, जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 26.9 प्रतिशत था। ऑपरेशनल स्तर पर एयरलाइन ने बताया कि मध्य पूर्व में जारी संघर्ष के कारण आई बाधाओं के बावजूद उसकी क्षमता (कैपेसिटी) में 3.4 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और यह 43.6 बिलियन उपलब्ध सीट किलोमीटर (एएसके) तक पहुंच गई। हालांकि, तिमाही के दौरान यात्री संख्या में सालाना आधार पर 1.1 प्रतिशत की गिरावट आई और यह 31.6 मिलियन रही।

कंपनी ने कमजोर प्रदर्शन के लिए वित्त वर्ष 2026 के दौरान बने बेहद चुनौतीपूर्ण कारोबारी माहौल को जिम्मेदार ठहराया।

नतीजों पर टिप्पणी करते हुए इंटरग्लोब एविएशन के सीईओ राहुल भाटिया ने कहा कि यह साल गंभीर परिचालन चुनौतियों से भरा रहा, जिसका कंपनी की लाभप्रदता पर बड़ा असर पड़ा, हालांकि एयरलाइन का मुख्य कारोबार मजबूत बना रहा। उन्होंने कहा, 'वित्त वर्ष 2026 बेहद चुनौतीपूर्ण ऑपरेटिंग माहौल वाला साल रहा, जिसका हमारी मुनाफाखोरी पर बड़ा असर पड़ा।

मूगा सिल्क से नागा मिर्च तक, दुनिया के मंच पर चमक रहा पूर्वोत्तर भारत का 'जीआई' गौरव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया इटली यात्रा केवल राजनीतिक और आर्थिक रिश्तों को मजबूत करने तक सीमित नहीं रही, बल्कि इस दौरे ने भारत की सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक कला और स्थानीय उत्पादों को भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर नई पहचान दिलाई। दुनिया के बड़े नेताओं को भारत के अलग-अलग राज्यों से चुने गए जीआई टैग प्राप्त उत्पाद भेंट कर प्रधानमंत्री ने यह संदेश दिया कि भारत की असली ताकत उसकी विविधता, परंपरा और स्थानीय हुनर में बसती है।

जब विविधता, परंपरा और स्थानीय हुनर की बात होती है, तो पूर्वोत्तर भारत के आठों राज्यों का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने इटली सहित कई देशों के राष्ट्राध्यक्षों और प्रमुख नेताओं को भारत के विभिन्न हिस्सों से जुड़े विशेष उत्पाद उपहार में दिए। इनमें असम का प्रसिद्ध मूगा रेशम शॉल भी शामिल था। इन उपहारों ने न सिर्फ भारत की सांस्कृतिक पहचान को दुनिया के सामने रखा, बल्कि स्थानीय कारीगरों और किसानों के वर्षों पुराने कौशल को भी सम्मान दिलाया।

पूर्वोत्तर भारत आज केवल प्राकृतिक सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक समृद्धि, पारंपरिक कला और जैविक उत्पादों के कारण भी वैश्विक पहचान बना रहा है। यहां के जीआई टैग प्राप्त उत्पाद यह साबित करते हैं कि भारत की असली शक्ति गांवों, कारीगरों और किसानों की मेहनत में छिपी हुई है।

दरअसल, भारत के लिए जीआई टैग केवल कानूनी पहचान नहीं, बल्कि स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुंचाने का प्रभावी माध्यम बन चुका है। जीआई यानी 'जियोग्राफिकल इंडिकेशन' ऐसे उत्पादों को दिया जाता है, जिनकी विशेषता किसी खास क्षेत्र की मिट्टी, जलवायु, परंपरा या कारीगरी से जुड़ी होती है। यही कारण है कि आज भारत के 600 से अधिक उत्पादों को जीआई टैग मिल चुका है।

पूर्वोत्तर भारत इस मामले में देश का सबसे समृद्ध और अनोखा क्षेत्र बनकर उभरा है। यहां की कृषि, हस्तशिल्प और पारंपरिक वस्त्रों ने दुनिया भर में अपनी अलग पहचान बनाई है। असम का मूगा सिल्क इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। सुनहरे रंग का यह रेशम अपनी चमक और मजबूती के लिए दुनियाभर में मशहूर है। इसके अलावा, असम की जोहा राइस, काजी नेमू, बोका चाऊल, तेजपुर लीची और गमोसा भी जीआई टैग प्राप्त उत्पादों में शामिल हैं।

मणिपुर की पारंपरिक बुनाई कला भी देश की सांस्कृतिक धरोहर मानी जाती है। यहां का शाफी लानफी और वांगखेई फी वस्त्र विशेष अवसरों पर पहने जाते हैं। मोइरांग-फी कपड़े की खास डिजाइन और पारंपरिक शैली इसे अलग पहचान देती है। वहीं, मणिपुर का चक-हाओ काला चावल अपने स्वाद और औषधीय गुणों के कारण बेहद लोकप्रिय है। कचाई नींबू और तामेंगलोंग संतरा भी यहां की खास पहचान बन चुके हैं।

यूएस में बाइबल डाइट: 'मेक अमेरिका हेल्दी अगेन' के तहत फॉलोअर बढ़े, अब धीमी जिंदगी का चलन

अमेरिका में इन्फ्लुएंसर्स अपने फॉलोअर्स को बता रहे हैं कि 'ईश्वर द्वारा दिए गए' प्राकृतिक भोजन से उनकी सेहत और जीवनशैली बदल गई है।

अमेरिका में फिटनेस और खान-पान की दुनिया में 'बाइबिलिकल ईटिंग' यानी बाइबल के मुताबिक खाना खाने का ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। टिकटॉक और इंस्टाग्राम पर लाखों लोग ऐसे वीडियो देख रहे हैं, जिनमें इन्फ्लुएंसर दावा करते हैं कि प्राचीन धार्मिक खान-पान, आज के प्रोसेस्ड फूड से बेहतर है। यह ट्रेंड 'मेक अमेरिका हेल्दी अगेन' जैसे अभियानों के दौर में और तेज हुआ है।

इन्फ्लुएंसर कायला बंडी जैसे कंटेंट क्रिएटर्स अपने फॉलोअर्स को बता रहे हैं कि 'ईश्वर द्वारा दिए गए' प्राकृतिक भोजन से उनकी सेहत और जीवनशैली बदल गई। वे घर पर खाना बनाने, खेतों से सामग्री लेने और पारंपरिक भोजन अपनाने को हेल्दी के साथ-साथ आध्यात्मिक तरीका भी बताते हैं। कई इन्फ्लुएंसर इसके नाम पर पेड कोचिंग, डाइट प्लान और ऑनलाइन कम्युनिटी भी चला रहे हैं। यह ट्रेंड सिर्फ खाने तक सीमित नहीं है। इसे धीमी, प्राकृतिक और कम तनाव वाली जिंदगी की चाहत से भी जोड़ा जा रहा है। कई लोग तेज रफ्तार जीवन, तनाव और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड से दूर जाकर पुरानी परंपराओं में सुकून और स्वास्थ्य तलाश रहे हैं।

इस डाइट को फॉलो करने वाले लोग आमतौर पर बोन ब्रोथ, कच्चा दूध, शहद, जैतून का तेल, सार्डिन मछली, खमीर से बनी पारंपरिक रोटी, ताजे फल-सब्जियां और लोकल तौर पर उगाई गई चीजें खाते हैं। वे पैकेज्ड स्नैक्स, रिफाइंड शुगर और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड से दूरी बनाते हैं। उनका दावा है कि इससे त्वचा बेहतर होती है, वजन कंट्रोल रहता है और मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है।

पोषण विशेषज्ञ मानते हैं कि ताजा और कम प्रोसेस्ड खाना फायदेमंद हो सकता है, लेकिन कच्चा दूध जैसे कुछ प्रोडक्ट जोखिम बढ़ाते हैं। एक्सपर्ट के मुताबिक कच्चे दूध में बैक्टीरिया से संक्रमण का खतरा रहता है। वे यह भी कहते हैं कि सिर्फ सोशल मीडिया सलाह के आधार पर कोई भी डाइट अपनाना नुकसानदायक हो सकता है।

संगीत के खिलाफ नौशाद के पिता ने जब रखी थी बड़ी शर्त, ससुर ने गाने को बताया 'पीढ़ी को बर्बाद

फिल्म संगीत जगत में ऐसे कई कलाकार हुए, जो आज भले ही इस दुनिया में न हों मगर उनका संगीत या रचनाएं प्रशंसकों के दिलों में हमेशा बनी रहेंगी। ऐसे ही महान संगीतकार हुए नौशाद अली... जिनके जीवन की कहानी संघर्ष, समर्पण और अद्भुत सफलता की मिसाल है। एक तरफ जहां उनके पिता ने उन्हें संगीत और घर में से एक चुनने की शर्त रख दी थी, वहीं शादी के समय उनके ससुर ने उनके गाने को 'नई पीढ़ी को बर्बाद करने वाला' बताकर लानतें भेजी थीं।

5 मई को नौशाद की पुण्यतिथि है। नौशाद अली का जन्म 25 दिसंबर 1919 को लखनऊ में हुआ था। उस समय देश में रॉलेट एक्ट के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन जोरों पर था। उनके पिता वाहिद अली अदालत में मुंशी थे। परिवार संगीत को अच्छी नजर से नहीं देखता था। बचपन में नौशाद देवा शरीफ की दरगाह पर कव्वालियां सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते और घंटों वहीं समय बिताया करते थे। उन्होंने लखनऊ में गुरबत अली, युसूफ अली और बब्बन साहिब जैसे उस्तादों से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली।

नौशाद ने रॉयल थिएटर में साइलेंट फिल्मों के लिए संगीत तैयार करने वाली टोली के साथ काम करना शुरू किया। यहीं से उन्हें संगीत निर्देशन की असली शिक्षा मिली। उन्होंने हारमोनियम सुधारने का काम भी किया। बाद में वह इंडियन स्टार थिएटर कंपनी के साथ पंजाब, राजस्थान और गुजरात के दौरे पर गए, जहां उन्होंने विभिन्न लोक संगीत शैलियों को सीखा।

जब नौशाद ने संगीत को अपना करियर बनाने का फैसला किया तो उनके पिता ने साफ कह दिया था, 'संगीत और घर में से एक चुन लो।' दिल में बगावत का तूफान उठा और 1937 में नौशाद लखनऊ छोड़कर मुंबई आ गए। यहां शुरुआती दिनों में उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा। कुछ दिनों तक परिचितों के यहां रहे, फिर दादर के ब्रॉडवे थिएटर के सामने फुटपाथ पर सोना पड़ा। मुंबई में उन्होंने उस्ताद झंडे खां से संगीत की बारीकियां सीखीं और न्यू थिएटर के ऑर्केस्ट्रा में पियानो वादक के रूप में काम शुरू कर दिया।

साल 1940 में फिल्म 'प्रेम नगर' से स्वतंत्र संगीतकार के रूप में उन्होंने शुरुआत की। गीतकार डी.एन. मधोक ने उनकी प्रतिभा पर भरोसा जताया। 1942 में फिल्म 'नई दुनिया' और 'शारदा' ने उन्हें पहचान दिलाई। 'शारदा' में 13 साल की सुरैया ने नौशाद के संगीत में गाना गाया था। फिल्म 'रतन' ने तो नौशाद की किस्मत ही बदल दी। उनकी तनख्वाह 75 रुपए से बढ़कर 25 हजार रुपए हो गई।

नौशाद की जिंदगी का एक और किस्सा है, जब नौशाद मुंबई में सफल हो चुके थे, लेकिन परिवार को अभी भी नहीं बताया गया था कि वे फिल्मों में संगीतकार का काम कर रहे हैं। निकाह हो रहा था और लाउडस्पीकर पर उन्हीं का गाना बज रहा था 'आंखिया मिला के जिया भरमा के चले नहीं...। 'नौशाद के ससुर इस गाने को सुनकर नाराज हो गए और कहने लगे कि ऐसे गाने नई पीढ़ी को बर्बाद कर रहे हैं। नौशाद खामोश रहे और उन्होंने यह नहीं बताया कि यह गाना उनका ही है।

नौशाद ने शास्त्रीय, लोक और पश्चिमी संगीत का सुंदर मेल फिल्मी संगीत में किया। उन्होंने मोहम्मद रफी, लता मंगेशकर और सुरैया जैसे गायकों को नई ऊंचाई दी।

पंडित किशन महाराज: जब वचन निभाने के लिए ठुकरा दिया था अमेरिका का ऑफर

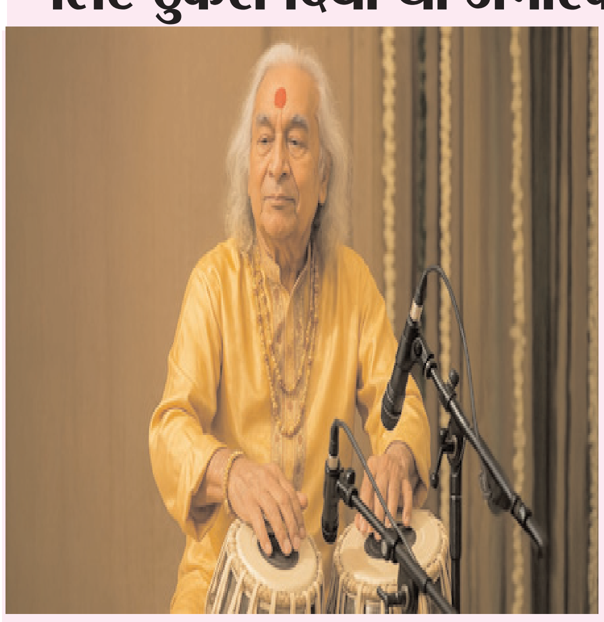

नई दिल्ली। 9 अप्रैल सिर्फ एक तारीख नहीं है। यह वो दिन है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक खालीपन छोड़ गया। इसी दिन 2008 में भारत के महान तबला वादक पंडित किशन महाराज ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। 84 साल की उम्र में उन्होंने अंतिम सांस ली, लेकिन उनकी धुन, उनकी थाप और उनका समर्पण आज भी लोगों के दिलों में जिंदा है।

उनकी पहचान सिर्फ एक कलाकार की नहीं थी, बल्कि एक ऐसे साधक की थी जिसने अपने जीवन को संगीत के नाम कर दिया था। बनारस घराने की यह शख्सियत आज भी तबला प्रेमियों के लिए एक आदर्श मानी जाती है।

पंडित किशन महाराज का जन्म 3 सितंबर 1923 को बनारस (वर्तमान वाराणसी) के कबीर चौरा इलाके में एक संगीत परिवार में हुआ था। उनके पिता हरि महाराज और माता अंजोरा देवी थीं। संगीत उनके खून में था, लेकिन जीवन ने उन्हें बहुत जल्दी कठिनाइयों से भी मिला दिया। महज छह साल की उम्र में ही उनके पिता का निधन हो गया था।

इसके बाद उनका पालन-पोषण उनके चाचा कंठे महाराज ने किया, जो खुद भी तबला वादन के बड़े नाम थे। वहीं से किशन महाराज को संगीत की पहली औपचारिक शिक्षा मिली। बचपन से ही उनकी उंगलियों में ऐसा जादू था कि लोग उन्हें देखकर ही समझ जाते थे कि यह बच्चा आगे चलकर कुछ बड़ा करेगा।

धीरे-धीरे किशन महाराज ने तबला वादन में अपनी अलग पहचान बनानी शुरू कर दी। बनारस घराने की परंपरा के अनुसार उन्होंने गहराई, ताल और लय पर विशेष काम किया। उनकी शैली को 'गंभीर शैली' कहा जाता था, जिसमें बाएं हाथ के उपयोग पर खास जोर दिया जाता था।

उनकी उंगलियों की थाप में एक अलग ही ताकत थी। वह सिर्फ संगत करने वाले कलाकार नहीं थे, बल्कि खुद एक पूरे कार्यक्रम को दिशा देने की क्षमता रखते थे। उन्होंने भारत के लगभग हर बड़े शास्त्रीय कलाकार के साथ मंच साझा किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय संगीत की पहचान को मजबूत किया।

उनकी कला सिर्फ तकनीक नहीं थी, बल्कि भावनाओं से जुड़ी हुई थी। जब वे तबला बजाते थे तो ऐसा लगता था जैसे हर ताल अपने आप बोल रही हो।

किशन महाराज का जीवन आसान नहीं था। उन्होंने बहुत छोटी उम्र से ही संघर्ष देखा, लेकिन संगीत से कभी दूरी नहीं बनाई। उनकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि उन्होंने संगीत को सिर्फ पेशा नहीं, बल्कि जीवन का धर्म माना।

उनकी जर्नी में कई ऐसे किस्से हैं जो आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। एक बार उन्होंने अपने ही परिवार की शादी की दावत छोड़ दी, क्योंकि उन्हें उसी समय एक संगीत कार्यक्रम में जाना था। जब परिवार ने उनसे पूछा, तो उन्होंने कहा था कि 'तबला मेरा जीवन है, मैं इसे नहीं छोड़ सकता।'

इसी तरह एक और घटना में उन्होंने अमेरिका का बड़ा कार्यक्रम ऑफर ठुकरा दिया था, क्योंकि उन्होंने पहले किसी को वचन दिया था। उनके लिए वचन तोड़ना असंभव था।

सख्त खाल और धीमी गति से चलने वाला कछूआ, इकोसिस्टम का खास दोस्त

प्रकृति में संतुलन बनाए रखने में कई जीव-जंतुओं का अहम योगदान होता है। यदि ये न हों तो पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बिगड़ सकता है। ऐसा ही इकोसिस्टम का एक खास साथी है सख्त खोल और धीमी गति से चलने वाला कछुआ यानी टर्टल, जो पानी और जमीन दोनों जगह पाए जाने वाला शांत स्वभाव का जीव है।

वास्तव में कछुए पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके संरक्षण से नदी और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र स्वस्थ रहता है।

हर साल 23 मई को विश्व कछुआ दिवस मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य कछुओं के संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाना है। साल 2000 में अमेरिकन टॉरटॉइस रेस्क्यू द्वारा शुरू किए गए इस दिवस के माध्यम से कछुओं के लुप्त होते आवासों की रक्षा और उनके संरक्षण के लिए वैश्विक प्रयासों को बढ़ावा दिया जाता है।

भारत में कछुओं की सुरक्षा को लेकर सरकार काफी गंभीर है। इंडियन टेंट टर्टल को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची-ढ्ढ में शामिल किया गया है। इसे उच्चतम स्तर का संरक्षण प्राप्त है। नदियों में अवैध खनन के कारण इस प्रजाति के अस्तित्व पर खतरा बना रहता है। वहीं, अवैध व्यापार और पर्यावास का क्षरण भी इन प्रजातियों के लिए प्रमुख खतरे हैं। भारत में कछुओं की स्थिति देखें तो देश में मीठे पानी के कछुओं की लगभग 30 प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से 26 प्रजातियों को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की अनुसूची-ढ्ढ में संरक्षित किया गया है। असम, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में कछुओं की विविधता सबसे अधिक है। जानकारी के अनुसार, भारत में समुद्री कछुओं की पांच प्रमुख प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें ऑलिव रिडले, ग्रीन टर्टल, लॉगरहेड, हॉक्सबिल और लेदरबैक शामिल हैं। इन सभी को भी अनुसूची-ढ्ढ के तहत सुरक्षा प्राप्त है।

इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) की रेड लिस्ट के अनुसार कई प्रजातियां संकटग्रस्त हैं। हॉक्सबिल टर्टल को घोर संकटग्रस्त श्रेणी में रखा गया है। कछुओं के सामने मुख्य चुनौतियों में आवास का नष्ट होना, जलवायु परिवर्तन, प्लास्टिक प्रदूषण और अवैध व्यापार शामिल हैं।

सुगंधा मिश्रा: शास्त्रीय गायिका बनने का था सपना, लेकिन किस्मत ने बना दिया कॉमेडी की दुनिया का बड़ा सितारा

मशहूर कॉमेडियन और गायिका सुगंधा मिश्रा को लोग उनकी शानदार कॉमिक टाइमिंग के लिए जानते हैं, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि उनका पहला सपना कॉमेडियन बनना नहीं था। सुगंधा बचपन से एक बड़ी शास्त्रीय गायिका बनना चाहती थीं। उन्होंने महज 14 साल की उम्र में ही प्रोफेशनल तौर पर गाना शुरू कर दिया था। धीरे-धीरे उनका सफर कॉमेडी की दुनिया की ओर मुड़ गया और आज वह टीवी इंडस्ट्री का जाना-पहचाना चेहरा बन चुकी हैं।

सुगंधा मिश्रा का जन्म 23 मई 1988 को पंजाब के जालंधर में हुआ था। उनका परिवार संगीत से गहराई से जुड़ा हुआ था। वह प्रसिद्ध इंदौर घराने से ताल्लुक रखती हैं और उनके परिवार की कई पीढ़ियां संगीत से जुड़ी रही हैं। घर में हमेशा रियाज और सुरों का माहौल रहता था। यही वजह थी कि बचपन से ही उनका मन संगीत में बस गया था। उनके दादाजी पंडित शंकर लाल मिश्रा शास्त्रीय संगीत के बड़े जानकार थे और उन्होंने ही सुगंधा को संगीत की शुरुआती शिक्षा दी।

सुगंधा ने बहुत छोटी उम्र से गाना सीखना शुरू कर दिया था। वह घंटों बैठकर संगीत का अभ्यास किया करती थीं। सिर्फ 14 साल की उम्र में उन्होंने प्रोफेशनल तौर पर स्टेज पर गाना शुरू कर दिया था। उनकी आवाज में मिठास और शास्त्रीय संगीत की गहरी समझ साफ दिखाई देती थी। धीरे-धीरे उन्होंने स्थानीय कार्यक्रमों और सांस्कृतिक आयोजनों में अपनी पहचान बना ली।

पढ़ाई के साथ-साथ संगीत भी उनकी जिंदगी का अहम हिस्सा बना रहा। उन्होंने गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी और एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स से संगीत की पढ़ाई की। कॉलेज के दिनों में वह कई यूथ फेस्टिवल में हिस्सा लिया करती थीं। इसी दौरान उनकी मुलाकात कपिल शर्मा से हुई थी। दोनों एक ही कॉलेज से जुड़े थे और कई कार्यक्रमों में साथ काम करते थे। उस समय सुगंधा का पूरा ध्यान गायकी पर था, जबकि कपिल थिएटर और कॉमेडी में सक्रिय थे।

सुगंधा मुंबई एक सिंगिंग करियर बनाने के सपने के साथ आई थीं। उन्होंने शुरुआत में बिग एफएम में रेडियो जॉकी के तौर पर काम किया। इसके बाद उन्होंने कई जिंगल्स, भजन और डॉक्यूमेंट्री फिल्मों के लिए गाने गाए। उनकी आवाज लोगों को पसंद आने लगी थी। बाद में उन्होंने मशहूर सिंगिंग रियलिटी शो 'सा रे गामा मा पा' में हिस्सा लिया। इस शो में उन्होंने अपनी गायकी से जज और दर्शकों को प्रभावित किया और फाइनलिस्ट तक पहुंचीं।

हालांकि इसके बाद उनकी जिंदगी में बड़ा मोड़ आया। उन्हें 'द ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज' के ऑडिशन के लिए चुना गया। यहां उन्होंने अपनी कॉमिक टाइमिंग और मिमिक्री से सबको चौंका दिया। धीरे-धीरे उनकी पहचान एक कॉमेडियन के रूप में बनने लगी। इसके बाद उन्होंने 'कॉमेडी नाइट्स विद् कपिल', 'द कपिल शर्मा शो' और कई दूसरे लोकप्रिय शोज में काम किया। 'विद्यावती' टीचर का उनका किरदार लोगों को खूब पसंद आया।

'घिस घिस घिस' को लेकर सुर्खियां बटोर रहीं अक्षरा सिंह, सोशल मीडिया पर बनीं नंबर 1 ट्रेंड होने पर जताई खुशी

मुंबई। भोजपुरी सिनेमा की लोकप्रिय अभिनेत्री अक्षरा सिंह इन दिनों हालिया रिलीज सॉन्ग 'घिस घिस घिस' को लेकर सुर्खियां बटोर रही हैं। इस गाने में अभिनेता अक्षय कुमार के साथ उनकी जोड़ी को दर्शकों का भरपूर प्यार मिल रहा है। शुक्रवार को अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम के जरिए खुशी जाहिर करते हुए बताया कि वे ट्रेंड कर रही हैं।

अभिनेत्री अक्षरा सिंह ने इंस्टाग्राम स्टोरीज सेक्शन पर एक्स ट्रेंडिंग का स्क्रीनशॉट पोस्ट किया, जिसमें लिखा है कि अभिनेत्री एंटरटेनमेंट में नंबर 1 पर ट्रेंड कर रही हैं। उन्होंने स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए लिखा, 'ये तो मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं ट्रेंड में रहूंगी।

अक्षरा सिंह और अक्षय कुमार का गाना 'घिस घिस घिस' उनकी बॉलीवुड में धमाकेदार शुरुआत का प्रतीक है। यह एक शानदार बॉलीवुड-भोजपुरी फ्यूजन है। इसे विक्रम मॉन्ट्रोस और सुप्रिया पाठक ने गाया है और इसके बोल अभिनव शेखर ने लिखे हैं।यह गाना बहुचर्चित फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' का हिस्सा है, जिसमें वह अक्षय कुमार के साथ डांस करती नजर आ रही हैं।

अहमद खान द्वारा निर्देशित बहुचर्चित हिंदी कॉमेडी ड्रामा फिल्म, 'वेलकम' फ्रेंचाइजी का बहुप्रतीक्षित तीसरा भाग है, जिसमें अक्षय कुमार सहित 30 से अधिक सितारे नजर आएंगे। इससे पहले फिल्म का टाइटल ट्रैक रिलीज किया गया था

यह फिल्म अपनी पिछली दोनों फिल्मों (वेलकम और वेलकम बैक) से बिल्कुल अलग और नए अंदाज में है। फिल्म में एक अनोखा ट्विस्ट है। इसमें एक जंगल के बीच एक 'फेक फिल्म' (फिल्मी ड्रामा के अंदर फिल्म) की शूटिंग का कॉन्सेप्ट दिखाया जाएगा, जिसमें सेना (आर्मी) और वॉर का एंगल भी शामिल है।

फिल्म में बॉलीवुड की एक बहुत बड़ी स्टार कास्ट शामिल है। इसमें अक्षय कुमार के साथ-साथ सुनील शेट्टी, संजय दत्त, परेश रावल, जैकी श्रॉफ, दिशा पाटनी, लारा दत्ता, रवीना टंडन और राजपाल यादव जैसे कई दिग्गज कलाकार मुख्य भूमिकाओं में हैं। सोशल मीडिया पर फिल्म को लेकर काफी उत्साह देखा जा रहा है। अब देखना होगा कि रिलीज के बाद ये दर्शकों को कैसा अनुभव देगी।

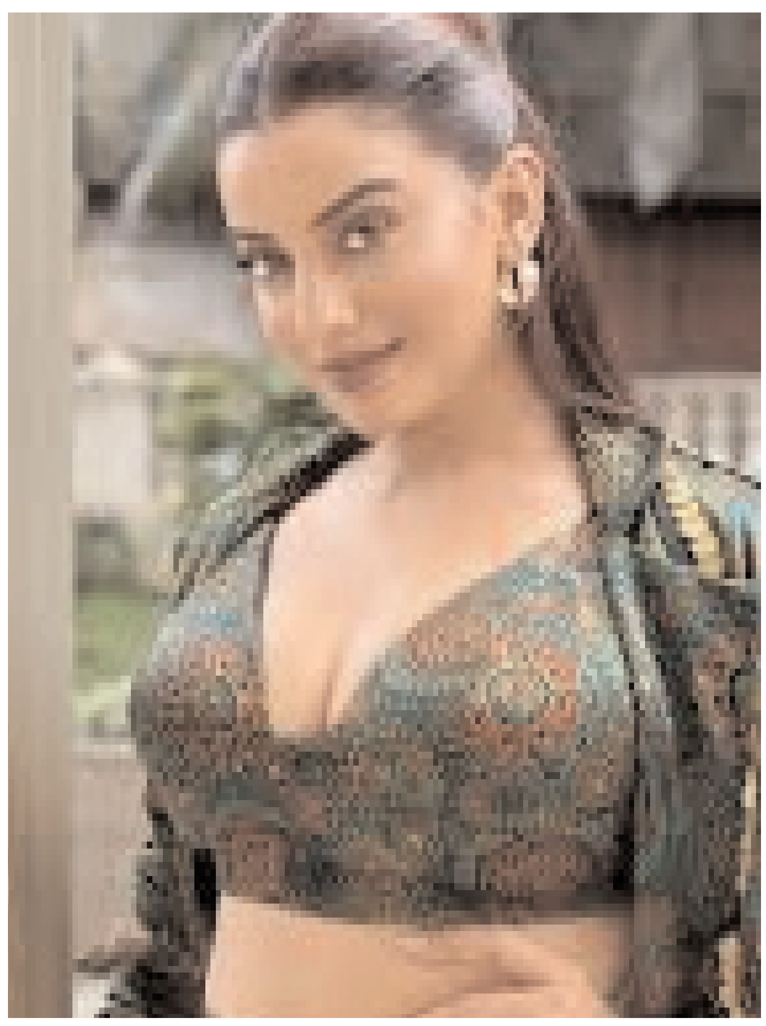

रणवीर-फरहान विवाद पर पूनम ढिल्लों ने कहा, 'बड़ों के झगड़े का असर छोटे लोगों पर न पड़े'

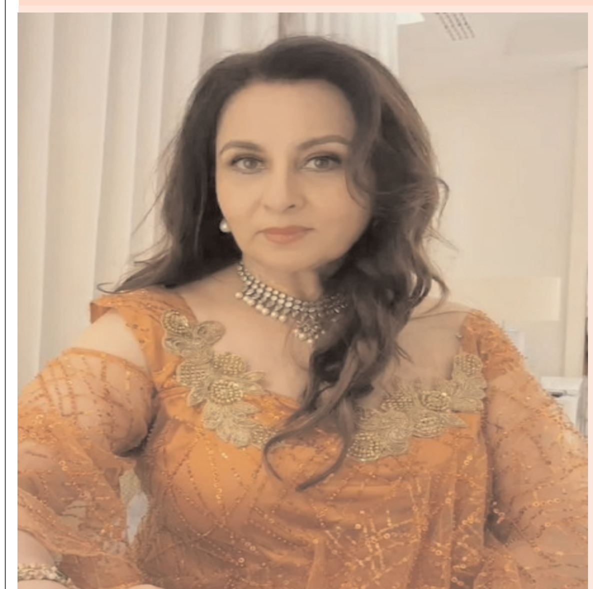

मुंबई। अभिनेत्री हेमा मालिनी के डायमंड जुबली कॉन्सर्ट के मौके पर अभिनेत्री पूनम ढिल्लों ने शिरकत की। इस खास आयोजन में उन्होंने आईएएनएस के साथ बातचीत की। इस दौरान अभिनेत्री ने हाल ही में चर्चा में रहे अभिनेता रणवीर सिंह और निर्माता-अभिनेता फरहान अख्तर से जुड़े विवाद पर अपनी राय रखी।

उन्होंने बताया कि किसी भी फिल्म को बनाने में केवल बडे कलाकार या निर्माता ही शामिल नहीं होते, बल्कि काफी सारे छोटे-बड़े कामगारों और तकनीकी टीम की दिन-रात की मेहनत भी होती है। कलाकारों और निर्माताओं के बीच किसी बात को लेकर मतभेद या अनबन होना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि उनके आपसी विवाद का असर उन मासूम लोगों को नहीं होना चाहिए, जो पूरी ईमानदारी से फिल्म के पीछे रहकर काम करते हैं।

अभिनेत्री पूनम ढिल्लों ने आगे कहा, 'जब भी कोई फिल्म किसी बड़े विवाद के चलते रुकती है, दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को तकलीफ नहीं होनी चाहिए। चाहे अहंकार, आपसी लड़ाई या कोई विवाद हो, उसका असर जरूरतमंद लोगों पर नहीं पड़ना चाहिए। जैसे हम युद्धों में देखते हैं कि फैसले तो नेता और बड़े लोग लेते हैं, लेकिन सबसे ज्यादा नुकसान आम जनता को उठाना पड़ता है। कुछ ऐसा ही हमारी इंडस्ट्री में भी होता है।'

बता दें कि फरहान अख्तर की आगामी फिल्म से रणवीर सिंह ने आखिरी वक्त में पीछे हट गए थे, जिसके बाद फिल्म निर्माताओं (फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी) ने अभिनेता पर आरोप लगाया कि शूटिंग शुरू होने से ठीक पहले रणवीर ने फिल्म छोड़ दी, जिसकी वजह से कंपनी को करीब 45 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ।

फरहान अख्तर की प्रोडक्शन कंपनी (एक्सेल एंटरटेनमेंट) ने आरोप लगाया है कि फिल्म के प्री-प्रोडक्शन पर 45 करोड़ रुपए खर्च हो चुके थे और रणवीर के आखिरी समय में कदम पीछे खींचने से उन्हें भारी नुकसान हुआ।

फरहान अख्तर ने 'इंडियन फिल्म एंड टेलीविजन डायरेक्टर्स एसोसिएशन' और फेडरेशन ऑफ वेस्टर्न इंडिया सिने एम्प्लॉइज से शिकायत की। फेडरेशन द्वारा भेजे गए नोटिस का जवाब न मिलने पर, रणवीर सिंह के खिलाफ 'असहयोग निर्देश' जारी किया गया।

'हेमा मालिनी सच में ड्रीम गर्ल हैं', पद्मिनी कोल्हापुरे ने सुनाए पुराने दिनों के खास किस्से

मुंबई। बॉलीवुड की दिग्गज अभिनेत्री पद्मिनी कोल्हापुरे ने आईएएनएस से बात करते हुए हिंदी सिनेमा की 'ड्रीम गर्ल' हेमा मालिनी को लेकर कई खास बातें साझा कीं। उन्होंने हेमा मालिनी के साथ अपनी पुरानी यादों को ताजा किया और कहा कि उनके साथ काम करना उनके लिए बेहद खास अनुभव रहा है। उन्होंने हेमा मालिनी की खूबसूरती, अभिनय और उनके लंबे फिल्मी सफर की जमकर तारीफ की।

मीडिया को दिए इंटरव्यू में पद्मिनी कोल्हापुरे ने कहा, 'मेरी हेमा मालिनी के साथ कई खूबसूरत यादें जुड़ी हुई हैं। मैंने फिल्म 'ड्रीम गर्ल' में हेमा मालिनी के साथ काम किया था। उस समय मैं काफी छोटी थी और शायद 16 या 17 साल की रही होंगी। इसी फिल्म के बाद हेमा मालिनी को 'ड्रीम गर्ल' का टैग मिला और फिर पूरी फिल्म इंडस्ट्री में वह इसी नाम से मशहूर हो गईं।

उन्होंने कहा, ''हेमा मालिनी की खूबसूरती और स्क्रीन प्रेजेंस इतनी खास थी कि लोग उन्हें देखते ही रह जाते थे। बहुत कम कलाकार ऐसे होते हैं, जिनमें अभिनय, व्यक्तित्व और सुंदरता का ऐसा मेल देखने को मिलता है। पद्मिनी ने आगे कहा, 'फिल्मों के बाद हेमा मालिनी अब राजनीति में सक्रिय हैं और लोगों की आवाज उठाने का काम कर रही हैं। इतने लंबे समय तक लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाए रखना आसान नहीं होता, और हेमा मालिनी ने यह मुकाम अपनी मेहनत और प्रतिभा से हासिल किया है।'

तुषार कपूर ने शेयर की करीना से कश्मीर में पहली मुलाकात की यादें

मुंबई। एक्टर तुषार कपूर की डेब्यू फिल्म 'मुझे कुछ कहना है' ने हाल ही में फिल्म इंडस्ट्री में 25 साल पूरे कर लिए हैं। इससे उत्साहित अभिनेता ने फिल्म की लीड एक्ट्रेस करीना कपूर के साथ अपनी पहली मुलाकात को यादें ताजा कीं।

मीडिया से खास बातचीत में तुषार कपूर ने बताया कि करीना कपूर (बेबो) से उनकी पहली मुलाकात कश्मीर में हुई थी। उस समय करीना अपने चाचा ऋषि कपूर की फिल्म 'शेषनाग' की शूटिंग देखने के लिए वहां गई हुई थीं। उनके चाचा और तुषार के पिता जितेंद्र कपूर भी वहां काम कर रहे थे।

तुषार ने कहा, ''बचपन में हम ज्यादा नहीं मिलते थे, शायद एक या दो बार ही मुलाकात हुई होगी। उन्होंने पहली मुलाकात को याद करते हुए बताया, ''मैं उनसे कश्मीर में मिला था। 1988 में चिंटू अंकल (ऋषि कपूर) मेरे पापा के साथ शूटिंग कर रहे थे और अपनी भतीजियों को साथ लाए थे।''

तुषार ने बताया कि कश्मीर में मुलाकात के बाद वह करीना से 12 साल तक नहीं मिले, हालांकि सोशल सर्कल में कभी-कभी मुलाकात हुई थी क्योंकि उनके कुछ कॉमन दोस्त थे।

''मुझे कुछ कहना है'' की शूटिंग के दौरान भी दोनों के बीच ज्यादा बातचीत नहीं हुई। तुषार कहते हैं कि वह पूरी तरह से अपनी परफॉर्मेंस और फिल्म को सही ढंग से पूरा करने पर फोकस थे।

25 मई को अपनी डेब्यू फिल्म ''मुझे कुछ कहना है'' के 25 साल पूरे होने पर तुषार कपूर ने एक भावुक पोस्ट भी लिखा। उन्होंने लिखा, ''25 साल पहले 25 मई को मेरा अभिनय का सफर शुरू हुआ। यह फिल्म मुझे सिर्फ डेब्यू ही नहीं दे गई, बल्कि जिंदगी भर की यादें भी दीं। समय कितनी तेजी से बीत गया, यह सोचकर अजीब लगता है।''

तुषार ने अपने फिल्मी सफर में साथ देने वाले सभी लोगों को धन्यवाद दिया।

उन्होंने कहा, ''मैं अपने डायरेक्टर, को-एक्टर्स, पूरी टीम, दोस्तों, परिवार और खासकर दर्शकों का बहुत शुक्रगुजार हूं। पिछले 25 साल में आप सबने मुझे इतना प्यार दिया। आगे भी इसी तरह साथ देते रहिए।

भाग्यश्री से शादी पर हिमालय दासानी के परिवार को मिले थे ताने, सास ने बताया- लोग कहते थे 'टूट जाएगा रिश्ता'

मुंबई। अभिनेत्री भाग्यश्री ने अपने करियर की पीक पर हिमालय दासानी से गुपचुप तरीके से शादी की थी, लेकिन इस बात से कम लोग ही वाकिफ होंगे कि एक अभिनेत्री को बहू बनाने के लिए हिमालय के परिवार को समाज के कितने ताने सुनने पड़े थे।

भाग्यश्री की सास ने रियलिटी शो 'तुम हो ना' के आने वाले एपिसोड में शादी के दौरान मिले ताने और शिकायतों को याद किया। उन्होंने बताया, 'उस समय मुझे लोगों से बहुत कुछ सुनने को मिला था कि घर पर स्टार बहू आ रही है, आपकी जिंदगी गई, घर भी नहीं संभाल पाएगी और देखना कुछ समय में तलाक हो जाएगा।'

इसके बाद होस्ट राजीव खंडेलवाल ने पूछा, 'आपको और अभिनेत्री भाग्यश्री को एक-दूसरे के साथ समझ बनाने में समय लगा?' इस सवाल का जवाब भाग्यश्री ने दिया और कहा, 'नहीं, बिल्कुल भी नहीं।'

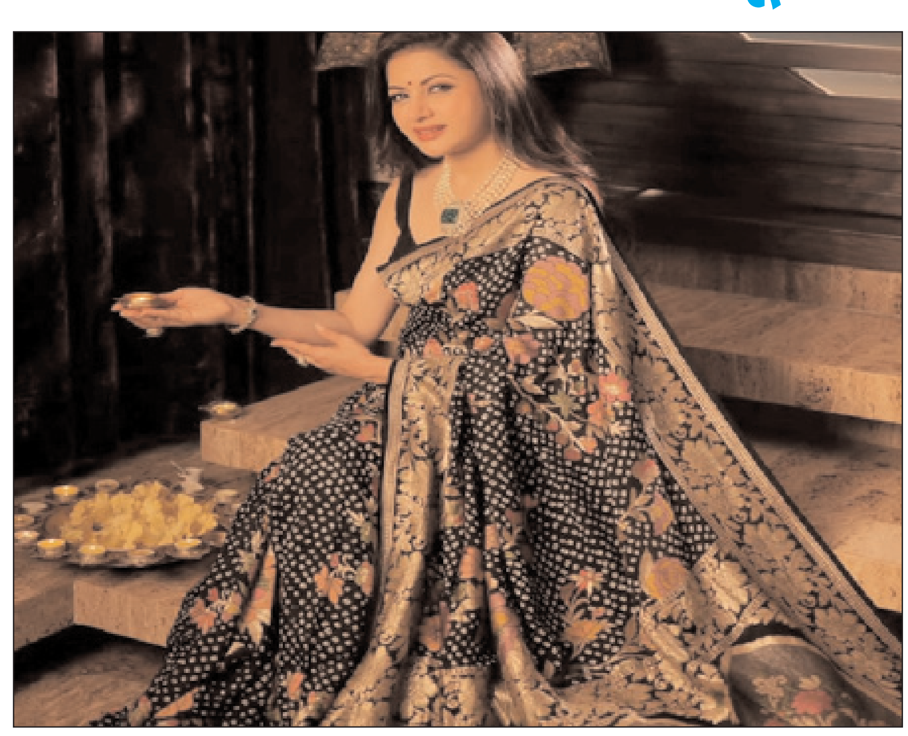

भाग्यश्री की सास ने उनकी तारीफ करते हुए कहा कि वह अपने घर और काम (करियर) दोनों को बहुत अच्छे से संभालती हैं। उन्होंने कहा, 'वह घर को इतनी अच्छी तरह से संभालती हैं कि मुझे किसी बात की चिंता ही नहीं करनी पड़ती।'

बता दें कि भाग्यश्री, पर्सनल तौर पर, एक जाने-माने शाही खानदान से हैं। वह भारत में ब्रिटिश राज के दौरान सांगली रियासत के आखिरी राजा चिंतामनराव धुंडीराव पटवर्धन की परपोती हैं।

अभिनेत्री ने फिल्म 'मैंने प्यार किया' की अपार सफलता के बाद, अपने करियर की पीक पर 19 जनवरी 1989 को बिजनेसमैन हिमालय दासानी से शादी कर ली थी। शादी के बाद भाग्यश्री ने फिल्मों से दूरी बना ली और अपना पूरा ध्यान परिवार पर केंद्रित किया। दोनों के दो बच्चे हैं, बेटा अभिमन्यु दासानी और बेटी अवंतिका दासानी, जो दोनों फिल्म इंडस्ट्री में सक्रिय हैं।

भाग्यश्री हाल ही में फिल्म 'राजा शिवाजी' में नजर आई थीं। अभिनेत्री ने इस फिल्म में छत्रपति शिवाजी महाराज की माता, राजमाता जिजाबाई (जीजाऊ), का महत्वपूर्ण किरदार निभाया था।

अपूर्वा अरोड़ा ने फैंस से मांग लिया ऐसा 'बर्थडे गिफ्ट', तस्वीरें शेयर कर लिखी दिल की बात

मुंबई। अभिनेत्री अपूर्वा अरोड़ा की आगामी फिल्म 'मोमाकु' रिलीज के लिए तैयार हैं। शुक्रवार को उन्होंने मजेदार पोस्ट कर फैंस से तोहफे की मांग की। दरअसल, अभिनेत्री का जन्मदिन और उनकी फिल्म 'मोमाकु' की रिलीज एक ही दिन पड़ रही है। ऐसे में अभिनेत्री ने अपने प्रशंसकों से फिल्म देखने और उसे भरपूर प्यार देने की अपील की।

उन्होंने इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें साझा कीं, जिनमें वह मेकअप रूम में बैठी नजर आ रही हैं। अपूर्वा अरोड़ा ने लिखा, 'मेरा जन्मदिन और फिल्म साथ-साथ आ रहे हैं। बेस्ट गिफ्ट यही होगा कि आप लोग मेरी फिल्म देखें और प्यार दें।

अपूर्वा अरोड़ा की आगामी फिल्म 'मोमाकू' का पूरा नाम 'मोटर, माचिस और कटर' है। यह एक सस्पेंस, थ्रिल और कॉमेडी से

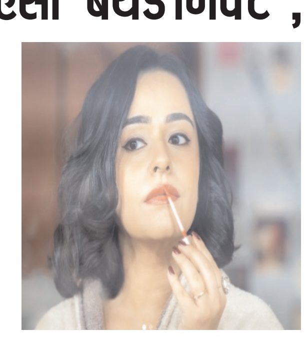

भरपूर फिल्म है, जिसमें अभिनेत्री 'पिंकी' नाम की मुख्य भूमिका निभा रही हैं। उनके साथ जतिन सरना, यशपाल शर्मा और तुषार दत्त जैसे कलाकार भी महत्वपूर्ण किरदारों में नजर आएंगे। फिल्म की कहानी रात के समय की घटनाओं पर आधारित है, इसलिए इसकी शूटिंग ज्यादातर रात में की गई है। फिल्म की पृष्ठभूमि हरियाणा के ग्रामीण परिवेश पर आधारित है। इसकी कहानी एक सर्द रात में घटी एक अजीबोगरीब घटना के इर्द-गिर्द घूमती है, जहां कुछ लोग एक बहुत ही चालाक योजना और धोखे का शिकार होते हैं। इस फिल्म का निर्देशन कुलदीप कुणाल ने किया है और इसमें अपूर्वा जतिन सरना के साथ मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। यह फिल्म 4 जून को केबल वन पर रिलीज होगी। अभिनेत्री अपूर्वा हिंदी, पंजाबी, कन्नड़ और गुजराती फिल्मों के साथ-साथ ओटीटी पर अपने शानदार अभिनय के लिए जानी जाती हैं।

विश्व केसरी

चीन-कनाडा वार्ता के बीच उठा उइगरों के दमन का मुद्दा, चीनी विदेश मंत्री के विरोध में उतरा संगठन

ओटावा। चीन के विदेश मंत्री वांग यी के कनाडा पहुंचने पर, एक प्रमुख उइगर अंतरराष्ट्रीय अधिकार संगठन ने कनाडा सरकार से अपील की है कि वह चीन के मानवाधिकार उल्लंघनों पर खुलकर बात करे और बिना जवाबदेही तय किए चीन के साथ रिश्तों को सामान्य बनाने की कोशिश न करें।

वांग यी की यह तीन दिन की यात्रा 28 से 30 मई तक ऐसे समय में हो रही है जब दोनों देश व्यापार और रणनीतिक समझौतों के जरिए आपसी सहयोग बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। करीब दस साल में यह पहली बार है जब कोई चीनी विदेश मंत्री कनाडा दौरे पर आया है। कनाडा स्थित उइगर राइट्स एडवोकेसी प्रोजेक्ट (यूआरएपी) ने कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी और विदेश मंत्री अनीता आनंद से अपील की कि वे चीनी विदेश मंत्री के साथ बैठक में पूर्वी तुर्किस्तान, जिसे चीन का शिनजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र भी कहा जाता है, में उइगर लोगों की बड़े

पैमाने पर हिरासत और निगरानी का मुद्दा उठाएं।

संगठन ने यह भी कहा कि कनाडाई नेता जबरन मजदूरी, सप्लाई चेन में हो रहे शोषण और कनाडा में उइगर कार्यकर्ताओं और मानवाधिकार समर्थकों को निशाना बनाने वाली चीन की बढ़ती दबाव की राजनीति पर भी बात करें। यूआरएपी का कहना है कि अगर कनाडा चीन के साथ नए समझौते और रणनीतिक साझेदारी आगे बढ़ाता है, जबकि उइगरों के खिलाफ कथित 'नरसंहार' और 'सीमा पार दमन' जारी है, तो इससे कनाडा की अपनी मानवाधिकार प्रतिबद्धताएं कमजोर पड़ सकती हैं। संगठन ने कनाडा और चीन के बीच कानून लागू करने वाले विभागों के कुछ 'गोपनीय' सहयोग समझौतों और रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी) के उन समझौतों पर भी चिंता जताई, जिनमें जानकारी साझा करने, जांच में मदद और चीनी सुरक्षा एजेंसियों के साथ तालमेल शामिल है। आलोचकों का हवाला देते हुए संगठन ने कहा कि इन समझौतों में पारदर्शिता और संसद की निगरानी की कमी है, जिससे कमजोर समुदायों के लिए खतरा बढ़ सकता है। यूआरएपी के कार्यकारी निदेशक मेहमत तोहती ने कहा, 'जब तक उइगर लोग जेलों में बंद हैं, परिवार बिछड़े हुए हैं और दमन के पीड़ित न्याय की तलाश में हैं, तब तक हम चीन सरकार के साथ रिश्तों को सामान्य नहीं बना सकते।

भारत आ रहे तेल टैंकर ने होर्मुज जलडमरूमध्य को किया पार

न्यूयॉर्क। भारत के लिए पेट्रोलियम लेकर जा रहा एक तेल टैंकर होर्मुज जलडमरूमध्य पार कर चुका है। यह जानकारी समुद्री यातायात पर नजर रखने वाली कई वेबसाइटों से मिली है। 'निसोस केरोस' नाम का यह जहाज विशाखापत्तनम जा रहा है और इसके 3 जून तक वहां पहुंचने की उम्मीद है।

मार्शल आइलैंड्स के झंडे वाला यह जहाज 21 मई को शारजाह से रवाना हुआ था। शुक्रवार सुबह 6 बजे भारतीय समय के अनुसार इसे भारत के पश्चिमी तट के पास उत्तरी अरब सागर में देखा गया।

ईरान की समाचार एजेंसी आईआरएनए ने गुरुवार को बताया कि इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने पिछले 24 घंटों में 23 वाणिज्यिक जहाजों को होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने की अनुमति दी, जिनमें तेल टैंकर और कंटेनर जहाज शामिल हैं।

रिपोर्ट में कहा गया कि ईरानी सेना के अनुसार, सभी जहाजों की आवाजाही इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स नौसेना अधिकारियों के साथ औपचारिक समन्वय के बाद हुई। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि जलडमरूमध्य से गुजरने के लिए जहाजों को कोई शुल्क देना पड़ा या नहीं।

ईरान पहले ही कह चुका है कि वह होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने के लिए शुल्क ले सकता है। इसी महीने ईरान ने समुद्री यातायात को नियंत्रित करने के लिए 'पर्शियन गल्फ स्ट्रेट अथॉरिटी' नाम की एजेंसी बनाने की घोषणा की थी। संयुक्त राष्ट्र ने अंतरराष्ट्रीय जलमार्गों से गुजरने के लिए शुल्क वसूलने को अवैध बताया है। अमेरिका ने ईरान से मांग की है कि वह जलडमरूमध्य में स्वतंत्र आवाजाही बहाल करे। फरवरी में अमेरिका द्वारा इजरायल के साथ मिलकर ईरान पर बमबारी करने के बाद ईरान ने इस मार्ग में बारूदी सुरंगें बिछा दी थीं और जहाजों पर हमले किए थे।

संक्षिप्त खबर

ईरान ने अमेरिकी ड्रोन मार गिराने का दावा किया, खाड़ी क्षेत्र में बढ़ा तनाव

तेहरान। ईरान के दक्षिणी प्रांत बुशहर में गुरुवार रात एयर डिफेंस सिस्टम सक्रिय कर दिए गए। ईरानी मीडिया के मुताबिक एक घुसपैठ करने वाले अमेरिकी ड्रोन को मार गिराया गया। अर्ध-सरकारी समाचार एजेंसी तस्नीम ने एक सैन्य सूत्र के हवाले से कहा कि ईरान की एयर डिफेंस प्रणाली ने बुशहर के पास एक अमेरिकी ड्रोन को मिसाइल दागकर रोक दिया। समाचार एजेंसी फार्स ने बताया कि ईरान की सेना ने देश के दक्षिणी इलाकों से कुछ लक्ष्यों पर मिसाइलें दागीं। कुछ स्थानीय सूत्रों ने खाड़ी क्षेत्र में झड़पों की संभावना भी जताई। समाचार एजेंसी मेहर ने कहा कि ईरानी सेना ने होर्मुज स्?ट्रेट के पास चार जहाजों पर चेतावनी के तौर पर फायरिंग की। बताया गया कि ये जहाज ईरान से बिना समन्वय किए जलमार्ग पार करने की कोशिश कर रहे थे। गुरुवार तड़के ईरानी मीडिया ने बंदर अब्बास शहर के पूर्वी हिस्से में तीन धमाकों की खबर दी। बाद में कई अमेरिकी मीडिया रिपोर्टों में कहा गया कि अमेरिकी सेना ने रातभर ईरान में हमले किए। इन हमलों में एक सैन्य ठिकाने को निशाना बनाया गया, जिसे वॉशिंगटन ने अमेरिकी सैनिकों और व्यावसायिक जहाजों के लिए खतरा बताया।

शांगरी-ला डायलॉग में भारत की सक्रिय भागीदारी, वैश्विक सुरक्षा पर हुई चर्चा

सिंगापुर। रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह ने शुक्रवार को सिंगापुर में हुए शांगरी-ला डायलॉग के दौरान नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन (नाटो) की मिलिट्री कमेटी के चेयरमैन एडमिरल ज्यूसेपे कैवो ड्रैगन से मुलाकात की। इस बैठक में रणनीतिक बातचीत को मजबूत करने और दुनिया के बदलते सुरक्षा हालात पर चर्चा हुई। रक्षा मंत्रालय के जनसंपर्क निदेशालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए कहा, 'रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह ने एसएलडी-26 के दौरान नाटो मिलिट्री कमेटी के चेयरमैन एडमिरल ज्यूसेपे कैवो ड्रैगन से बातचीत की। चर्चा का मुख्य फोकस रणनीतिक संवाद को मजबूत करना और बदलती वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों पर विचार साझा करना था। इस बातचीत ने बड़े बहुपक्षीय रक्षा संगठनों के साथ रचनात्मक सहयोग के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को फिर से मजबूत किया।' सिंगापुर में आयोजित हो रहे शांगरी-ला डायलॉग में कई देशों के सरकारी मंत्री हिस्सा ले रहे हैं। यहां बड़े स्तर पर चर्चा सत्रों के साथ-साथ अलग-अलग देशों के प्रतिनिधियों के बीच द्विपक्षीय बैठकें भी हो रही हैं। इस मंच पर एशिया-प्रशांत, उत्तरी अमेरिका, यूरोप, मिडिल ईस्ट और अन्य क्षेत्रों के नीति-निर्माता क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों और उनसे निपटने की रणनीतियों पर चर्चा करते हैं।

पाकिस्तान में अफगान पत्रकार गिरफ्तार, शरणार्थियों पर बढ़ती कार्रवाई पर मानवाधिकार संगठन ने जताई चिंता

काबुल। पाकिस्तान पुलिस ने अफगान पत्रकार सैयद कासिम हाशमी को एबटाबाद-इस्लामाबाद हाईवे पर गिरफ्तार कर लिया है। स्थानीय मीडिया ने शुक्रवार को इस घटना की जानकारी दी।

सूत्रों के मुताबिक, अफगानिस्तान स्थित खामा प्रेस ने बताया कि हाशमी को गुरुवार दोपहर करीब 12:19 बजे पाकिस्तान की पुलिस ने एबटाबाद-इस्लामाबाद हाईवे पर गिरफ्तार किया गया। अभी तक पाकिस्तानी अधिकारियों ने उनकी गिरफ्तारी की वजह या उनकी मौजूदा हालत के बारे में कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया है।

उन्हें कहां रखा गया है, इसकी भी कोई पक्की जानकारी नहीं मिल पाई है। उनके साथी

पत्रकार और जानने वाले लोग लगातार जानकारी जुटाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अब तक कोई सफलता नहीं मिली है।

पिछले कुछ महीनों में पाकिस्तान में अफगान शरणार्थियों की गिरफ्तारी और उन्हें देश से बाहर भेजने की घटनाएं बढ़ी हैं। इनमें पत्रकार भी शामिल हैं। यह कार्रवाई अवैध प्रवासियों के खिलाफ चल रहे अभियान का हिस्सा बताई जा रही है। इसको लेकर मानवाधिकार संगठनों ने चिंता जताई है।

खामा प्रेस के अनुसार, 20 मई को भी पाकिस्तानी पुलिस ने अफगान पत्रकार परवेज अमीनजादा को इस्लामाबाद में गिरफ्तार किया था। स्थानीय सूत्रों के अनुसार, उन्हें फैसल टाउन इलाके से हिरासत में लिया गया था।

मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि 2021 में तालिबान के अफगानिस्तान पर कब्जा करने के बाद वहां के कई पत्रकार डर, सेंसरशिप और मीडिया पर बढ़ती पाबंदियों की वजह से देश छोड़कर भाग गए थे। इनमें से कई लोग पाकिस्तान और ईरान जैसे पड़ोसी देशों में जाकर रहने लगे, जहां वे पश्चिमी देशों में पुनर्वास के अवसर का इंतजार कर रहे हैं।

आठ मई को अफगानिस्तान मीडिया सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (एएमएसओ) ने कहा था कि पाकिस्तान में रह रहे अफगान शरणार्थियों को मनमानी गिरफ्तारियों, दुर्व्यवहार, जबरन पैसे वसूलने और जबरन निर्वासन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

अमेरिका के पास हम पर हमला करने की कोई वजह नहीं : क्यूबा के उप विदेश मंत्री

हवाना। संयुक्त राज्य अमेरिका के पास क्यूबा पर हमला करने का कोई ठोस कारण नहीं है। क्यूबा के उप विदेश मंत्री कार्लोस फर्नांडीज डी कोसियो ने कहा कि अगर ऐसा कदम उठाया गया, तो इससे सिर्फ मौत, तबाही और भारी नुकसान होगा।

फर्नांडीज डी कोसियो ने अमेरिकी पत्रिका 'पॉलिटिको' की एक रिपोर्ट के जवाब में सोशल मीडिया 'एक्स' पर एक पोस्ट में लिखा, 'क्या लोगों को मारने, घायल करने, तबाही फैलाने और दुख पैदा करना कोई सही वजह है? और वह भी तब, जब इसमें अपने ही पक्ष के लोगों की जान जाने का निश्चित जोखिम भी शामिल हो?'

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने मैगजीन पर आरोप लगाया कि वह अमेरिका को युद्ध के लिए उकसा रही है। साथ ही उन्होंने इस दावे की आलोचना की कि अमेरिकी सेना क्यूबा पर हमला करने के लिए तैयार है और सिर्फ 'डोनाल्ड ट्रंप की आखिरी मंजूरी' का इंतजार कर रही है।

बुधवार को प्रकाशित 'पॉलिटिको' की रिपोर्ट में कहा गया था कि पेंटागन कई महीनों से उन सैनिकों और हथियारों की तैयारी कर रहा है, जिनकी मदद से अमेरिका क्यूबा पर सैन्य हमला कर सकता है। 2026 की शुरुआत से ही अमेरिका ने क्यूबा के खिलाफ कई नए कदम उठाए हैं। इनमें उन देशों पर पाबंदियां लगाना भी शामिल है जो क्यूबा को तेल सप्लाई करते हैं।

ट्रंप ने ईरान समझौते के लिए तीन स्पष्ट शर्त निर्धारित की : स्कॉट बेसेंट

वाशिंगटन। अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने कहा कि ट्रंप प्रशासन ने ईरान के साथ किसी भी समझौते के लिए तीन बड़ी शर्तें रखी हैं। तेहरान को अपना अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम सौंपना होगा, परमाणु हथियार बनाने की किसी भी कोशिश को छोड़ना होगा और होर्मुज जलडमरूमध्य से निर्बाध नौवहन बहाल करना होगा।

हालांकि बेसेंट ने बार-बार इस बात की पुष्टि करने से इनकार कर दिया कि कोई अस्थायी समझौता हो चुका है। व्हाइट हाउस में एक ब्रीफिंग के दौरान बेसेंट ने मीडिया से कहा, 'दोनों टीमें लगातार बातचीत कर रही हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक दिन पहले कैबिनेट की बैठक में अपना रुख स्पष्ट कर दिया था। बेसेंट ने कहा, 'ईरान को अपना अत्यधिक संवर्धित यूरेनियम सौंपना होगा। वे

परमाणु हथियार बनाने का प्रयास नहीं कर सकते। होर्मुज जलडमरूमध्य में यातायात निर्बाध होना चाहिए। समुद्र में आवागमन पहले की तरह ही निर्बाध और खुला होना चाहिए। वह कोई बुरा समझौता नहीं करेंगे। वह अमेरिकी जनता के लिए एक बेहतरीन समझौता करेंगे।'कई बार पूछे जाने पर कि क्या 60 दिनों के लिए युद्धविराम विस्तार और परमाणु वार्ता जारी रखने सहित कोई अस्थायी समझौता हो चुका है, बेसेंट ने कोई विस्तृत जानकारी देने से इनकार कर दिया।

उन्होंने कहा, 'सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि राष्ट्रपति क्या करना चाहते हैं। राष्ट्रपति से आगे निकलने की कोशिश करना हमेशा एक गलती होती है।'

सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी लोगों की व्यक्तिगत आजादी के लिए खतरा : स्कॉट बेसेंट

वाशिंगटन। ट्रंप प्रशासन ने अमेरिका में सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) बनाने की संभावना को साफ तौर पर खारिज कर दिया है। ट्रेजरी सचिव स्कॉट बेसेंट का कहना है कि सरकार की ओर से जारी की जाने वाली डिजिटल मुद्रा लोगों की वित्तीय गतिविधियों पर नजर रखने का जरिया बन सकती है और इससे व्यक्तिगत आजादी को खतरा हो सकता है।

व्हाइट हाउस की एक प्रेस ब्रीफिंग में बेसेंट ने कहा कि डिजिटल डॉलर को लेकर सरकार का रुख बिल्कुल साफ है।उन्होंने कहा कि इस प्रशासन ने साफ कर दिया है कि कोई सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी नहीं होगी।

बेसेंट ने यह भी कहा कि सीबीडीसी से सरकार को लोगों के निजी वित्तीय लेनदेन पर ज्यादा नियंत्रण और निगरानी का मौका मिल सकता है। उन्होंने कहा कि

मुझे लगता है कि यह ट्रैकिंग की तरफ जाने वाला पहला कदम होगा।

इन बातों से साफ है कि अमेरिका उन देशों की सूची में है जो सरकारी डिजिटल मुद्रा को लेकर सतर्क या विरोधी रुख रखते हैं, जबकि दुनिया के कई देश अपनी-अपनी डिजिटल करेंसी पर अभी भी काम कर रहे हैं या उसे टेस्ट कर रहे हैं।

डिजिटल डॉलर का समर्थन करने के बजाय, बेसेंट ने कहा कि सरकार निजी क्षेत्र की डिजिटल संपत्तियों और स्टेबलकॉइन को एक रेगुलेटेड (नियमों के तहत) सिस्टम में बढ़ावा देना चाहती है। उन्होंने कहा, 'हमने स्टेबलकॉइन से जुड़ा कानून दोनों पार्टियों के समर्थन से पास किया है, और 'क्लैरिटी एक्ट' अभी संसद में है, जिसे भी दोनों पार्टियों का समर्थन मिल रहा है।'

ट्रेजरी सचिव का कहना है कि अगर डिजिटल एसेट्स को अमेरिका के नियमों के तहत लाया जाए, तो इससे ज्यादा सुरक्षा मिलेगी, बजाय इसके कि यह इंडस्ट्री बाहर बिना सही निगरानी के चलती रहे।

पूर्व पीएम शेख हसीना ने अवामी लीग नेताओं की मौत को बताया सुनियोजित हत्या, जांच की मांग

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने देश भर में कई अवामी लीग नेताओं और कार्यकर्ताओं की मौत पर गहरी चिंता जताई है। उन्होंने मौजूदा बांग्लादेश नेशनल पार्टी (बीएनपी) सरकार पर आरोप लगाया कि वह उस हिंसा के चक्र को आगे बढ़ा रही है, जिसकी शुरुआत पूर्व अंतरिम सरकार मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में हुई थी।

उन्होंने कहा कि यह स्थिति दिखाती है कि देश में कानून के शासन को लेकर गंभीर कमी है और राजनीतिक हिंसा का चिंताजनक पैटर्न लगातार जारी है।

यह बयान उस घटना के बाद आया, जब 78 वर्षीय मोहम्मद दबीरुल इस्लाम की गुरुवार की

दोपहर ढाका के स्क्वायर अस्पताल में मौत हो गई। वे एक अनुभवी स्वतंत्रता सेनानी और पूर्व अवामी लीग सांसद थे। उनकी खराब स्वास्थ्य के चलते जमानत मिलने के तीन महीने बाद मौत हुई।

जुलाई 2024 के प्रदर्शन के बाद हुए राजनीतिक बदलावों के बाद, उन्हें तीन अक्टूबर 2024 को हिरासत में लिया गया था। उन पर बालियाडांगी पुलिस स्टेशन में दर्ज एक कथित जबरन वसूली मामले में आरोप था। खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें 19 फरवरी को जमानत मिल गई थी। शेख हसीना ने मोहम्मद दबीरुल इस्लाम की मौत पर दुख जताते हुए कहा कि वे भी पूर्व अंतरिम सरकार के कथित अत्याचारों का शिकार बने। अवामी लीग के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्?स' पर पोस्?ट में शेख हसीना ने कहा, ''गंभीर शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना के बाद उनकी हालत बहुत खराब हो गई थी, फिर उन्हें 19 फरवरी को जमानत मिली। हालांकि उनके बेटे, पूर्व सांसद मजहरुल इस्लाम सुजान, अभी भी झूठे मामलों में फंसे हुए हैं।

खाड़ी से निकलने का इंतजार कर रहे करीब दो हजार जहाज : स्कॉट बेसेंट

वाशिंगटन। अमेरिका के ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट ने बताया कि स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के आसपास तनाव की वजह से लगभग 2,000 जहाज इस समय खाड़ी से बाहर निकलने का इंतजार कर रहे हैं।

ट्रंप के एक टॉप कैबिनेट मेंबर के इस खुलासे से पहली बार अंदाजा लगा है कि इस अहम समुद्री रास्ते पर कितना बड़ा जाम लग चुका है। दुनिया के तेल और लिक्विफाइड नेचुरल गैस (एलएनजी) का बड़ा हिस्सा आम तौर पर इसी रास्ते से गुजरता है।

व्हाइट हाउस में पत्रकारों से बात करते हुए बेसेंट ने कहा कि करीब 2,000 जहाज खाड़ी से बाहर आने का इंतजार कर रहे हैं। हालांकि, उन्होंने भरोसा जताया कि जैसे ही शिपिंग दोबारा सामान्य होगी, दुनिया के

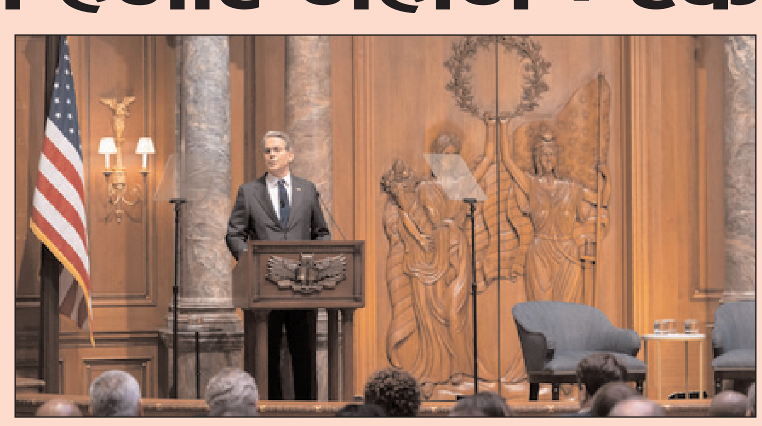

बाजार इस स्थिति को संभाल लेंगे।

उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि इसके बाद तेल की सप्लाई काफी अच्छी रहेगी और कीमतें बहुत जल्दी नीचे आ सकती हैं।

स्ट्रेट ऑफ होर्मुज अब ट्रंप प्रशासन और ईरान के बीच चल रही बातचीत का बड़ा मुद्दा बन गया है। बेसेंट ने बार-बार कहा कि समुद्री रास्तों पर फिर से बिना रुकावट आवाजाही शुरू कराना अमेरिका की बड़ी प्राथमिकताओं में से एक है। उन्होंने कहा कि स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में जहाजों की आवाजाही पूरी तरह खुली होनी चाहिए। समुद्र में पहले की तरह खुला और सुरक्षित आवागमन जरूरी है।

यह जहाजों की भीड़ ऐसे समय में बढ़ी है जब दुनिया भर की सरकारें और कंपनियां इस बात पर नजर रखे हुए हैं कि कहीं ऊर्जा सप्लाई और व्यापार पर लंबे समय तक असर न पड़े। बेसेंट का कहना है कि बाजार अभी भी मजबूत स्थिति में है और जैसे ही हालात सुधरेंगे, बड़ी संख्या में जहाज एक साथ रवाना हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि? जैसे ही यह रास्ता खुलेगा, हम जहाजों की एक बड़ी लहर बाहर निकलते देखेंगे।

बारिश और तेज हवाओं ने मचाया कहर, 4 की मौत

अमरावती। आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों में गुरुवार देर रात तेज़ हवाओं के साथ हुई बारिश ने भारी तबाही मचा दी, जिससे अलग-अलग घटनाओं में चार लोगों की मौत हो गई।

कृष्णा जिले के कुम्मारिपालेम में एक दर्दनाक हादसा हुआ, जहां मोटरसाइकिल पर सवार दो युवकों पर पेड़ गिर गया। इस हादसे में दोनों युवकों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान मनोहर और शिवराम कृष्ण के रूप में हुई है।

दो अलग-अलग घटनाओं में बिजली का झटका लगने से एक होम गार्ड और एक छात्र की मौत हो गई।

कृष्णा जिले में बिजली का झटका लगने से एक छात्रा की मौत हो गई। मृतका की पहचान इंटरमीडिएट की छात्रा अनीता के रूप में हुई है। यह घटना पामिडीमुक्काला मंडल के लंकापल्ली गांव में हुई। अनीता पीने का पानी लेने के लिए नल पर गई थी, तभी वह एक बिजली के तार के संपर्क में आ गई। यह तार पिछली रात तेज़ हवाओं के कारण टूट गया था।

एनटीआर जिले के विजयवाड़ा में बिजली का तार गिरने से एक होम गार्ड की मौत हो गई। प्रभावित जिलों में कुछ जगहों पर तेज़ हवाओं के कारण पेड़ और बिजली के खंभे उखड़ गए और होर्डिंग भी गिर गए। कुछ जगहों पर पेड़ उखड़कर सड़कों पर गिर जाने से वाहनों का आवागमन बाधित हो गया। कृष्णा जिले के मछलीपट्टनम में भारी बारिश हुई, जिससे सड़कें जलमग्न हो गईं और वाहनों का आवागमन बाधित हो गया।

पूर्वी गोदावरी जिले में स्थित 'रैतु सेवा केंद्र' पर बिजली गिर गई। इससे केंद्र में किसानों के लिए रखे खाली बोरों में आग लग गई। दमकल विभाग के कर्मचारियों ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पा लिया। कृष्णा, गुंटूर, प्रकाशम, बापटला, पलनाडु, पूर्वी गोदावरी, पश्चिम गोदावरी, डॉ. बी.आर. अंबेडकर कोनसीमा और कडपा जिलों के कुछ क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति प्रभावित हुई। ऊर्जा मंत्री गोट्टिपाटी रवि कुमार ने कहा कि कल रात बारिश और तेज़ हवाओं के कारण कुछ इलाकों में बिजली आपूर्ति बाधित हो गई थी। उन्होंने अधिकारियों को शुक्रवार दोपहर तक बिजली आपूर्ति बहाल करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि बारिश और तेज हवाओं के कारण बहाली का काम प्रभावित हुआ।

अधिकारियों ने मंत्री को बताया कि गोदावरी के दोनों जिलों के ज्यादातर प्रभावित इलाकों में बिजली आपूर्ति बहाल कर दी गई है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे बिजली के झटके लगने की घटनाओं से बचने के लिए सभी जरूरी सावधानियां बरतें।

मंत्री ने उस घटना पर दुख व्यक्त किया, जिसमें बिजली का तार टूटकर गिरने से एक होम गार्ड की करंट लगने से मौत हो गई। उन्होंने मृतक के परिवार को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

सीएम योगी ने पूर्व पीएम चौधरी चरण सिंह को दी श्रद्धांजलि, बताया-किसानों का मसीहा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्व प्रधानमंत्री 'भारत रत्न' चौधरी चरण सिंह की पुण्यतिथि पर शुक्रवार को उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सीएम योगी ने विधान भवन स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्पार्चन किया।

सीएम योगी ने अपने संबोधन में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत मां का महान सपूत और किसानों का मसीहा बताया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसंबर 1902 को उत्तर प्रदेश में हुआ था। वह देश के स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े थे। देश में कृषि, राजस्व के क्षेत्र में तमाम रिफॉर्म का श्रेय उन्हें जाता है। उनका स्पष्ट मत था कि देश के विकास का रास्ता गांव, खेत व खलिहालों से होकर जाता है। किसान विकास के एजेंडे और सरकार की प्राथमिकता का हिस्सा होना चाहिए। शासन की योजनाएं किसानों को ध्यान में रखकर तैयार की जानी चाहिए। चौधरी चरण सिंह द्वारा देशहित में किए गए कार्यों को ध्यान में रखते हुए उन्हें भारत रत्न की उपाधि से भी सम्मानित किया गया। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार चौधरी चरण सिंह की स्मृतियों को जीवंत बनाए रखने के लिए किसानों के हित से जुड़े अनेक कार्यक्रम चला रही है।

संक्षिप्त खबर

हथियार तस्करी गिरोह का भांडाफोड़, 9 पिस्तौल और 40 कारतूस बरामद, तीन गिरफ्तार

जालंधर। पंजाब पुलिस ने अवैध हथियारों की तस्करी करने वाले एक बड़े गिरोह का भंडाफोड़ किया है। जालंधर पुलिस कमिश्नरेट की टीम ने एक विशेष अभियान में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया और उनके पास से बड़ी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किए। पंजाब डीजीपी के आधिकारिक 'एक्स' हैंडल से जारी पोस्ट में इस सफलता की जानकारी देते हुए बताया गया कि जालंधर पुलिस ने 5 पिस्तौल (.32 बोर), 9 मैगजीन और 22 जिंदा कारतूस बरामद किए। शुरुआती जांच में पता चला कि यह गिरोह पंजाब के अंदर ही अवैध हथियारों की तस्करी का नेटवर्क चला रहा था। पुलिस ने जालंधर बस स्टैंड के पास पहली गिरफ्तारी की। पूछताछ के दौरान मिली जानकारी के आधार पर टीम ने गुरदासपुर जिले के भैनी पसवाल गांव के पास छिपाकर रखे गए हथियारों को भी बरामद कर लिया। यहां से 4 अतिरिक्त पिस्तौलें, 8 मैगजीन और 18 जिंदा कारतूस जब्त किए गए। इस तरह कुल 9 पिस्तौल, 17 मैगजीन और 40 जिंदा कारतूस पुलिस ने बरामद किए। पंजाब पुलिस ने स्पष्ट किया कि इस पूरे नेटवर्क को जड़ से खत्म करने के लिए जांच जारी है। गिरोह के सभी लिंक्स का पता लगाया जा रहा है। पंजाब डीजीपी ने पोस्ट में लिखा, 'अवैध हथियारों की तस्करी के खिलाफ हमारी 'जीरो टॉलरेंस' नीति है। राज्य में शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए हम पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।'

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद को सुप्रीम कोर्ट से राहत, अग्रिम जमानत को चुनौती देने वाली याचिका खारिज

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने प्रयागराज के 'पॉक्सो' मामले में ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को बड़ी राहत दी है। अदालत ने नाबालिगों के यौन उत्पीड़न से जुड़े आरोपों के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा दी गई अग्रिम जमानत को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती और उनके शिष्य स्वामी मुकुंदानंद ब्रह्मचारी पर तत्काल गिरफ्तारी का खतरा टल गया है। दरअसल, यह मामला प्रयागराज के झूंसी थाने में दर्ज एक एफआईआर से जुड़ा है, जिसमें पॉक्सो अधिनियम की विभिन्न धाराओं के साथ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराएं भी लगाई गई हैं। शिकायतकर्ता आशुतोष ब्रह्मचारी ने आरोप लगाया था कि माघ मेले के दौरान स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद और उनके सहयोगियों ने नाबालिग बटुकों का यौन शोषण किया। प्रयागराज की स्पेशल पॉक्सो कोर्ट के आदेश पर 21 फरवरी 2026 को एफआईआर दर्ज की गई थी। इसके बाद स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने इलाहाबाद हाईकोर्ट का रुख किया। 25 मार्च 2026 को न्यायमूर्ति जितेंद्र कुमार सिन्हा की एकल पीठ ने उनकी अग्रिम जमानत याचिका मंजूर कर ली। कोर्ट ने एफआईआर में कई विसंगतियां पाईं। पीड़ितों ने घटना 18 जनवरी को बताई, जबकि शिकायतकर्ता ने पुलिस को 24 जनवरी को सूचना दी। देरी का कारण पूजा-यज्ञ बताया गया, जिस पर कोर्ट ने सवाल उठाए। चिकित्सा रिपोर्ट में नाबालिगों के शरीर पर कोई बाहरी चोट के निशान नहीं मिले।

एसिड गिरने से दर्दनाक हादसा, महिला की मौत, दो बच्चे गंभीर रूप से झुलसे

भोपाल। मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले के मोहनपुरा गांव में एक दर्दनाक हादसा हुआ। घर में रखा एसिड का एक कैन एक महिला और बच्चों पर गिर गया, जिससे तीनों झुलस गए।

घटना में 24 वर्षीय पिंकी की मौत हो गई, जबकि उसके दो बच्चे गंभीर रूप से झुलसकर घायल हो गए। यह हादसा शुक्रवार सुबह करीब 4 बजे हुआ, जब 5 लीटर एसिड का कैन अचानक रैक से गिर गया, जिसे खेतों में ड्रिप सिंचाई लाइनों की सफाई के लिए घर में रखा गया था। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, घर में चूहों की आवाजाही के कारण कैन हिल गया और नीचे गिरकर उसमें रखा तेजाब परिवार पर फैल गया।

पिंकी के पति विजय चौहान अपने परिवार के साथ खेत में बने घर में रह रहे थे, जो सालेखड़ा गांव के रहने वाले हैं।

परिवार खेती के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली का उपयोग करता था, जिसकी सफाई के लिए एसिड का इस्तेमाल किया जाता है। इसी वजह से एसिड को रैक पर रखा गया था, लेकिन चूहों के कारण यह दर्दनाक हादसा हो गया।

परिवार के लोग तुरंत घायलों को राजपुर स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। हालत गंभीर होने पर डॉक्टरों ने उन्हें बड़वानी जिला अस्पताल रेफर कर दिया। दुर्भाग्यवश, अस्पताल ले जाते समय पिंकी की मौत हो गई। दोनों बच्चे गंभीर रूप से झुलसे हैं और जिला अस्पताल के बर्न वार्ड में उनका इलाज चल रहा है।

डॉक्टरों की टीम उनकी हालत पर लगातार नजर रख रही है। फिलहाल, उनकी स्थिति गंभीर बताई जा रही है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अधिकारी यह भी जांच कर रहे हैं कि एसिड के भंडारण में सुरक्षा नियमों का पालन किया गया था या नहीं।

जिला प्रशासन ने पीड़ित परिवार को हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया है, जिसमें बच्चों के इलाज में मदद भी शामिल है। लोगों ने घटना पर गहरा दुख जताया है और कहा कि घरों में खतरनाक रसायनों के भंडारण से ऐसे हादसे हो सकते हैं।

केरल में 'वंदे मातरम' विवाद पर राज्यपाल ने जताई नाराजगी, बोले-पूरा गाया जाना चाहिए था

तिरुवनंतपुरम। केरल विधानसभा के उद्घाटन सत्र के दौरान वंदे मातरम गाने को लेकर हुए विवाद के बाद राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने शुक्रवार को सार्वजनिक रूप से पुष्टि की कि राजभवन (लोक भवन) ने उद्घाटन सत्र के दौरान वंदे मातरम को पूरा गाने पर जोर दिया था।

हालांकि, पी. विजयन के नेतृत्व वाले वाम दल ने इस विवाद में हस्तक्षेप करते हुए मौजूदा परंपरा का समर्थन किया, जिसके तहत वंदे मातरम का केवल छोटा हिस्सा ही गाया जाता है।

धान के पौधे लगाने के एक कार्यक्रम में हिस्सा लेने के बाद लोक भवन में पत्रकारों से बात करते हुए आर्लेकर ने कहा कि राज्यपाल के दफ्तर ने विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले ही अपना रुख साफ कर दिया था।

राज्यपाल ने कहा, 'हमने जिस बात पर जोर दिया था, वह यह थी कि जब भी राज्यपाल मौजूद हों, तो 'वंदे मातरम' पूरा गाया जाना चाहिए। उन्होंने इसे गाया नहीं, बल्कि सिर्फ बजाया जबकि वे इसे गा सकते थे। देखते हैं आगे क्या होता है। मैंने स्पीकर से इस बारे में बात की है।'

उनकी यह टिप्पणी केरल पुलिस बैंड द्वारा विधानसभा में राज्यपाल के नीतिगत संबोधन से ठीक पहले 'वंदे मातरम' का सिर्फ शुरुआती हिस्सा बजाए जाने के कुछ घंटों बाद आई। रिहर्सल के दौरान लोक भवन से यह निर्देश दिए जाने की खबरें थीं कि इसका पूरा संस्करण बजाया जाना चाहिए।

बेंगलुरु में 'आर्ट ऑफ लिविंग' का समारोह, उपराष्ट्रपति ने जारी किया स्मारक डाक टिकट

बेंगलुरु। भारत के उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने गुरुवार को 'द आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन' के 45 वर्ष पूरे होने के अवसर पर पांच राष्ट्रीय पहलों की शुरुआत की और एक स्मारक डाक टिकट का भी अनावरण किया। यह कार्यक्रम बेंगलुरु स्थित आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित किया गया।

उपराष्ट्रपति ने संगठन के 45 वर्षों के सामाजिक, मानवीय और वैश्विक शांति से जुड़े योगदान को सम्मानित करते हुए स्मारक डाक टिकट जारी किया।

इस दौरान जिन पांच नई पहलों की शुरुआत की गई, उनमें यूथ करियर एक्सीलेंस प्रोग्राम, फैकल्टी ऑफ ईस्टर्न नॉलेज सिस्टम्स, आर्ट ऑफ लिविंग इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप इनक्यूबेशन, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ऑन कॉन्शियसनेस स्टडीज एंड ह्यूमन पोटेंशियल और इको शांति शामिल हैं। इन पहलों का उद्देश्य शिक्षा, नवाचार, पर्यावरण संरक्षण और मानव विकास को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर में एक महीने तक चले समारोह का समापन था। इसमें देश-विदेश से 678 विशिष्ट अतिथि शामिल हुए। इनमें राजनीतिक नेता, उद्योगपति, खिलाड़ी, शिक्षाविद, धार्मिक गुरु, राजनयिक, कलाकार और सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने कहा, 'आज हम एक ऐसे महान विचार का उत्सव मना रहे हैं जिसने दुनिया भर में लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आर्ट ऑफ लिविंग 182 देशों में मौजूद है।

'विरोधियों को निशाना बनाने के लिए इस्तेमाल', ईडी छापेमारी पर पहली बार बोले विजयन

तिरुवनंतपुरम। ईडी की छापेमारी को लेकर केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता और पूर्व सीएम पिनाराई विजयन ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने शुक्रवार को केंद्र सरकार पर केंद्रीय एजेंसियों का राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल करने का आरोप लगाया।

केरल विधानसभा में राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर के अभिभाषण के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए विजयन शुरुआत में विधानसभा की कार्यवाही पर बोल रहे थे, लेकिन जैसे ही उनके घर पर हुई ईडी की कार्रवाई से जुड़ा सवाल पूछा गया तो वह असहज नजर आए।

ईडी की छापेमारी पर पहली बार सीधे प्रतिक्रिया देते हुए पूर्व मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि केंद्र की भाजपा सरकार अपने राजनीतिक विरोधियों को निशाना बनाने के लिए ईडी का इस्तेमाल कर रही है।

उन्होंने कहा, ''गैर-भाजपा सरकारों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। ईडी का इस्तेमाल राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ एक हथियार की तरह किया जा रहा है।''

कांग्रेस पर निशाना साधते हुए विजयन ने कहा कि पार्टी अपनी राजनीतिक सुविधा के हिसाब से ईडी की कार्रवाई का समर्थन करती है। उन्होंने कहा, 'जब कार्रवाई उनके खिलाफ नहीं होती तो कांग्रेस इसका समर्थन करती है और चाहती है कि इन एजेंसियों का इस्तेमाल उनके विरोधियों जैसे अरविंद केजरीवाल और एमके. स्टालिन के खिलाफ किया जाए।'

पटना समेत कई जिलों में बारिश, मौसम विभाग ने जारी किया अलर्ट

पटना। बंगाल की खाड़ी के पूर्व-मध्य और दक्षिण-पूर्व हिस्से में चक्रवाती प्रभाव के बाद बिहार के मौसम में बड़ा बदलाव देखने को मिला है। राजधानी पटना समेत कई जिलों में बारिश हुई है, जिससे तापमान में गिरावट दर्ज की गई है।

पटना में शुक्रवार सुबह तेज बारिश हुई। वहीं, घने बादलों की वजह से दिन में भी अंधेरा जैसा माहौल नजर आया। ठंडी हवाओं से लोगों को पिछले कुछ दिनों से पड़ रही भीषण गर्मी से राहत मिली है।

पटना स्थित भारत मौसम विज्ञान विभाग केंद्र के अनुसार, अगले 24 घंटों में बिहार के अधिकांश जिलों में आंशिक रूप से बादल छाए रहने, गरज-चमक, बिजली गिरने, तेज हवाएं चलने और बीच-बीच में बारिश होने की संभावना है।

मौसम विभाग ने सीमांचल क्षेत्र के कटिहार और पूर्णिया जिलों के लिए भारी बारिश और तेज हवाओं का विशेष अलर्ट जारी किया है। मौसम वैज्ञानिकों ने अगले दो से तीन दिनों तक राज्य के कई हिस्सों में हल्की से मध्यम बारिश की संभावना जताई है। विभाग के मुताबिक, इस दौरान कई इलाकों में अधिकतम तापमान में 2 से 4 डिग्री सेल्सियस तक गिरावट आ सकती है। गुरुवार को पटना समेत कम से कम 10 जिलों में तापमान में गिरावट दर्ज की गई।

नीट परीक्षा सुधार संबंधी अधिकांश सिफारिशें पहले ही लागू हो चुकीं

पूर्व इसरो प्रमुख ने सुप्रीम कोर्ट को दी जानकारी

नई दिल्ली। इसरो के पूर्व अध्यक्ष के. राधाकृष्णन ने ने सुप्रीम कोर्ट को बताया है कि नीट-यूजी 2024 विवाद के बाद गठित उच्चस्तरीय विशेषज्ञ समिति द्वारा की गई अधिकांश सिफारिशें को या तो लागू कर दिया गया है या उन पर तेजी से काम चल रहा है। साथ ही, कई सुधार पहले ही नीट परीक्षाओं के संचालन में लागू किए जा चुके हैं।

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) में सुधारों पर गठित उच्च स्तरीय विशेषज्ञ समिति (एचएलसीई) और उसकी सिफारिशों के कार्यान्वयन की निगरानी करने वाली उच्च स्तरीय संचालन समिति (एचपीएससी) के प्रमुख रहे राधाकृष्णन ने सर्वोच्च न्यायालय में दायर हलफनामे में कहा कि इन सुधारों का उद्देश्य राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा परीक्षाओं का पारदर्शी, सुचारू और निष्पक्ष संचालन सुनिश्चित करना था। यह हलफनामा सर्वोच्च न्यायालय के 25 मई के उस निर्देश के जवाब में दायर किया गया था, जिसमें उनसे समिति की सिफारिशों के कार्यान्वयन की स्थिति से संबंधित जानकारी देने को कहा गया था।

के. राधाकृष्णन ने कहा कि नीट-यूजी विवाद के बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा जून 2024 में गठित एचएलसीई ने राज्य सरकारों, पुलिस अधिकारियों, प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, छात्र समूहों और वैश्विक परीक्षा एजेंसियों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ व्यापक परामर्श किया।

हलफनामे में कहा गया है, 'एचएलसीई ने मेरी सरकार पोर्टल के माध्यम से भी हितधारकों से परामर्श किया और छात्रों, अभिभावकों, संरक्षकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों आदि से 37,144 प्रतिक्रियाएं प्राप्त कीं।'

हलफनामे के अनुसार, समिति ने 21 अक्टूबर 2024 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें परीक्षा सुधार, डाटा सुरक्षा, एनटीए का संस्थागत पुनर्गठन, परीक्षा की निष्पक्षता, मानसिक स्वास्थ्य सहायता और तकनीकी सुरक्षा उपायों को शामिल करते हुए 101 सिफारिशें की गईं। हलफनामे में कहा गया है कि सिफारिशों के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए 14 नवंबर 2024 को एक उच्चस्तरीय संचालन समिति का गठन किया गया था, जो एनटीए अधिकारियों द्वारा नियमित अंतराल पर समीक्षाओं और प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रगति की लगातार निगरानी कर रही है।

टेलीस्कोप और कैमरे से कैसे लें चांद की परफेक्ट तस्वीरें? नासा की मून फोटोग्राफी गाइड से लें टिप्स

नई दिल्ली। 31 मई को साल का दूसरा फुल मून यानी ब्लू मून दिखाई देगा। यह खूबसूरत चांदनी रात फोटोग्राफर्स के लिए सुनहरा मौका है। चांद को देखकर सिर्फ आनंद ही न लें, बल्कि उसे हमेशा के लिए अपने कैमरे में भी कैद कर लें। चाहे आप शुरुआती फोटोग्राफर हों या अनुभवी, अगर आप भी चांद की यादगार और परफेक्ट तस्वीरें खींचना चाहते हैं तो अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा की मून फोटोग्राफी गाइड आपके काम आ सकती है।

वास्तव में आसमान में शांति से दिखते चांद को कैमरे में कैद करना उतना आसान नहीं होता। थोड़ी सी जानकारी, सही सेटिंग्स और थोड़ी प्रैक्टिस से आप भी चांद की बेहतरीन तस्वीरें ले सकते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि इसके लिए महंगे उपकरण खरीदने की जरूरत नहीं है। शुरू में अपने पास मौजूद कैमरे या फोन से ही बेहतरीन तस्वीरें ले सकते हैं।

सबसे पहले तय करें कि आप किस तरह की तस्वीर लेना चाहते हैं। क्या चांद को पेड़ों के बीच सिल्हूट के रूप में दिखाना है, या क्षितिज के पास नारंगी चांद को कैद करना है? या फिर पूरे महीने चांद के बदलते रूप (फेसेज) दिखाना चाहते हैं? डिजिटल कैमरा (डीएसएलआर या मिररलेस) फोन की तुलना में बेहतर विकल्प देता है। अगर आपके पास डीएसएलआर है तो उसे इस्तेमाल करें। इसके लिए तस्वीरें आरएडब्ल्यू मोड में लें, ताकि बाद में आसानी से एडिट कर सकें।

चांद की फोटो लेने के लिए कैमरे को मैन्युअल मोड पर रखें। वहीं, तीन मुख्य सेटिंग्स पर ध्यान दें, अपर्चर (एफ-स्टॉप), शटर स्पीड (एक्सपोजर टाइम) और आईएसओ। अपर्चर रोशनी कितनी अंदर आएगी, यह तय करता है, शटर स्पीड रोशनी कितनी देर तक अंदर रहेगी यह तय करता है और आईएसओ कैमरे की रोशनी के प्रति संवेदनशीलता को तय करता है।

नासा की गाइड में सबसे आसान नियम 'लूनी 11' है। अपर्चर को एफ/11 पर सेट करें। फिर आईएसओ और शटर स्पीड को एक जैसा रखें। उदाहरण के लिए आईएसओ 100 ? शटर स्पीड 1/100 सेकंड, आईएसओ 200 ? शटर स्पीड 1/200 सेकंड। वहीं, कम आईएसओ के लिए 100 से शुरू करें, क्योंकि चांद बहुत चमकदार होता है। तस्वीर खींचकर देखें और सेटिंग्स में बदलाव करके बेहतर नतीजे पाएं।

चांद की फोटोग्राफी में 'लकी इमेजिंग' बहुत महत्वपूर्ण है। एक अच्छी तस्वीर पाने के लिए सैकड़ों तस्वीरें खींचना जरूरी है। कुछ तस्वीरों में चांद सही फोकस में कैमरा बिना हिले और वातावरण स्थिर होगा। बाद में कंप्यूटर पर एडिटिंग करके तस्वीरों को और बेहतर बनाया जा सकता है। अगर आपके पास टेलीस्कोप है तो चांद के क्रेटर, पहाड़ और गड्ढे साफ-साफ कैद कर सकते हैं। फोन या कैमरे को टेलीस्कोप के आईपीस पर लगाकर भी फोटो ली जा सकती है। इसमें थोड़ी प्रैक्टिस लगती है। अन्य उपयोगी टिप्स पर नजर डालें तो ट्राइपॉड का इस्तेमाल करें ताकि कैमरा हिले नहीं। चांद को फ्रेम करने के लिए वाइड लेंस या टेलीफोटो लेंस का इस्तेमाल करें। मौसम साफ हो तो ही बाहर निकलें।

सिर्फ स्वाद नहीं, सेहत का खजाना हैं दालें, जानिए कौन-सी दाल शरीर को क्या देती है फायदा

मुंबई। सदियों से लोग दाल को ताकत और सेहत से जोड़कर देखते आए हैं। विज्ञान भी मानता है कि दालें प्रोटीन का अच्छा स्रोत हैं। खास बात यह है कि अलग-अलग दालों में अलग प्रकार के पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर को अलग तरीके से फायदा पहुंचाते हैं। कुछ दालें हड्डियों के लिए अच्छी होती हैं, कुछ दिल को स्वस्थ रखती हैं और कुछ पाचन तंत्र को मजबूत बनाती हैं। यही वजह है कि डॉक्टर रोजाना दाल खाने की सलाह देते हैं।

उड़द की दाल को पोषण के मामले में काफी ताकतवर माना जाता है। इसमें प्रोटीन के साथ आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम और पोटैशियम जैसे तत्व अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं। उड़द दाल शरीर की मांसपेशियों को मजबूत बनाने में मदद करती है। इसमें मौजूद फाइबर पेट को लंबे समय तक भरा हुआ महसूस कराता है, जिससे बार-बार भूख नहीं लगती। वजन नियंत्रित करने वाले लोग भी इसे अपने भोजन में शामिल करते हैं। उड़द दाल में मौजूद कैल्शियम और मैग्नीशियम हड्डियों को मजबूत बनाने में सहायक माने जाते हैं। इसके अलावा, इसमें पाए जाने वाले बी-विटामिन शरीर को एनर्जी देने में मदद करते हैं।

कुल्थी की दाल, जिसे कई जगह हॉर्स ग्राम भी कहा जाता है, में भरपूर फाइबर और प्रोटीन पाया जाता है। यह दाल पाचन तंत्र को बेहतर बनाने में मदद करती है और शरीर में जमा अतिरिक्त फैट को कम करने में सहायक मानी जाती है। कई रिसर्च में पाया गया है कि कुल्थी की दाल ब्लड शुगर को नियंत्रित रखने में मदद करती है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट शरीर को अंदर से मजबूत बनाते हैं और कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं। लाल मसूर दाल भी सेहत के लिए बेहद फायदेमंद मानी जाती है। इसमें आयरन और फोलेट अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं, जो खून की कमी दूर करने में मदद करते हैं। जिन लोगों में हीमोग्लोबिन कम होता है, उनके लिए मसूर दाल अच्छा विकल्प हो सकती है। यह दाल जल्दी पच जाती है, इसलिए बच्चों और बुजुर्गों के लिए भी इसे अच्छा माना जाता है। इसमें मौजूद फाइबर दिल को स्वस्थ रखने में मदद करता है और खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होता है। इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है, जिससे यह ब्लड शुगर को तेजी से नहीं बढ़ाती।

चना दाल को ताकत और कैल्शियम का अच्छा स्रोत माना जाता है। इसमें प्रोटीन के साथ-साथ जिंक, मैग्नीशियम और आयरन भी पाए जाते हैं। यह मांसपेशियों को मजबूत बनाने और शरीर की कमजोरी दूर करने में मदद करती है। इसमें मौजूद फाइबर पाचन को बेहतर बनाता है और पेट की समस्याओं को कम करता है। यह दाल लंबे समय तक पेट भरा हुआ महसूस कराती है, जिससे भूख कम लगती है। इसके अलावा, यह शरीर में ऊर्जा बनाए रखने में भी मदद करती है।

मूंग दाल को सबसे हल्की और आसानी से पचने वाली दाल माना जाता है। इसमें प्रोटीन के साथ पोटैशियम, फोलेट और मैग्नीशियम भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। गर्मियों में यह शरीर को ठंडक पहुंचाने में मदद करती है।

वज्रासन से भ्रामरी प्राणायाम तक, मिर्गी को नियंत्रित करने में कारगर ये योगासन, नियमित अभ्यास से मिलेगी राहत

नई दिल्ली। विश्व योग दिवस (21 जून) में अब कुछ ही दिन शेष हैं। ऐसे में भारत सरकार का आयुष मंत्रालय लोगों को योग की ओर प्रेरित करने के लिए लगातार नई जानकारी साझा कर रहा है। मंत्रालय ने मिर्गी (एपिलेप्सी) से पीड़ित लोगों के लिए खास योगासनों की जानकारी दी है।

इन आसनों के नियमित अभ्यास से तंत्रिका तंत्र शांत होता है, तनाव कम होता है और दौरे पड़ने की संभावना घट सकती है। आयुष मंत्रालय के अनुसार, मिर्गी एक ऐसी समस्या है जिसमें मस्तिष्क की विद्युतीय तरंगें प्रभावित होती है। दवाओं के साथ-साथ योग अभ्यास इस समस्या के प्रबंधन में बहुत उपयोगी साबित हो सकता है। योग शरीर और मन दोनों को संतुलित रखता है, जिससे मरीजों की जीवन गुणवत्ता बेहतर होती है।

मंत्रालय ने सलाह दी है कि इन आसनों को अपनी रोजाना की दिनचर्या में शामिल करके मिर्गी को बेहतर तरीके से नियंत्रित किया जा सकता है। साथ ही लोगों से अपील की है कि वे योग को अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाएं। योग केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी बेहद जरूरी है। नियमित योग अभ्यास न सिर्फ मिर्गी के दौरे को कम कर सकता है बल्कि स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है। मंत्रालय द्वारा बताए गए मुख्य योगासन में उत्तानपादासन, भ्रामरी प्राणायाम, ताड़ासन, अर्ध मत्स्येन्द्रासन, वज्रासन शामिल है।

उत्तानपादासन:- इस आसन में लेटकर पैरों को ऊपर उठाया जाता है। यह आसन पेट की मांसपेशियों को मजबूत करता है और रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाता है। इससे तनाव कम होता है और नींद भी अच्छी आती है।

भ्रामरी प्राणायाम:- इस प्राणायाम में आंखें बंद करके 'म' की ध्वनि के साथ सांस छोड़ी जाती है। यह मस्तिष्क को शांत करता है, चिंता और तनाव दूर करता है। मिर्गी के मरीजों के लिए यह बहुत फायदेमंद माना जाता है।

ताड़ासन: - खड़े होकर शरीर को तानकर ये अभ्यास किया जाता है। यह आसन एकाग्रता बढ़ाता है, मुद्रा सुधारता है और पूरे शरीर में ऊर्जा का संचार करता है।

अर्ध मत्स्येन्द्रासन:- इस ट्विस्टिंग आसन से कमर और रीढ़ की हड्डी मजबूत होती है। यह पाचन तंत्र को भी ठीक रखता है और तंत्रिका तंत्र को संतुलित करता है।

वज्रासन:- भोजन के बाद भी किया जाने वाला यह आसन पाचन सुधारता है और मन को शांत रखता है।

भुजंगासन: सांप की मुद्रा वाला यह आसन छाती और फेफड़ों को खोलता है तथा ऊर्जा बढ़ाता है। योग एक्सपर्ट्स बताते हैं कि इन आसनों को सही तरीके से और धीरे-धीरे अभ्यास करना चाहिए। शुरुआत में किसी योग विशेषज्ञ की देखरेख में करना बेहतर होता है, खासकर मिर्गी के मरीजों को।

31 मई को फुल-मून : अपने मोबाइल से लीजिए चांद की बेहतरीन फोटो, नासा ने शेयर किए फोटोग्राफी टिप्स

नई दिल्ली। 31 मई को आसमान में एक बार फिर खूबसूरत नजारा यानी कि 'फुल मून' देखने को मिलेगा। इस रात चांद की खूबसूरत तस्वीर हर कोई अपने मोबाइल में कैद करना चाहेगा, लेकिन स्मार्टफोन से चांद की अच्छी तस्वीरें लेने में कई चुनौतियां भी हैं।

आमतौर पर स्मार्टफोन से ली गई चांद की तस्वीर एक धुंधले सफेद धब्बे या रोशनी के गोले जैसी दिखती है। अगर ऐसा आपके साथ भी होता है, तो निराश बिल्कुल भी न हों। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने मोबाइल फोटोग्राफी के कुछ ऐसी टिप्स बताई हैं, जिन्हें अपनाकर हर कोई चांद की खूबसूरत तस्वीर ले सकता है।

नासा के अनुसार, चांद की तस्वीर लेने के लिए आपका फोन बिल्कुल स्थिर रहना चाहिए। यदि आपके पास ट्राइपॉड नहीं है, तो फोन को किसी दीवार या अन्य स्थिर वस्तु के सहारे रख दें। इसके बाद तस्वीर की कंपोजिशन पर ध्यान दें। चांद को फ्रेम करने, उसे कोई संदर्भ देने या तस्वीर को अधिक आकर्षक बनाने के लिए आसपास मौजूद वस्तुओं का उपयोग किया जा सकता है।

चांद की फोटो खींचते समय अपने फोन का फ्लैश हमेशा बंद रखें और कैमरे का फोकस आसमान के बजाय सीधे चांद पर करें। इसके लिए स्क्रीन पर जहां चांद दिखाई दे रहा हो, वहां टैप करें। इसके बाद ब्राइटनेस को थोड़ा कम कर दें। चांद को एकदम सफेद और अत्यधिक चमकीला दिखाने के बजाय उसकी प्राकृतिक बनावट बनाए रखने की कोशिश करें, ताकि उसकी सतह के निशान और डिटेल्स साफ नजर आ सकें। इससे तस्वीर अधिक प्रभावशाली और आकर्षक लगती है।

अगर आपके फोन में फोटो टाइमर की सुविधा है, तो उसका इस्तेमाल करें। इससे तस्वीर खींचते समय फोन को छूने या उसके हिलने-डुलने की संभावना कम हो जाती है।

बेहतरीन तस्वीर लेने के लिए सही समय का चुनाव भी बेहद जरूरी है। चांद की फोटोग्राफी के लिए बिल्कुल घने अंधेरे के बजाए आप अपनी फोटो शाम के धुंधलके या भोर के समय लें। इस समय आसमान और चांद की रोशनी में बहुत ज्यादा अंतर नहीं होता, जिससे आपके फोन का कैमरा फोटो को बेहतर तरीके से कैप्चर कर पाएगा। इसके अलावा, जब चांद क्षितिज से ऊपर उठ रहा होता है, तब वह अपेक्षाकृत बड़ा दिखाई देता है, इसलिए उस समय भी अच्छी तस्वीरें ली जा सकती हैं।

अगर आपके फोन में ऑप्टिकल जूम है, तभी उसका इस्तेमाल करें। डिजिटल जूम वास्तव में तस्वीर को केवल क्रॉप करता है, जिससे उसकी गुणवत्ता प्रभावित होती है। ऐसे में आप चाहें तो प्रयोग के तौर पर चांद को फोकस करके जूम कर सकते हैं। एक-दो फोटो क्लिक से यह अंदाजा लग सकता है कि जूम करना आपके लिए बेहतर रहेगा या नहीं।

यदि आपके फोन में प्रो मोड या मैनुअल मोड उपलब्ध है, तो आईएसओ सेटिंग को कम रखें, ताकि तस्वीर में नॉइस न आए। अगर संभव हो, तो शटर स्पीड के साथ भी प्रयोग करें, ताकि चांद की रोशनी सही तरीके से तस्वीर में कैद हो सके। शुरुआत में शटर स्पीड तेज रखें और फिर आवश्यकता के अनुसार उसे समायोजित करें। ध्यान रहे कि जितनी धीमी शटर स्पीड होगी, उतना ही मोबाइल का स्थिर रहना महत्वपूर्ण होता जाएगा।

अगर आपके पास टेलीस्कोप (दूरबीन) उपलब्ध है, तो आप अपने फोन को उसके आई-पीस (आंख से देखने वाली जगह) पर सावधानीपूर्वक टिका सकते हैं। सही तरीके से सेट करने पर आप चांद की बेहद साफ और स्पष्ट तस्वीर खींच सकते हैं।

भारत के आर्थिक विकास का अगला चरण हिमालयी क्षेत्र से उभरेगा: डॉ. जितेंद्र सिंह

नई दिल्ली। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने गुरुवार को कहा कि भारत के आर्थिक विस्तार का अगला चरण उन क्षेत्रों और संसाधनों से उभरेगा, जो दशकों से अनछुए रहे हैं, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र में होगा।

उन्होंने पालमपुर स्थित हिमालयन जैव संसाधन प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी) में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जैसे-जैसे देश विकसित भारत 2047 की परिकल्पना की ओर बढ़ रहा है, हिमालयी अर्थव्यवस्था भारत के भविष्य के आर्थिक विकास में एक प्रमुख योगदानकर्ता बनने के लिए तैयार है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अरोमा मिशन और फ्लोरीकल्चर मिशन जैसी पहलों के माध्यम से हिमालयी क्षेत्रों में केंद्रित वैज्ञानिक हस्तक्षेपों को अभूतपूर्व गति मिली है, जो हिमालयी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में किसानों, महिलाओं, युवाओं, स्टार्टअप्स और उद्यमियों के लिए आजीविका के अवसर पैदा कर रहे हैं।

मंत्री ने याद दिलाया कि इसी संस्थान का ट्यूलिप फूल अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा की प्रार्थना के दौरान पीएम मोदी द्वारा अर्पित की गई भेंट का हिस्सा था।

उन्होंने संस्थान की विभिन्न सुविधाओं का दौरा किया और सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा संचालित विभिन्न हिमालयी प्रौद्योगिकी मिशनों से जुड़े वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, किसानों, स्टार्टअप्स और उद्यमियों के साथ बातचीत की।

उन्होंने कहा कि यह संस्थान हिमालयी जैव संसाधनों को चिकित्सा, स्वास्थ्य, पोषण संबंधी उत्पाद, सौंदर्य प्रसाधन, पुष्पकृषि और कृषि-जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों के लिए व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य उत्पादों और प्रौद्योगिकियों में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीएसआईआर-आईएचबीटी को हिमालयी जैव विविधता, पारंपरिक ज्ञान और वाणिज्यिक नवाचार के कई आयामों को एकीकृत करने वाली एक अनूठी वैज्ञानिक संस्था बताते हुए कहा कि यह संस्थान हिमालयी जैव संसाधनों के सतत उपयोग के लिए देश के अग्रणी केंद्रों में से एक के रूप में उभरा है। उन्होंने कहा कि संस्थान का कार्य कृषि प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, पर्यावरण विज्ञान, पोषण प्रौद्योगिकी, फाइटोफार्मास्यूटिकल्स और किण्वन प्रौद्योगिकी सहित विविध क्षेत्रों में फैला हुआ है।

एसी ऑन करने से पहले आजमाएं ये छोटी की ट्रिक, कमरा तेजी से होगा ठंडा, बिजली की भी होगी बचत

नई दिल्ली। गर्मियों में बाहर तेज धूप से परेशान लोग जैसे ही घर पहुंचते हैं, सबसे पहले एयर कंडीशनर चालू करते हैं। लेकिन अक्सर ऐसा होता है कि एसी ऑन करने के बाद भी कमरा तुरंत ठंडा नहीं होता। कई बार लोग समझते हैं कि शायद एसी खराब हो गया है या उसकी कूलिंग कम हो चुकी है, जबकि इसके पीछे कई वैज्ञानिक कारण होते हैं। दरअसल, कमरे के अंदर जमा गर्म हवा, दीवारों की गर्मी, बंद वातावरण और खराब एयर फ्लो जैसी चीजें एसी की कूलिंग को धीमा कर देती हैं। अगर एसी का सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए और कमरे की कुछ बेसिक बातों का ध्यान रखा जाए, तो कूलिंग बेहतर हो सकती है।

वैज्ञानिकों के मुताबिक, कमरे का तापमान दीवारों, फर्श, फर्नीचर और छत में जमा गर्मी से तय होता है। जब पूरा दिन धूप पड़ती है, तो कमरे की चीजें गर्मी को अपने अंदर जमा कर लेती हैं। ऐसे में जैसे ही एसी चालू किया जाता है, उसे सिर्फ हवा ही नहीं बल्कि इन सभी गर्म सतहों को भी ठंडा करना पड़ता है। यही वजह है कि शुरुआत में एसी को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है और ठंडक आने में समय लगता है।

विशेषज्ञ बताते हैं कि एसी चालू करने से पहले अगर कुछ मिनटों के लिए सीलिंग फैन चला दिया जाए और कमरे की खिड़कियां या दरवाजे थोड़ी देर खोल दिए जाएं, तो इसका सीधा फायदा मिलता है। वैज्ञानिक भाषा में इसे एयर सर्कुलेशन कहा जाता है। जब पंखा चलता है तो कमरे में फंसी गर्म हवा तेजी से इधर-उधर घूमती है और बाहर निकलने लगती है। इससे कमरे के अंदर का तापमान थोड़ा कम हो जाता है। ताजी हवा आने से गर्म और ठंडी हवा का संतुलन बनता है, जिसके बाद एसी को कम मेहनत करनी पड़ती है और वह तेजी से कूलिंग देने लगता है।

रियलमी पी सीरीज ने मिड-रेंज स्मार्टफोन सेगमेंट में बैटरी परफॉर्मेंस को दी नई पहचान

नई दिल्ली। भारत के तेजी से बदलते स्मार्टफोन बाजार में अब ग्राहक केवल ज्यादा फीचर्स देखकर प्रभावित नहीं होते। आज सबसे ज्यादा मायने रखती है वास्तविक और भरोसेमंद परफॉर्मेंस, खासकर बैटरी लाइफ, जो युवा और ऑनलाइन-केंद्रित यूजर्स के लिए सबसे अहम फैक्टर बन चुकी है।

गेमिंग, वीडियो स्ट्रीमिंग, ऑफिस का काम और कंटेंट क्रिएशन जैसी जरूरतों के बीच अब यूजर्स चाहते हैं कि उनका स्मार्टफोन पूरे दिन बिना रुकावट साथ निभाए। बैटरी बैकअप अब सीधे तौर पर सुविधा, भरोसे और बेहतर स्मार्टफोन अनुभव से जुड़ गया है।

हालांकि, कई वर्षों तक मिड-रेंज स्मार्टफोन सेगमेंट में ग्राहकों को समझौता करना पड़ता था। उन्हें परफॉर्मेंस, डिजाइन या बैटरी में से किसी एक को प्राथमिकता देनी पड़ती थी।

रियलमी पी सीरीज को इसी कमी को दूर करने के लिए बनाई गई थी। शुरुआत से ही इस सीरीज को इस तरह डिजाइन किया गया कि इसमें परफॉर्मेंस, स्टाइल और शानदार बैटरी बैकअप का संतुलन मिले, जो इस सेगमेंट में पहले लगातार देखने को नहीं मिलता था।

रियलमी की पुरानी पहचान को आगे बढ़ाते हुए पी सीरीज ने सिर्फ मुकाबला करने के बजाय ऑनलाइन स्मार्टफोन सेगमेंट में ग्राहकों की उम्मीदों को नए स्तर पर पहुंचाने का काम किया।

हर नई जनरेशन के साथ पी सीरीज रियलमी की सबसे मजबूत ऑनलाइन-केंद्रित स्मार्टफोन लाइनअप में शामिल होती गई। रियलमी पी1 सीरीज ने स्टाइलिश डिजाइन और भरोसेमंद परफॉर्मेंस के साथ मजबूत शुरुआत की। इसने साबित किया कि इस सेगमेंट में भी बेहतर यूजर एक्सपीरियंस बिना समझौते के दिया जा सकता है। इसके बाद रियलमी पी2 सीरीज में डिस्प्ले क्वालिटी, उपयोगिता और ओवरऑल बैलेंस में सुधार किया गया। वहीं, रियलमी पी3 सीरीज ने युवा ग्राहकों के बीच अपनी मजबूत पहचान बनाई और ज्यादा प्रीमियम व बेहतर स्मार्टफोन अनुभव देने पर फोकस किया।

सिंगापुर ओपनः सेमीफाइनल में पहुंची सात्विक-चिराग और ध्रुव-तनीषा की जोड़ी

सिंगापुर। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी/चिराग शेट्टी और ध्रुव कपिला/तनीषा क्रास्टो की जोड़ी ने शुक्रवार को सिंगापुर ओपन 2026 के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। सिंगापुर इंडोर स्टेडियम में चौथी वरीयता प्राप्त सात्विक-चिराग ने एक गेम से पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए मलेशिया के कांग खाई जिंग और आरोन ताई को 19-21, 21-17, 21-13 से हराया। यह मुकाबला 65 मिनट तक चला।

अब सेमीफाइनल में सात्विक-चिराग की जोड़ी का मुकाबला मौजूदा वर्ल्ड चैंपियन और वर्ल्ड नंबर-1 जोड़ी किम वोन हो और सियो सेउंग जे (कोरिया) से होगा।

मिक्स्ड डबल्स में, ध्रुव-तनीषा की जोड़ी ने अगले दौर में जगह बना ली है, क्योंकि तीसरी वरीयता प्राप्त मलेशियाई जोड़ी चेन तांग जी और तोह ई वेई ने शुरुआती गेम के दौरान मैच से हटने का फैसला किया। फाइनल में जगह बनाने के लिए अब इस भारतीय जोड़ी का मुकाबला जापान के युइची शिमोगामी और सायाका होबारा से होगा।

मेंस सिंगल्स में, ऑल इंग्लैंड 2026 के उपविजेता लक्ष्य सेन को जापान के कोकी वतनबे के खिलाफ 19-21, 21-15, 15-21 से हार का सामना करना पड़ा। यह मुकाबला 68 मिनट तक चला।

इस बीच, पीवी सिंधु का सफर क्वार्टरफाइनल में ही समाप्त हो गया, जिन्हें वर्ल्ड नंबर 1 एन से यंग के खिलाफ 17-21, 14-21 से शिकस्त मिली। 48 मिनट चले कड़े मुकाबले में जीत के साथ कोरियन खिलाड़ी ने भारतीय स्टार के खिलाफ अपना 'हेड-टू-हेड रिकॉर्ड' 9-0 तक पहुंचा दिया है। गुरुवार को, पीवी सिंधु, लक्ष्य सेन, मेंस डबल्स जोड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी, और मिक्स्ड डबल्स जोड़ी ध्रुव कपिला और तनीषा क्रास्टो ने क्वार्टरफाइनल में जगह बनाई थी। सिंधु ने जापान की रिको गुंजी को सीधे गेम में हराया, जबकि सात्विक-चिराग ने ली झे-हुई और यांग पो-ह्सुआन को 21-15, 11-21, 21-18 से हराया। ध्रुव और तनीषा ने जापान की चुनौती का सामना करते हुए यूटा वतानाबे और माया तागुची को 8-21, 21-17, 21-16 से शिकस्त दी थी।

एशियन अंडर-20 एथलेटिक्सः 5000 मीटर रेस वॉक में नितिन ने जीता गोल्ड, साधना की झोली में आया सिल्वर

हांगकांग। भारत ने अंडर-20 एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप के दूसरे दिन दो मेडल जीते। नितिन गुप्ता ने पुरुषों की 5000 मीटर रेस वॉक में गोल्ड मेडल अपने नाम किया। वहीं, साधना रवि ने महिलाओं के ट्रिपल जंप इवेंट में सिल्वर मेडल जीता।

नितिन ने 19:47.49 का समय लेकर पोडियम पर टॉप स्थान हासिल किया, जबकि ताइपे के शेंग-किन लो (19:56.17) और जापान के चिहिरो ओबाटा (20:06.73) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। यह इस प्रतियोगिता के इस संस्करण में भारत का पहला गोल्ड है। नितिन को बधाई देते हुए एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर लिखा, 'नितिन गुप्ता ने पुरुषों की 5000 मीटर रेस वॉक में शानदार गोल्ड के साथ अपना नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज करा लिया है।

यह नितिन के लिए एक शानदार वापसी थी, क्योंकि 18 साल के नितिन ने शनिवार को बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम में नेशनल सीनियर एथलेटिक्स फेडरेशन प्रतियोगिता में पुरुषों की 10 किलोमीटर रेस वॉक में जबरदस्त प्रदर्शन किया था, जिसमें उन्होंने भारत के 40 साल के नेशनल रिकॉर्ड होल्डर और दो बार के ओलंपियन संदीप कुमार को एक रोमांचक मुकाबले में हराया था। संदीप की टीम ने नितिन के खिलाफ आधिकारिक शिकायत दर्ज की। उन्होंने कहा कि नितिन ने नियम तोड़े हैं। इसके बाद जूरी ने इस शिकायत को जांच के लिए स्वीकार कर लिया। जांच के बाद पाया गया कि नितिन ने नियम 6.2 का उल्लंघन किया है, जिसमें कहा गया है कि खिलाड़ी किसी दूसरे खिलाड़ी से मदद नहीं ले सकता और न ही दे सकता है। इस वजह से नितिन को अयोग्य घोषित करते हुए प्रतियोगिता से बाहर कर दिया गया। महिलाओं के ट्रिपल जंप इवेंट में, साधना ने 12.84 +0.5 के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ सिल्वर मेडल जीता। चीनी जम्पर यिकिंग जी (13.36 +1.3) ने गोल्ड मेडल अपने नाम किया, जबकि कजाकिस्तान की मारिया च्शिपाचेवा ने 12.70 की पर्सनल बेस्ट जंप के साथ ब्रॉन्ज मेडल जीता। 2024 में दुबई में हुए एशियन अंडर-20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप के पिछले संस्करण में भारत सात गोल्ड सहित 29 मेडल के साथ अंक तालिका में तीसरे स्थान पर रहा था।

वर्ल्ड कप में स्वर्ण जीतने वाली पिस्टल शूटर ईशा की पीवी सिंधु और शिखर धवन ने तारीफ की

नई दिल्ली। स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु ने कहा है कि पिस्टल शूटर ईशा सिंह 'कमाल की खिलाड़ी' हैं। 21 साल की ईशा ने म्यूनिख में आईएसएसएफ वर्ल्ड कप में वर्ल्ड रिकॉर्ड स्कोर के साथ स्वर्ण पदक जीता है।

ईशा की प्रशंसा करते हुए पीवी सिंधु ने एक्स पर लिखा, 'मैं ईशा को कई सालों से जानती हूं। उसके बारे में बहुत अच्छी बातें सुनी हैं। वह हैदराबाद में ट्रेनिंग करती है। उसे ओजीक्यू का साथ मिला है, जो लंबे समय से मेरे भी पार्टनर रहे हैं। एक समय तो हम दोनों का प्रतिनिधित्व एक ही एजेंसी करती थी।

उन्होंने लिखा, 'मैंने हमेशा उसके बारे में एक ही बात सुनी है। शांत, चुपचाप रहने वाली, ज्यादा न बोलने वाली, लेकिन जब जरूरत होती है, तो वह कमाल कर देती है। उसे वर्ल्ड स्टेज पर वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ते और स्वर्ण पदक जीतते देखना बहुत शानदार है। ईशा, तुम्हारे लिए आसमान ही सीमा है, मेरी दोस्त।'

भारत के पूर्व ओपनर शिखर धवन ने भी ईशा की तारीफ की।

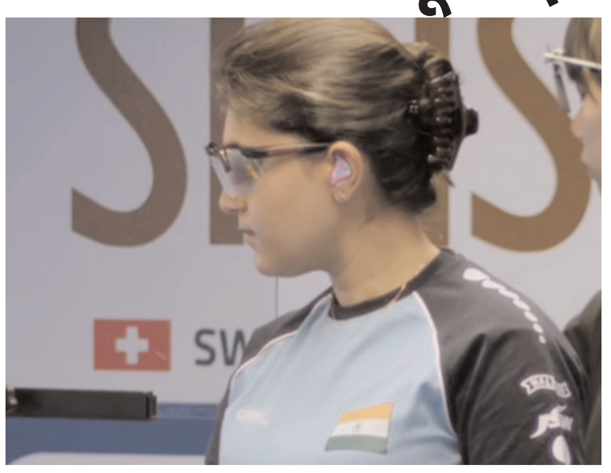

धवन ने एक्स पर लिखा, 'एक और युवा भारतीय खिलाड़ी वैश्विक स्टेज पर चमक रही है। म्यूनिख में आईएसएसएफ विश्व कप में ईशा सिंह ने कितनी शानदार उपलब्धि हासिल की है। भारतीय शूटिंग का भविष्य बहुत उज्ज्वल दिख रहा है।'

ओलंपियन, तीन बार की वर्ल्ड चैंपियनशिप पदक विजेता और दो बार की एशियन गेम्स पदक विजेता ईशा ने महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल फाइनल में शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने 43 के विश्व रिकॉर्ड (और जूनियर विश्व रिकॉर्ड) स्कोर के साथ स्वर्ण पदक जीता। यह इस साल का दूसरा आईएसएसएफ वर्ल्ड कप राइफल/पिस्टल इवेंट था, जो म्यूनिख के मशहूर ओलंपिक शूटिंग रेंज में हुआ।

एक जबरदस्त फाइनल मुकाबले में, ईशा ने पांच-पांच शॉट की 10 सीरीज में से आधी सीरीज में पूरे पांच शॉट लगाए। उन्होंने घरेलू पसंदीदा और पूर्व वर्ल्ड चैंपियन डोरीन वेनेकैंप को पूरे पांच शॉट पीछे छोड़ दिया। ईशा ने शानदार शुरुआत की, पहली तीन सीरीज में तीन बार एकदम सही पांच का स्कोर किया, और शुरू में ही आठ खिलाड़ियों के मुकाबले में अपनी बढ़त बना ली। 12 अंकों के साथ डोरेन उनकी सबसे करीबी प्रतिद्वंद्वी थीं, जबकि वियतनाम की ट्रिन्ह थू विन्ह 10 हिट्स के साथ तीसरे स्थान पर थीं।

भारतीय शूटर चौथी सीरीज का पहला शॉट चूक गईं—जो कि एलिमिनेशन का पहला चरण भी था—लेकिन फिर भी वह डोरेन से चार अंक आगे थीं। इस बीच, ओलंपिक चैंपियन यांग एकदम सही पांच के स्कोर के साथ तीसरे स्थान पर आ गईं।

छठी और आठवीं सीरीज में फिर से पांच का स्कोर आया, और जब पदक पक्का हो गया तो विश्व रिकॉर्ड भी नजरों के सामने आ गया। ईशा ने चार और तीन के स्कोर के साथ अपना प्रदर्शन समाप्त किया। दो साल पहले बाकू में कोरिया की किम येजी द्वारा बनाए गए 42 अंकों के रिकॉर्ड को एक हिट से बेहतर बना दिया। उन्होंने यांग जिन द्वारा बनाए गए 41 अंकों के जूनियर विश्व रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ दिया।

वनडे विश्व कप में कोच मजूमदार के किस संदेश ने टीम में भरा था जोश, कप्तान हरमनप्रीत कौर ने किया खुलासा

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में भारत में खेला गया वनडे विश्व कप 2025 का खिताब जीता। लीग चरण में भारतीय टीम को लगातार तीन मैचों में हार का सामना करना पड़ा था। इससे टीम का विजयी अभियान कुछ समय के लिए पटरी से उतरता भी दिखा था, लेकिन कोच अमोल मजूमदार के संदेश ने टीम में नई जान फूंकी थी।

कप्तान हरमनप्रीत कौर ने कोच मजमूदार के दिए संदेश का खुलासा किया है। हरमनप्रीत ने याद किया कि इंग्लैंड से भारत की हार के बाद ड्रेसिंग रूम का माहौल कैसे बदल गया था। इस हार के बाद भारतीय टीम टूर्नामेंट से बाहर होने की कगार पर थी।

हरमनप्रीत ने जियोस्टार पर कहा, 'इंग्लैंड मैच के बाद, मुझे लगता है कि अमोल सर ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने बात की, और वह बहुत सीधे-सीधे बात करने वाले थे। सभी ने उनकी बात को सही भावना से लिया क्योंकि हम सभी जानते थे कि वह जो कह रहे थे उसमें कुछ भी गलत नहीं था। यह पहली बार था जब मैंने उनकी आवाज थोड़ी ऊंची सुनी। आमतौर पर, वह बहुत ही धीमे बोलने वाले व्यक्ति हैं। मुझे याद है उन्होंने कहा था, 'जाओ और एक आईना खरीदो और देखो कि तुम क्या कर रही हो और तुम्हें क्या करने की जरूरत है।

इंग्लैंड से हार के बाद भारतीय टीम न्यूजीलैंड को हराकर लय में लौटी, सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया पर रिकॉर्ड जीत दर्ज कर सबको चौंकाया, और फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को हराकर अपना पहला वनडे विश्व कप जीता।

बड़े टूर्नामेंटों के हरमनप्रीत ने सोशल मीडिया से दूर रहने पर भी बात की। उन्होंने कहा, 'मैं सोशल मीडिया का ज्यादा इस्तेमाल नहीं करती क्योंकि मुझे लगता है कि यह आपको मानसिक रूप से थका सकता है। इसलिए, मैं कोई भी चीज नहीं पढ़ती, खासकर टूर्नामेंट के दौरान—चाहे मैं अच्छा प्रदर्शन कर रही हूं या नहीं। मुझे इस बारे में ज्यादा सोचने की आदत नहीं है। शायद टूर्नामेंट के बाद, मैं कुछ चीजों पर गौर करूंगी, जो मुझे लगता है कि जरूरी हैं।

आइस हॉकी वर्ल्ड चैंपियशिप 2027 में तीन टीमों के साथ उतरेगा भारत

नई दिल्ली। 'आईआईएचएफ आइस हॉकी वर्ल्ड चैंपियनशिप 2027' में भारत की पुरुष, महिला और पुरुष अंडर-20 टीमें अपना दमखम दिखाने को तैयार हैं। इन सभी को 'डिविजन-4' में रखा गया है। आइस हॉकी वर्ल्ड चैंपियनशिप का आयोजन 14 से 30 मई के बीच जर्मनी के डसेलडोर्फ और मैनहेम में होगा।

पुरुष, महिला और अंडर-20 टीमें 2027 चैंपियनशिप की तैयारी योजना के हिस्से के रूप में राष्ट्रीय शिविरों, खिलाड़ियों के मूल्यांकन, कोचिंग कार्यक्रमों और प्रतिस्पर्धी अनुभव से गुजरेंगी।

भारत साल 1989 से इंटरनेशनल आइस हॉकी फेडरेशन का पूर्ण सदस्य रहा है। भले ही भारतीय टीमों ने अतीत में अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय टूर्नामेंट्स में हिस्सा लिया, लेकिन वर्ल्ड चैंपियनशिप पैमाने, संरचना और दीर्घकालिक प्रभाव के मामले में यह एक बड़ा मंच है।

देहरादून स्थित हिमाद्री आइस रिंक (भारत का एकमात्र ओलंपिक-आकार का इनडोर आइस रिंक) में आयोजित 2025 नेशनल आइस हॉकी चैंपियनशिप ने पुरुष, महिला और युवा श्रेणियों की टीमों को एक साथ लाने का काम किया है।

महिला कार्यक्रम भी इस विकास गाथा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरा है। यूएई के अल ऐन में आयोजित 'आईआईएचएफ विमेंस एशिया कप 2025' में भारत का ब्रॉन्ज मेडल इस खेल के हाल के सबसे मजबूत अंतरराष्ट्रीय नतीजों में से एक था, जिसने भारतीय महिला खिलाड़ियों के आत्मविश्वास को दर्शाया है। वर्ल्ड चैंपियनशिप 2027 के रास्ते में अंडर-20 टीम को शामिल करना एक और अहम पहलू जोड़ता है, जिससे युवा खिलाड़ियों को राष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल होने का एक तय रास्ता मिलता है।

आईआईएचएफ वर्ल्ड चैंपियनशिप 2027 सिर्फ एक और अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट नहीं है। आईआईएचएफ प्रतियोगिता प्रणाली के तहत, वे इस खेल की मुख्य वैश्विक चैंपियनशिप संरचना बनाते हैं, जहां देश वर्ल्ड आइस हॉकी में अपनी स्थिति बनाने के लिए अलग-अलग डिवीजन में मुकाबला करते हैं। भारत का एक ही समय में तीन राष्ट्रीय टीमों के साथ इस संरचना में प्रवेश करना, 2027 संस्करण को भारतीय आइस हॉकी के लिए एक ऐतिहासिक पल है।

टी20 मुंबई लीगः सरफराज खान ने अच्छी कप्तानी करने और खिताब जीतने का किया वादा

मुंबई। टी20 मुंबई लीग 1 जून से 13 जून तक मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेली जाएगी। लीग पुरुष और महिला दोनों वर्ग में आयोजित हो रही है। पुरुष वर्ग में 8 टीमें हैं, जबकि महिला वर्ग में 3 टीमें हैं। सभी मैच वानखेड़े स्टेडियम में खेले जाएंगे।

टी20 मुंबई लीग की फ्रेंचाइजी आकाश टाइगर्स (मुंबई पश्चिमी उपनगर, एमडब्ल्यूएस) की पुरुष और महिला टीमों के कप्तान एक इवेंट में शामिल हुए।

आकाश टाइगर्स (एमडब्ल्यूएस) के कप्तान सरफराज खान ने कहा, 'मुझे अच्छा लग रहा है। मैं अच्छी कप्तानी करने की कोशिश करूंगा, टीम में अच्छा माहौल बनाए रखूंगा और खिताब जीतने का प्रयास करूंगा। हमारे पास जो कुछ भी है, हम उसी के साथ अच्छा प्रदर्शन करने की कोशिश करेंगे। सरफराज खान खान आईपीएल 2026 में चेन्नई सुपर किंग्स का हिस्सा थे। लीग के शुरुआती चरण में उन्हें टीम की तरफ से खेलने का मौका मिला था और उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन किया था। सरफराज ने 8 मैचों की 7 पारियों में 169.47 की स्ट्राइक रेट से 161 रन बनाए थे।

सरफराज वानखेड़े स्टेडियम में खेलते हुए बड़े हुए हैं। टी20 मुंबई लीग भी इसी स्टेडियम में खेली जानी है। ऐसे में आकाश टाइगर्स को दमदार प्रदर्शन की उम्मीद है। देखना होगा कि लीग के दौरान सरफराज का प्रदर्शन कैसा रहता है।

जेमिमा रोड्रिगेज का खुलासा, वर्ल्ड कप मैच की प्लेइंग इलेवन से बाहर होने के बाद अंदर से टूट गई थीं

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्टार बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिगेज ने 'विमेंस वर्ल्ड कप 2025' के दौरान अपने मन में चल रही भावनात्मक उथल-पुथल का खुलासा किया है। जेमिमा ने बताया कि घरेलू टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव और एक अहम मैच के लिए प्लेइंग इलेवन से बाहर किए जाने से वह अंदर से पूरी तरह टूट गई थीं।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम टी20 वर्ल्ड कप 2026 से पहले इंग्लैंड के खिलाफ 3 मुकाबलों की टी20 सीरीज खेल रही है, जिसके पहले ही मुकाबले में 69 रन की पारी खेलने वालीं जेमिमा को 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया।

'जियोस्टार' के शो 'अनस्टॉपेबल' पर जेमिमा ने उस मुश्किल दौर को याद किया जो टूर्नामेंट शुरू होने से पहले ही उन्होंने झेला था, जब उम्मीदें और दबाव उन पर मानसिक रूप से हावी होने लगे थे।

जेमिमा ने कहा, 'किसी वजह से, वर्ल्ड कप शुरू होने से पहले ही, मैं मानसिक रूप से ठीक महसूस नहीं कर रही थी। शायद इसकी वजह यह थी कि यह एक घरेलू वर्ल्ड कप था और इसके साथ उम्मीदें भी थीं। यह एक विश्व कप था, इसलिए दबाव दोगुना हो जाता है। उन्होंने कहा, 'मैं पहले ही मैच की पहली गेंद पर बिना कोई रन बनाए आउट हो गई। इसने मुझे सचमुच तोड़ दिया। सबसे खराब बात यह थी कि इसका असर मेरी फील्डिंग पर भी पड़ने लगा था। मैं ऐसी खिलाड़ी हूं, जिसे फील्डिंग करना पसंद है, लेकिन मैं खुद पर इतना ज्यादा दबाव डाल रही थी कि मैं वैसे मूव नहीं कर पा रही थी जैसा आमतौर पर करती हूं। मैंने कुछ खराब फील्डिंग की, जो मैं आमतौर पर नहीं करती।

जेमिमा ने बताया कि लीग चरण में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक तेज पारी ने उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ होने वाले बेहद अहम मुकाबले से पहले कुछ आत्मविश्वास वापस पाने में मदद की थी। उन्होंने कहा, 'फिर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ लीग मैच आया, जिसमें मैंने अच्छे स्ट्राइक रेट से 33 रन की एक असरदार पारी खेली। इससे मुझे कुछ आत्मविश्वास मिला। मैंने खुद से कहा, 'ठीक है। इंग्लैंड के खिलाफ मैच बहुत अहम है। इंग्लैंड को हराने के लिए जो कुछ भी करना पड़े, चलो करते हैं।

दक्षिण अफ्रीका महिला क्रिकेट टीम 5 टी20 मैचों की सीरीज के लिए जिम्बाब्वे का दौरा करेगी

बुलावायो। दक्षिण अफ्रीका महिला क्रिकेट टीम सितंबर में 5 टी20 मैचों की सीरीज के लिए जिम्बाब्वे का दौरा करेगी। जिम्बाब्वे क्रिकेट ने शुक्रवार को इस दौरे की पुष्टि की। इन दोनों देशों के बीच खेली जाने वाली पहली द्विपक्षीय महिला सीरीज होगी।

जिम्बाब्वे क्रिकेट के मैनेजिंग डायरेक्टर गिवमोर माकोनी ने कहा, 'हमें दक्षिण अफ्रीका की महिला टीम का जिम्बाब्वे में स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। यह एक ऐतिहासिक और रोमांचक सीरीज होगी। दक्षिण अफ्रीका दुनिया की शीर्ष क्रिकेट टीमों में से एक है। यह दौरा हमारी खिलाड़ियों को अपने घर पर ही शीर्ष स्तर की टीमों के खिलाफ अपनी काबिलियत परखने का एक कीमती मौका देता है। हमारा मानना है कि ये मैच हमारी राष्ट्रीय टीम के विकास में बहुत मदद करेंगे, और साथ ही महिलाओं की अगली पीढ़ी को इस खेल को अपनाने के लिए प्रेरित भी करेंगे।

इस साल की शुरुआत में पाकिस्तान के अपने पहले 'व्हाइट-बॉल' दौरे के बाद यह दौरा जिम्बाब्वे की महिला क्रिकेट के लिए एक अहम पल है। जिम्बाब्वे ने आखिरी बार सितंबर 2025 में अपने घर पर संयुक्त अरब अमीरात के खिलाफ खेला था। उसके बाद टीम ने विदेशी दौरे किए हैं जिसमें पाकिस्तान और न्यूजीलैंड दौरा शामिल है।

सीनियर स्तर पर ये दोनों टीमें इससे पहले सिर्फ दो बार आमने-सामने आई हैं। दोनों ही बार 2017 में पोटचेफस्ट्रूम में हुई एक चार-टीमों वाली सीरीज के दौरान वनडे मैचों में दोनों टीमें आमने-सामने हुई हैं। आईसीसी महिला टी20 विश्व कप ग्लोबल क्वालीफायर में निराशाजनक प्रदर्शन के बाद खुद को फिर से मजबूत करने की कोशिश कर रही जिम्बाब्वे के लिए सीरीज बेहद अहम है।

दक्षिण अफ्रीका महिला क्रिकेट टीम मौजूदा समय की मजबूत टीमों में से एक है। इस टीम के खिलाफ खेलमे का फायदा निश्चित रूप से जिम्बाब्वे महिला क्रिकेट टीम को होगा। सीरीज के सभी पांच मैच बुलावायो में खेले जाएंगे। पांचों मैच 11, 13, 15, 17 और 19 सितंबर को खेले जाएंगे।

स्वात्वधिकारी राइवल्स मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक सुजीत कुमार द्वारा साई प्रीटिंग प्रेस, डी-85, सेक्टर 6 नोएडा,गौतम बुध्द नगर पिन कोड -201301 उ.प्र. से मुद्रित और मकान संख्या एन-58 जगतराम पार्क के सामने, लक्ष्मी नगर पूर्व दिल्ली-110053 से प्रकाशित
समाचार संपादक : चन्द्रमणी साव (पीआरबी एक्ट के अनुसार समाचार पत्र चयन एवं संपादन के लिए उत्तरदायी। नोट किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्यायक्षेत्र दिल्ली होगा) मोबाइल 9340573892 ई-मेलः vishwakesari2026@gmail.com,आर.एन.आई.नं. DLHIN/2015/61415